डाक्टर मोरो का टापू



प्रकाशक:- साहित्य रत्नाकर, ग्वालियर

डाक्टर मोरो का टापू

लेखक

श्री एच० जी० वेल्स

अनुवादक

रूपनारायण पाण्डेय

प्रकाशक
मंत्री
साहित्य रत्नाकर
ग्वालियर

प्रथम संस्करण २०००
मूल्य ३॥)

मुद्रक
मॉडर्न प्रिन्टिंग प्रेस
लश्कर

पूर्वाभास

कैलेओ बंदर से रवाना होने के दस दिन बाद, १° दक्षिण अक्षांश और १०३° पश्चिम द्राधिमा में, एक बह रहे बेकार जहाज से टक्कर खाकर, सन् १८८७ की १ फरवरी को, लेडी वेइन नाम का जहाज अनन्त सागर के अतुल जल में डूब गया था।

इसके ठीक ११ महीने और ४ दिन के बाद, अर्थात् सन् १८८८ की ५ जनवरी को मेरे चाचा एडवर्ड प्रेनडिक को ५°३ अक्षांश दक्षिण में और १०१° पश्चिम द्राघिमा में एक छोटी-सी डोंगी में बहते देखकर एक जहाज पर, जो उधर से जा रहा था, चढ़ा लिया गया। इस डोंगी पर उसका नाम जरूर लिखा हुआ था, पर वह पढ़ा नहीं जा सकता था; क्योंकि अक्षर बहुत कुछ अस्पष्ट हो गये थे। लेकिन अनुमान से जाना गया कि वह समुद्र में खोये हुए इपीकेकुआना की जीवन रक्षक डोंगी थी। कैलेओ बंदर से मेरे चाचा ने लेडी वेइन जहाज में समुद्री यात्रा शुरू की थी। इतने दिन तक उनकी कोई खबर न पाकर सबने समझ लिया था कि जहाज डूब जाने के फलस्वरूप उनकी जल समाधि हो गई है। जहाज ने जब उन्हें डोंगी से ऊपर निकाला, तब उन्होंने अपने इतने दिनों गायब रहने का जो ब्यौरा सुनाया, उसे सुनकर सबने एक तरह से यह निश्चय कर लिया कि उनका दिमाग़ ठिकाने नहीं है, वह पागल होगये हैं। बाद को उन्होंने कहा भी था कि लेडी वेइन के डूबने की दुर्घटना के बाद से ही उनकी स्मरण-शक्ति बिल्कुल जाती रही थी। इन्हीं सब कारणों से उस समय के मनस्तत्त्व-विशारदों ने, मनुष्य की स्मरण-शक्ति के ऊपर शरीर और मन की यंत्रणा का क्या-क्या असर हो सकता है, इस विषय पर बहुत खोज और आलोचना-प्रत्यालोचना की थी। चाचाजी के कागज-पत्र के साथ उनके उस समय के वृत्तान्त की जो पाण्डुलिपि मैंने पाई थी, उसे सबकी जनकारी के लिए इस समय में प्रकाशित कर रहा हूं।

महासागर के जिस प्रदेश से चाचाजी बचाये गये थे, वहां नॉबल्स नाम के एक जन-मानवहीन छोटे से टापू के अलावा और किसी भूमिखंड का अस्तित्व अज्ञात है। यह टापू ज्वालामुखी के लावों से जमा होने से बन गया था। स्कार्पियन नाम के जहाज ने सन् १८९१ में आकर इस टापू में लंगर डाला था। खल्लासियों का एक दल यहां किनारे पर उतरा था। उसे बहुत खोज करने पर भी एक तरह की सफेद तितली, खरगोश, कुछ असुर और कुछ अद्भुत आकार-प्रकार के चूहों के सिवा और कोई जीवित प्राणी उस टापू के भीतर नहीं देख पड़ा। यद्यपि मेरे चाचा के वृत्तान्त की मूल बातें कहीं प्रमाणित नहीं हुईं तथापि जनसाधारण के सामने उन्हें उपस्थित करने में कोई बाधा मुझे नहीं जान पड़ती। कम से कम कई बातों में हम निःसन्देह हो सकते हैं। एक तो महासागर के जिस हिस्से में चाचाजी लापता हुए थे, उसी प्रदेश से ग्यारह महीने बाद उन्हें बचाया गया। इतने समय तक निश्चय ही किसी-न-किसी उपाय से वह जीते रहे। दूसरे जाना गया है कि इपोकेकुआना जहाज में एक 'पूमा' और अन्य कई जानवर लेकर जहाज के कप्तान जान डेविस ने सन् १८८७ के जनवरी महीने में अफरीका छोड़ा था। दक्षिण प्रशान्त महासागर के बंदरगाहों में यह जहाज और इसका शराबी कप्तान खूब ही परिचित था। सन् १८८७ के दिसंबर में 'बानिया' बंदर से रवाना होने के बाद उसी प्रदेश में यह जहाज लापता होगया था।

चाचा की कहानी के साथ यह तारीख पूरी तौर से मिल जाती है।

चार्ल्स एडवर्ड प्रेन्डिक

१

जहाज डूबा

लेडी येहन जहाज डूबने के कारण के संबन्ध में पहले जो खबर अखबारों में छपी है, उसमें कोई नई बात जोड़ने को नहीं है। सभी जानते हैं, कैलेओ से रवाना होने के उपरान्त दस दिन बाद एक बहते हुए बेकार जहाज़ से उसकी टक्कर हो गई और वह डूब गया। इस घटना के १८ दिन बाद जंगी जहाज 'मार्शल' ने एक बड़ी जीवन-रक्षक डोंगी से ७ नाविकों का उद्धार किया।

जो रोएँ खड़े कर देनेवाली, रहस्यमय कहानी अब मैं सुनाऊँगा, वह आज तक प्रकाशित नहीं हुई। लेकिन उसके पहले मैं एक प्रचलित भ्रान्त विश्वास दूर कर देना चाहता हूँ। अब तक सभी की धारणा थी कि छोटी डोंगी में जिन चार आदमियों ने आश्रय लिया था, उनमें से कोई नहीं बच पाया। लेकिन यह विश्वास कतई सच नहीं है, और इसका मैं ही जीता-जागता प्रमाण हूँ। और, उस डोंगी में चार आदमी कभी नहीं थे—केवल तीन आदमी थे। हमारा चौथा साथी कान्स्टेन्स,

जिसे कप्तान ने डोंगी को लक्ष्य करके जहाज से फाँदते देखा था (देखो, डेलीन्यूज़ —१७ मार्च, १८८७), वह अपने दुर्भाग्य और हम तीनों आदमियों के सौभाग्य से डोंगी तक पहुँच ही नहीं पाया। उसका पैर लटकती हुई रस्सी में फँस गया। सिर नीचे और पैर ऊपर, इस तरह वह जहाज के किनारे झूलने लगा। हम लोग उसकी सहायता के लिए जब तक कोशिश करें, उसके पहले ही वह सागर के जल में गिरकर समा गया; फिर नहीं उभरा।

पहले कह चुका हूँ, हमारे सौभाग्य से कान्स्टैन्स डोंगी तक नहीं पहुँच सका। लेकिन इसे उसका भी सौभाग्य कहा जा सकता है। कारण, हमारे खाने-पीने की सामग्री के नाम से केवल कुछ आधे भीगे बिस्कुट और थोड़ा-सा पीने लायक़ पानी ही उसमें था। विपत्ति इतनी अचानक आई कि हम लोगों को उसके लिए तैयार होने का बिलकुल ही समय नहीं मिला। बड़ी डोंगी के यात्रियों के साथ शायद काफ़ी खाने की सामग्री और पीने का पानी हो, इस आशा से हम लोगों ने बार-बार चिल्ला-चिल्लाकर उन्हें पुकारा, लेकिन हमारी पुकार उनके कानों तक नहीं पहुँची। टिप-टिप करके पानी की बूँदें भी गिर रही थीं। दूसरे दिन जब बदली छँट गई, उस समय दोपहर ढल चुकी थी। अब वह बड़ी डोंगी और उसके आदमी हमें नहीं देख पड़े। हमारी डोंगी ऐसे हिलकोरे खा रही थी कि खड़े होकर उस बड़ी डोंगी का पता लगाने की चेष्टा करना भी संभव नहीं था। लहरों से परिपूर्ण प्रशान्त महासागर में हमारी छोटी डोंगी पत्ते के दोने की तरह बही चली जा रही थी। उसमें हम तीन बिलकुल ही असहाय मनुष्य थे—हेल्मर, मैं और एक जहाज का खलासी।

हम विशाल समुद्र के अपार अनन्त जल में बहते हुए जा रहे थे। हमारी भोजन की सामग्री, जो हमने जल्दी में साथ ले ली थी,

पहले ही समाप्त हो गई थी। अब पीने का पानी भी चुक चला। असह्य प्यास से छाती फटी जा रही थी। दूसरे दिन के बाद समुद्र ने शान्त रूप धारण किया। इसी दशा में आठ दिन बीत गये। ये आठ दिन हमने किस तरह काटे, इसकी वह आदमी कभी कल्पना भी नहीं कर सकता, जो इस अवस्था में न पड़ा हो। पहले दिन के बाद से ही हम लोगों ने बात-चीत करना लगभग बन्द ही कर दिया था। हम में से हर एक अपनी जगह पड़ा-पड़ा क्षितिज की रेखा (जहाँ तक नज़र जाती थी) की ओर ताक रहा था। ताकते-ताकते धीरे-धीरे हम लोगों की आंखें ज्योतिहीन हो चलीं। हम लोग उसी निष्प्रभ उदास दृष्टि से परस्पर, एक दूसरे की क्रमशः बढ़ रही बुरी हालत को देखने लगे। चौथे दिन हमारे पीने के पानी की आख़िरी बूँद भी समाप्त हो गई। प्रचंड सूर्य, बीच आकाश से हम पर अपनी आग की चिनगारी-सी किरणें बरसा रहा था। हमारे मन का अद्भुत उत्कट भाव शायद हमारी दृष्टि से ही प्रकट हो रहा था। और भी दो दिन बीत गये। सब के मन में जो ख़याल चक्कर लगा रहा था, उसे छठे दिन हेल्मर ने ही भाषा-द्वारा प्रकट किया। प्यास के मारे हम लोगों का गला सूखकर काठ हो गया था। पास-पास मुँह ले जाकर किसी तरह फिसफिस करके हम बातचीत करने लगे।

हेल्मर ने प्रस्ताव किया कि हममें से एक आदमी मार डाला जाय और उसके रक्त से प्यास बुझाई जाय। हेल्मर के प्रस्ताव पर मैंने प्रबल आपत्ति की। मैंने कहा—इस से तो यह अच्छा है कि आओ हम इस डोंगी को डुबाकर तीनों जने किसी जलजन्तु के मुँह में चले जायँ। लेकिन हेल्मर इस के लिए राज़ी नहीं हुआ। उसने कहा—उसके प्रस्ताव के अनुसार काम करने से और चाहे जो हो, हमारी प्यास अवश्य बुझ जायगी। उस ख़लासी ने भी हेल्मर की बात का अनुमोदन किया।

रात भर हेल्मर उस ख़लासी के साथ फिसफिस करके सलाह करता रहा और मैं हाथ में छुरी ताने एक कोने में चुपचाप पड़ा रहा। मैंने पक्का इरादा कर लिया था कि ज़रूरत पड़ी तो दोनों से लड़ूँगा। लेकिन मुझे अब भी संदेह होता है कि लड़ने के लायक़ शक्ति या क्षमता उस समय मुझ में क्या शेष थी?

दूसरे दिन तड़के मैं हेल्मर के प्रस्ताव पर राज़ी हो गया। एक सिक्का उछाल कर हम लोगों ने अपने भाग्य की परीक्षा की। ख़लासी का नाम निकला। लेकिन हम लोगों में वही सब से ताक़तवर था। इसी से वह इस भाग्य-परीक्षा को मानने के लिए राज़ी नहीं हुआ। उसने हेल्मर पर हमला कर दिया। दोनों आदमी खींचतान और धक्का-मुक्की करते हुए सीधे उठकर खड़े हो गये। मैं घुटनों के बल खिसककर हेल्मर की सहायता के लिए आगे बढ़ना ही चाहता था कि इसके पहले ही डोंगी ज़ोर से हिलकर एक ओर झुक गई। हेल्मर और ख़लासी दोनों एक दूसरे से गुथे हुए लुढ़कते-लुढ़कते पानी में जा गिरे और डूब गये। यह देखकर मुझे ऐसी विकट हँसी आई कि मैं डोंगी पर लोट-पोट हो गया। कौन जाने, क्यों और कहाँ से यह हँसी आई!

डोंगी के ऊपर मैं अकेला पड़ा रहा। कितनी देर तक, कौन जाने! मन में आया कि अंजली भर-भरकर समुद्र का खारा पानी पीकर पागल हो जाऊँ, तो शायद चटपट मरकर इस मुसीबत और कष्ट से छुटकारा पा सकूँगा। लेकिन उस समय मुझ में ऐसा कर पाने की शक्ति भी नहीं बाक़ी थी। इसलिए उसी तरह पड़ा रहा। एकाएक क्षितिज की रेखा से प्रकट होकर किसी जलयान के पाल का सफेद कपड़ा मुझे देख पड़ा। वह जैसे धीरे-धीरे मेरी ओर बढ़ता आ रहा था। लेकिन इससे भी मेरे मन में कुछ विशेष उत्साह नहीं हुआ। निःस्पृह भाव से पड़ा-पड़ा उसकी ओर ताकता रहा, जैसे एक चित्र देख रहा होऊँ। आज भी वह दृश्य मुझे

स्पष्ट याद आ रहा है। लहरों के हिंडोले में मेरा सिर चक्कर खा रहा था और सामने की दिशा का छोर भी जैसे सफेद पाल तानकर उसके साथ ही ताल-ताल पर नाच रहा था। एक बार जान पड़ा, जैसे मैं मर गया हूँ। यह सोचकर दुःख हुआ कि जहाज तो आया, लेकिन अगर ज़रा देर पहले आ जाता तो शायद मुझे जीवित अवस्था में पाता! भाग्य का यह निर्मम परिहास नहीं तो और क्या है? जान पड़ा, कितने ही युग-युगान्तर से यह जहाज अपना सफेद पाल उड़ाकर समुद्र की छाती पर नाचता हुआ घूम रहा है। एक बार भी यह ख्याल नहीं आया कि जहाज के लोगों की दृष्टि अपनी ओर खींचने के लिए किसी तरह की कोई कोशिश करनी चाहिए।

इसके बाद की कोई घटना मुझे स्पष्ट याद नहीं है। जब होश आया तो देखा, जहाज के पिछले हिस्से के एक छोटे केबिन में मैं लेटा हुआ हूँ। स्मृति और विस्मृति के बीच, प्रकाश और अन्धकार के अस्पष्ट जगत् में मैं था। केवल यही याद आता है कि मुझ को जब उठा कर जहाज पर लाया जा रहा था, तब मेरे एक ओर एक लाल रंग का चेहरा ऊपर के कटहरे से झुका हुआ ताक रहा था। उस चेहरे के चारों ओर झबरे-झबरे भूरे बाल थे, जिनसे वह एक बड़ा-सा ममाखियों का छत्ता जान पड़ता था। अत्यन्त क्षीण और असम्बद्ध भाव से, और भी जैसे याद आता है कि मेरे चेहरे के बहुत ही निकट दो जलते हुए अंगारे-सी आँखें चमक रही थीं। उस समय इसे एक दुःस्वप्न की विभीषिका ही मैंने मान लिया था; किन्तु बाद को दूसरी बार वह चेहरा और वे आँखें देखकर मेरी वह धारणा दूर हो गई थी।

इसके बाद क्या हुआ, मुझे नहीं मालूम।

२

निरुद्देश्य यात्रा का पथिक

एक गंदी छोटी-सी कोठरी में मेरी बेहोशी दूर हुई। आँख खोलते ही देखा, एक भले आदमी मेरी नाड़ी पकड़े बैठे हैं। उनके बाल सुनहले रंग के हैं। मूछ के बाल सफेद और होठ मोटे हैं। लगभग एक मिनट तक हम दोनों एक दूसरे की ओर ताकते रहे। कैसी अद्भुत उन की मटमैली आँखें थीं! उनमें लेशमात्र कोई भाव नहीं था, जैसे पत्थर की बनी हों।

ठीक इसी समय ऊपर से लोहे की जंजीर की झनझनाहट सुन पड़ी। साथ ही साथ किसी क्रुद्ध पशु का गुर्राना सुनाई दिया।

मेरी नाड़ी की परीक्षा करनेवाले महाशय ने पूछा—अब कैसी तबियत है?

शायद मैंने इसके उत्तर में कहा था कि "अच्छी ही है।" किसी तरह स्मरण न कर सका कि किस तरह मैं यहाँ आ गया। मेरा क्षीण स्वर उनके कानों तक नहीं पहुँच पाया; किन्तु जान पड़ता है, मेरा

प्रश्न मेरे मुख के भाव से ही वह समझ गये थे। उन्होंने कहा—लगातार भूखे-प्यासे रहने से निश्चेष्ट होकर आप एक छोटी डोंगी में पड़े थे। हम लोगों ने आपको देख पाया और अपने जहाज़ पर ले आये। उस डोंगी में लिखा था—'लेडी वेइन'। उसके भीतर खून के दाग थे।

मेरी दृष्टि अपने हाथ पर पड़ी। ओह, मेरे हाथ कितने सूख गये थे। ठीक जैसे कुछ हड्डियाँ एक मैली चमड़े की थैली में भर दी गई हों। तब सारी घटना धीरे-धीरे याद आ गई।

इसके बाद उन्होंने मुझे कोई लाल रंग की दवा पीने के लिए दी। उसका स्वाद बहुत कुछ रक्त का सा था। उसे पीते ही मुझे अपने शरीर में थोड़ी-सी ताक़त आई जान पड़ी।

उन्होंने कहा—आपका भाग्य अच्छा है। हमारे जहाज़ में एक डॉक्टर भी हैं।

मैंने धीरे-धीरे प्रश्न किया—यह कौन-सा जहाज़ है?

बहुत देर बाद मेरे मुँह से बोल निकला था, आवाज़ कुछ कर्कश सुनाई दी।

उन सज्जन ने कहा—यह एक छोटा-सा सौदागरी जहाज़ है। इस समय अफ्रीका और कैलेओ से आ रहा है। मैं भी एक यात्री हूँ। अफ्रीका से आ रहा हूँ। यह तो साहब, मैं भी बता नहीं सकता कि ठीक कहाँ से यह जहाज़ आ रहा है। जहाज़ के मालिक खुद कप्तान डेविस साहब हैं। जान पड़ता है, बदनसीब कप्तान ने अपना सार्टी-फ़िकेट खो दिया है। जहाज़ का नाम भी बड़ा सुन्दर रक्खा गया है—'इपीकेकुआना'। भगवान् ही जानें, इसका अर्थ क्या है?

ऊपर के तल्ले से एक शब्द फिर सुन पड़ा—पशु के गर्जन के साथ-साथ किसी मनुष्य के चीखने की आवाज़। इसके बाद और एक

मनुष्य का स्वर सुन पड़ा। चिल्लाकर वह कह रहा था—"ठहर अभागे, चुप—चुप !"

वह सज्जन कह उठे—आप तो लगभग मौत के मुँह में ही पहुँच चुके थे। लेकिन अब कोई भय नहीं है। मैंने आपको दवा दे दी है। आपके दोनों हाथों में दर्द हो रहा है। है न ? आपको इंजेक्शन दिये गये हैं। आप लगभग तीस घंटे से बेहोश पड़े थे।

धीरे-धीरे मैं अपने बारे में सोचने लगा। एकाएक कुछ कुत्तों ने एक साथ भूँक कर मेरे सोचने-विचारने के तार को तोड़ दिया। मैंने उन सज्जन से पूछा—मैं क्या कोई कड़ी चीज़ खा सकता हूँ ?

उन्होंने कहा—हाँ, खा सकते हैं। आपके लिए मांस पकाया जा रहा है।

मैंने खुश होकर कहा—तो मैं मांस भी खा सकता हूँ। हज़म हो जायगा ?

उन्होंने कहा—खाने में कोई हर्ज नहीं है। आप तो अब चंगे हो गये हैं। लेकिन............

क्षण भर इधर-उधर करके वह बोले—उस छोटी डोंगी पर आप कैसे, कहाँ से आये, यह सुनने के लिए मैं अधीर हो रहा हूँ।

यह कहकर उन्होंने मेरी ओर ताका। उनकी दृष्टि में मुझे सन्देह की झलक मिली।

"कैसी आफ़त है ! फिर वही चीख-पुकार !" कहते हुए वह उस कोठरी के बाहर चले गये। दम भर बाद जान पड़ा, किसी के साथ बड़े ज़ोर से उनकी झड़प हो रही है। इसके बाद भूँकनेवाले उन कुत्तों से चिल्लाकर उन्होंने कुछ कहा, उन्हें डाँटा और फिर मेरे पास लौट आये।

आते ही बोले—हाँ, आप क्या कह रहे थे ? किस तरह इस

डोंगी पर आये ?

तब मैंने उन्हें अपना नाम-धाम बताया, अपना परिचय दिया। अपने निश्चिन्त स्वाधीन जीवन के एक ही ढंग से ऊबकर, जीवन में कुछ विचित्रता लाने के लिए 'प्राणि-तत्त्व' की चर्चा और आलोचना शुरू करने की कथा भी विस्तार के साथ उन्हें सुनाई। जान पड़ा, इस बारे में उनका कौतूहल जाग उठा है। वह बोले—मैंने भी कुछ विज्ञान का अध्ययन किया था। यूनिवर्सिटी में जब पढ़ता था, तब 'जीव-तत्त्व' पर कुछ खोज भी की थी। जैसे कृमि के डिम्बाशय पर, सीपी के Radula निकालने पर। ओह, ये आज से दस वर्ष पहले की बातें हैं ! लेकिन नहीं, पहले आप अपनी कहानी समाप्त कीजिए।

मैं अभी कमज़ोर था, इसलिए बहुत संक्षेप में अपना वृत्तान्त उन्हें सुनाया। जान पड़ा, मेरे वृत्तान्त की सरलता से उन्हें सन्तोष हुआ। उन्होंने फिर प्राणि-तत्त्व और जीव-तत्त्व की आलोचना आरम्भ की। उनकी बात-चीत के ढंग से जान पड़ा, वह चिकित्सा-शास्त्र के बहुत साधारण दर्जे के छात्र थे। इन सब आलोचनाओं के बीच एका-एक असंलग्न भाव से उन्होंने लन्दन के म्यूज़िक हाल की चर्चा चलाई और वहाँ की दो-एक घटनाओं का भी उल्लेख किया। बातों ही बातों में उनका यह इतिहास भी मैंने सुना कि घटना-चक्र में पड़कर कैसे केवल इक्कीस वर्ष की ही अवस्था में अबूझ की तरह उन्हें सब छोड़ आने के लिए बाध्य होना पड़ा। ऊपर का वह किसी पशु का विकट क्रुद्ध गर्जन फिर एकाएक सुन पड़ा। मैं चौंक उठा।

मैंने पूछा—किस की चीख है ?

लेकिन मेरा यह प्रश्न कानों तक पहुँचने के पहले ही वह फिर कोठरी से तीर की तरह तेज़ी के साथ निकल गये। कुछ देर बाद पका हुआ मांस लेकर आये। मांस की महक से मेरी भूख इतनी तेज़

हो गई कि मैं उस असह्य पाशविक चीत्कार की बात फिर पूछना भूल गया।

और दो दिन बीते। मैं बहुत कुछ स्वस्थ हो गया। ज़रा देर उठकर टहलने भी लगा हूँ। उस दिन डेक के किनारे मैं खड़ा था, इसी समय वह सुनहले बालोंवाले सज्जन आकर उपस्थित हुए। मैं कहने को भूल गया, उनका नाम मांटगोमरी है। मैंने उनसे कहा कि मेरे पास बदलने के लिए कपड़े नहीं हैं। उन्होंने कहा—आपके जो कपड़े थे, सब बहुत मैले और गंदे हो गये थे, पहनने लायक नहीं रह गये थे, इसी से मैंने समुद्र में फिकवा दिये। मांटगोमरी साहब अपने पहनने के कुछ कपड़े ले आये और मुझे दिये। कुछ ढीले होने पर भी मैंने पहन लिये।

बातों ही बातों में मांटगोमरी ने मुझे बताया कि कप्तान शराब के नशे में चूर होकर अपने केबिन में पड़ा है।

मैंने पूछा—यह जहाज़ कहाँ जायगा?

वह बोले—हवाई टापू जायगा। लेकिन राह में मुझे उतारता जायगा।

मैंने पूछा—कहाँ?

उन्होंने कहा—एक टापू में, जहाँ मैं रहता हूँ। जहाँ तक मैं जानता हूँ, उस टापू का कोई नाम नहीं है।

प्रश्न की नज़र उनके मुँह पर डालते ही वह कुछ बोले नहीं, केवल मेरी ओर ताकते रहे। उनका नीचे का होंठ लटक गया। मुझे जान पड़ा कि उन्होंने जान-बूझकर इस तरह मेरी ओर ताका, जिसमें इस बारे में मैं और कुछ न पूछूँ। कुछ सोचकर मैंने चुप रहना ही ठीक समझा।

३

अद्‌भुत चेहरा

कोठरी से बाहर निकलते ही देखा, एक आदमी हम लोगों की ओर पीठ किये सीढ़ियों पर खड़ा कुछ देख रहा है। उसके अंग विकल थे। कद नाटा, शरीर हाथ-पैरों की अपेक्षा मोटा ; गर्दन अजीब तरह की। पीठ कुबड़ी , गर्दन पर बड़े-बड़े बाल , सिर के बाल एक दम काले और मोटे। विचित्र रूप का आदमी था। नीले रंग की सर्ज का सूट पहने था। एकाएक वे कुत्ते ऊपर ज़ोर-ज़ोर से भूँकने लगे। इसके साथ ही पशु की तरह तेज़ी से वह आदमी घूमकर खड़ा हो गया।

उसका वह काला-काला विकृत मुख देखकर मैं तो एक-दम चौंक उठा। ऐसा विकलांग मनुष्य और ऐसा अद्‌भुत, कुरूप चेहरा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। मुँह में सुई-सा नुकीला थूथन, बहुत कुछ पशु के मुख से मिलता हुआ और उसमें बहुत ही बड़े-बड़े दाँत ! मैंने कभी सोचा भी न था कि इतने बड़े-बड़े दाँत मनुष्य के हो सकते हैं। आँखों की पुतलियों के आस-पास थोड़ी-सी सफेदी थी, और बाकी सब एकदम लाल था। उस

के सम्पूर्ण मुख-मण्डल पर उत्तेजना झलक रही थी।

मांटगोमरी ने उससे कहा—कैसी आफ़त है! तुम्हें क्या हुआ, है, बताओ तो? रास्ता रोके क्यों खड़े हो?

वह आदमी रास्ते से हट गया। हम लोग आगे बढ़े। इच्छा बिलकुल न होने पर भी उस विचित्र मनुष्य की ओर देखे बिना नहीं रहा गया। मांटगोमरी ने उसी आदमी को लक्ष्य करके कहा—यहाँ क्यों खड़े हो जी! यहाँ तुम्हारा क्या काम है? तुम्हें तो ऊपर रहना चाहिए!

उस मनुष्य ने मोटी-सी आवाज़ में कहा—वे—वे नहीं चाहते कि मैं उनके पास रहूँ।

मांटगोमरी ने कहा—वे नहीं चाहते! वे होते कौन हैं? मैं कहता हूँ, तुम अभी ऊपर जाओ।

मांटगोमरी का स्वर रोबीला था। वह और भी कुछ कहनेवाले थे; लेकिन एकाएक मेरी ओर देखकर चुप रह गये। इसके बाद मेरे पीछे-पीछे सीढ़ी पर चढ़ने लगे। मैं उस समय भी बीच राह में खड़ा असीम विस्मय से उस नराकार पशु का काला मुख और वीभत्स चेहरा देख रहा था। ऐसा विकट कुत्सित चेहरा पहले मैंने कभी नहीं देखा था! लेकिन, विश्वास करना कठिन होगा—उसी समय, न जाने क्यों, ख़याल आया कि इस आकृति, इस अंगभंगि से पहले भी कहीं जैसे परिचित हो चुका हूँ। बाद को याद आया, शायद जहाज पर चढ़ाये जाने के समय इसे देखा होगा; लेकिन फिर भी उसके साथ अपने पूर्व-परिचय का संदेह नहीं दूर हुआ। अथच सोच नहीं पाता कि ऐसे अद्भुत चेहरे के साथ एक बार परिचित होकर भी किस तरह उसे भूले रहना संभव हुआ।

मांटगोमरी को पीछे-पीछे आते देखकर मैंने मुँह फेर लिया और ऊपर के डेक की ओर देखने लगा। पशुओं का गुर्राना और गर्जना सुन-

कर पहले ही से मेरे मन में एक धारणा बन गई थी कि ऊपर जाकर क्या देखूँगा। उसके लिए मैं मन ही मन प्रस्तुत भी हो चुका था।

ओह, सारा डेक कैसा गंदा था! चारों ओर गाजर के टुकड़े, कोई एक न जाने कौन सब्जी, और मैला फैला था! कुछ बड़े रोएँवाले स्टैग हाउन्ड (कुत्ते) एक जगह जंजीरों से बँधे थे। मुझे देखते ही उन्होंने भूँकना और उछलना-कूदना शुरू कर दिया। एक बड़े आकार का 'पूमा' छोटे लोहे के पिंजड़े में सिमटा हुआ पड़ा था। कई बड़े पिंज़ड़ों में बहुत-से खरगोश थे और एक पिंज़ड़े-जैसे बक्स में एक लामा सिमटा बैठा था। डेक के ऊपर सिर्फ एक मनुष्य था, गोल-मठोल शकल का ख़लासी। वह इंजन के चक्के के पास चुपचाप बैठा था।

गंदे और फटे हुए 'पाल' हवा में फरफरा रहे थे। आकाश साफ़ था। सूर्य पश्चिम आकाश में ढल रहे थे। बड़ी-बड़ी लहरें हमारे जहाज के पीछे दौड़ी आ रही थीं, हवा उनको ऊपर कुहरे की चादर से ढकने लगी। माँझी की कोठरी के पास से गुज़र कर रेलिंग के पास जाकर जहाज के पीछे की ओर मैंने देखा। फेन उगलती हुई जलराशि फूल-फूल उठती है, और उसके बुलबुले नाचते-नाचते नज़र से ओझल होते जा रहे हैं। घूमकर देखा, अब जहाज का अद्भुत आकार मुझे देख पड़ा।

मैंने मांटगोमरी से पूछा—यह क्या एक समुद्री पशुशाला है?

मांटगोमरी ने कहा—वैसी ही तो देख पड़ती है।

मैंने पूछा—ये पशु काहे के लिए हैं? कप्तान क्या इन्हें दक्षिण सागर में कहीं बेचने के लिए लिये जा रहा है?

"देखने से तो यही जान पड़ता है; क्यों न?" कहकर मांट-गोमरी ने मुँह फेर लिया।

इसी समय एकाएक भयानक शोर-गुल और गाली-गलौज सुनाई

पड़ी और विकल अंगवाले कलूटे प्राणी का पीछा करता हुआ और एक आदमी आता देख पड़ा। उसके सिर के बाल लाल रंग के थे और सिर पर सफेद टोपी थी। कुत्ते उछल-कूद करके भूँकते-भूँकते ज़रा थमे थे ; उस कलूटे आदमी को देखकर वे फिर ज़ोर-शोर से उछलने और भूँकने लगे। वह अद्भुत प्राणी उनके सामने सिटपिटाकर इधर-उधर झाँकने लगा। इसी मौके में उस सफेद टोपीवाले आदमी ने आकर उस के ज़ोर से एक धक्का मारा। उस धक्के को न सँभाल पाने के कारण वह कलूटा आदमी धड़ाम से गिर पड़ा। इसके बाद लुढ़कते-लुढ़कते वह उन बिगड़े हुए कुत्तों के सामने जा पड़ा। उस बेचारे का सौभाग्य ही कहना चाहिए कि कुत्तों के मुँह बँधे हुए थे। लाल बालोंवाला वह आदमी खुशी से चिल्ला उठा।

उसे देखते ही मांटगोमरी आपे से बाहर हो गये। बोले—बस, चुपचाप वहीं खड़े रहो। दो खलासी भी इसी बीच में वहाँ आ गये।

वह कलूटा आदमी निरन्तर चीत्कार करता हुआ कुत्तों के पैरों के पास लुढ़कता-लुढ़कता पहुँच गया। कोई भी उसकी मदद करने के लिए नहीं आया। कुत्ते उसे भरसक हैरान करने लगे—बँधे हुए मुखों से उसके खोंचे मारने लगे। यहाँ तक कि बेचारे के शरीर पर चढ़कर उन्होंने नाचना भी शुरू कर दिया। खलासियों को बड़ा मज़ा आया और वे आनन्द से चीत्कार करने लगे। क्रुद्ध मांटगोमरी कुछ अस्पष्ट कहकर डेक की ओर आगे बढ़ गये। मैं भी उनके पीछे-पीछे चला।

इसके बाद ही वह कलूटा आदमी उठकर खड़ा हो गया। इसके बाद पीछे घूमकर आग बरसानेवाली नज़र से उसने कुत्तों की ओर देखा। उस समय भी वह हाँफ रहा था। लाल बालोंवाला आदमी एक सन्तोष और तृप्ति की हँसी हँसा। उसकी कोहनी को हाथ से पकड़कर

मांटगोमरी ने कहा—देखो कप्तान, यह सब नहीं चलेगा ।

मैं मांटगोमरी के पीछे था । कप्तान ने घूमकर मांटगोमरी की ओर देखा । उसकी दृष्टि मतवालों की सी थी । बोला—क्या नहीं चलेगा, ज़रा सुनूँ ?

यह कहकर उसने शराबियों की-सी अधमुँदी नज़र से मांटगोमरी की ओर देखकर, एक झटके से अपना हाथ छुड़ा लिया । इसके बाद दो-तीन बार चेष्टा करके बड़ी मुश्किल से मुट्ठी बँधे हुए अपने दोनों हाथ कप्तान ने पाकेट के भीतर कर लिये ।

मांटगोमरी ने कहा—देखो, वह एक मुसाफ़िर है । भलाई चाहते हो, तो ख़बरदार उसके बदन में फिर कभी हाथ न लगाना ।

"जाओ, जाओ !" चिल्ला उठा कप्तान । चट से घूम कर लड़खड़ाते पैरों से खड़े हुए कप्तान ने कहा—यह जहाज मेरा है । मेरी जो खुशी होगी, वही करूँगा । समझे !

मेरी समझ में और अधिक बहस न करके मांटगोमरी का चले आना ही ठीक होता । एक शराबी मतवाले के साथ तकरार करना व्यर्थ है । मारपीट के सिवा इसका और क्या फल हो सकता है ? लेकिन मांटगोमरी नहीं माने, वह कप्तान के पीछे हो लिये । बोले—सुनो कप्तान, मेरे इस आदमी के साथ तुम बुरा बर्ताव नहीं कर सकते । जहाज पर जब से चढ़ा है, तब से वह बेचारा जान बचाता फिरता है । तुम्हारा इसने क्या बिगाड़ा है ?

शराब के नशे ने कप्तान को क्षण भर के लिए चुप कर दिया । इसके बाद उसने मांटगोमरी को एक भद्दी-सी गाली दी ।

एक तरह के लोग ऐसे होते हैं, जिनका क्रमशः बढ़नेवाला क्रोध बढ़ते-बढ़ते अन्त को हद से गुजर जाता है । इसके बाद वे किसी तरह शान्त नहीं हो पाते । मांटगोमरी इसी तरह के आदमी थे । मैं समझ गया

यह झगड़ा एक अर्से से चला आ रहा है।

मैंने मांटगोमरी से कहा—यह आदमी शराबी है। इससे झगड़ा करने से लाभ क्या है? सोचिये तो।

नीचे के होंट को झटके से नीचे मोड़ कर मांटगोमरी ने कहा—वह तो हर घड़ी शराब पिये मतवाला रहता है। इसके माने क्या यह हैं कि वह यात्रियों के साथ बुरा व्यवहार करेगा।

उन पिंजड़ों की ओर अपने ढीले हाथ से इशारा करके कप्तान ने कहा—मेरा जहाज कैसा साफ सुथरा था। अब ज़रा इधर देखो तो, कैसा गंदा होगया है।

मैंने देखा, सचमुच जहाज को किसी तरह साफ़-सुथरा नहीं कहा जा सकता था।

कप्तान ने उसी सिलसिले में, व्यंग्य के स्वरों में कहा—यात्री! अहा हा! कैसे सुन्दर साफ़-सुथरे यात्री हैं!

मांटगोमरी ने कहा—क्यों, तुम तो पशुशाला को लाने के लिए राज़ी थे। तुमको मालूम था कि......

कप्तान बीच ही में बोल उठा—कैसी बुरी साइत में मैं तुम्हारे उस नरक-जैसे टापू में पहुँचा था। तुम बता सकते हो क्या, उस तरह के एक टापू में, इतने जानवरों को लेकर कौन-सा बड़ा काम तुम लोग करते हो? और यह जीव, जिसके लिए झगड़ा कर रहे हो, मान लिया, मनुष्य है; लेकिन वह तो पूरा पागल है। वह जहाज के पिछले हिस्से में क्या करने गया था? जहाज में चढ़ने दिया है, तो क्या इसका मतलब यह समझते हो कि सारा जहाज तुम ने ख़रीद लिया है?

मांटगोमरी ने कहा—यह जहाज में जब से आया है, तभी से तुम्हारे खलासी बेचारे के पीछे पड़े हैं।

कप्तान ने रेंढ़ कर कहा—बे-चा-रा! साला बदसूरत शैतान! मेरे

आदमी उसे देख नहीं सकते—मैं उसे देख नहीं सकता—बर्दाश्त नहीं कर सकता। यहाँ तक कि तुम्हें भी वह नहीं सुहाता।

मांटगोमरी घूमकर खड़े होगये। बोले—वह चाहे जो हो, मैं कहे देता हूँ, अब तुम उसे नहीं सताना।

लेकिन कप्तान तो झगड़ा करना ही चाहता था। चिल्लाकर बोला—वह अगर मेरे जहाज के उस तरफ़ जायगा, तो मैं उसे काट डालूँगा—उसकी आँतें-वाँतें ढेर कर दूँगा। मैं क्या करूँ, क्या न करूँ, यह बताने-वाले तुम कौन हो जी? याद रक्खो, मैं इस जहाज का कप्तान और मालिक हूँ, तुम से कहे देता हूँ, यहाँ मैं ही कानून हूँ, मैं ही सब कुछ हूँ। मुझ से तय हुआ था कि एक आदमी और उसके साथियों को लेकर अफ्रीका में जाऊँगा, और लौटते समय कुछ जानवरों को साथ ले आऊँगा। लेकिन यह मैंने कभी वादा नहीं किया था कि पागल शैतान को अपने जहाज पर चढ़ाऊँगा। यह साला......

इसके बाद कप्तान ने जो शब्द कहे, उन्हें सुनने की ज़रूरत नहीं। मांटगोमरी क्रोध के अतिरेक से एक पग कप्तान की ओर बढ़े। मैंने उन्हें रोककर कहा—देखिए, वह तो एक शराबी ठहरा......

सुन कर कप्तान पहले से भी अधिक गंदी गालियाँ बकने लगा। मांटगोमरी के चेहरे पर एक दम सफ़ेदी छा गई। उनके चेहरे पर उठने-वाले तूफ़ान का पूर्वाभास पाकर मैं फौरन् कप्तान की ओर घूम कर, चिल्लाकर कह उठा—ऐ चुप रहो!

इसके साथ ही कप्तान अपनी सारी खीझ निकालने और गालि-यों की वर्षा करने लगा। चाहे जो हो, इस उठनेवाले तूफ़ान को रोक सका, यह सोचकर मुझे सन्तोष हुआ, यद्यपि मेरे बीच में पड़ने से कप्तान के क्रोध की आग और भी भड़क उठी। आधे पागल आदमी मैंने बहुत देखे हैं; लेकिन मैं यह कभी नहीं सोच सका कि कोई आदमी

इस तरह लगातार ऐसी गंदी गालियों की वर्षा कर सकता है। मुझ जैसे ठंडे मिजाज़ के आदमी के लिए भी उसकी बहुत सी बातें बरदाश्त करना कठिन हो गया; लेकिन कप्तान को धमकाने के समय मैं अपनी दशा को भूल ही गया था। मुझे याद रखना चाहिए था कि मेरी अवस्था वैसी ही है, जैसी समुद्र में खो गई किसी चीज़ की होती है—समुद्र की लहरों में असहाय भाव से इधर-उधर बहना ही जिसके भाग्य में लिखा होता है। इस समय तो मुझे कप्तान की कृपा का ही एकमात्र सहारा है; क्योंकि और यात्रियों की तरह मैंने जहाज का किराया नहीं दिया है और यह बात कप्तान ने खूब कटु भाषा में मुझे बतला दी है। मैं भी कप्तान से झगड़ा करना ठीक न समझ कर चुप हो गया।

———

४

जहाज की रेलिंग में

उस दिन सूर्य अस्त होने के बाद किनारा दिखाई पड़ते ही जहाज ने लंगर डाल दिया। मांटगोमरी ने मुझे बताया कि यही वह जगह है, जहाँ उन्हें जाना है। उस समय भी किनारा बहुत दूर होने के कारण स्पष्ट कुछ नहीं दिखाई पड़ा। केवल यह जान पड़ा कि एक हल्का-सा नीला आवरण पड़ा हुआ है, जहाँ से हल्का-सा धुएँ का ढेर सीधा आकाश की ओर उठ रहा है।

कप्तान उस समय डेक पर नहीं था। मुझ पर दिल का गुबार निकाल कर नीचे के हिस्से में चला गया था। अब तक मेट ही जहाज को चला रहा था। खूब गठीला चेहरा था। हम उसे पहले ही जहाज के इंजिन के चक्के के पास देख चुके हैं। हम लोग चुपचाप खाना-पीना करने लगे। मैंने दो-एक बार बात-चीत चलाने की चेष्टा की; किन्तु विशेष सफल नहीं हुआ। समझ गया, मांटगोमरी या उनके साथियों को वह मेट विशेष पसंद नहीं करता।

मैंने एक बात और देखी। मांटगोमरी उन साथ के पशुओं के बारे में, ख़ास कर उनको जहाँ लिये जाते थे उस स्थान के सम्बन्ध में कोई बात बताना नहीं चाहते। विवश होकर मुझे भी अपने क्रमशः बढ़नेवाले कौतूहल को दबाना पड़ा।

बातें करते-करते सारे आसमान पर तारे छिटक गये। गहरी सुनसान रात थी; बीच-बीच में केवल एक पीली रोशनी कहीं जल पड़ती थी और पशुओं का उठने-बैठने का शब्द सुन पड़ता था। पिंजड़े के भीतर जमे हुए घने अंधकार की तरह 'पूमा' सिकुड़ा हुआ पड़ा था। उसकी जलते हुए अंगारे-जैसी दृष्टि हमारी ओर लगी थी। कुत्ते, जान पड़ता है, सोगये थे। मांटगोमरी ने सुलगाने के लिए चुरुट निकाली।

उन्होंने मुझसे लंदन के हाल-चाल पूछे। स्मृति-विस्मृति की वेदना से उनका स्वर गद्गद हो रहा था। लंदन में क्या-क्या परिवर्तन हुए हैं, यह वह विस्तार के साथ पूछने लगे। उनके प्रश्न और बातें सुन-कर मुझे जान पड़ा कि लंदन के जीवन की सुमधुर आब-हवा से उन्हें जैसे ज़ोर करके खींच लाया गया है। इधर-उधर की बहुत-सी बातें मैंने उनसे कहीं। उनका समय-समय पर अस्वाभाविक आचरण हर घड़ी मेरे मन में कौतूहल का भाव जगाता रहता था। अंधकारमय समुद्र की ओर मैंने देखा। वह छोटा-सा टापू उस घने अंधकार के अतल तल में डूब गया था। मुझे जान पड़ा, जैसे केवल मुझे बचाने के लिए ही अनन्त शून्य से इस भले आदमी को ईश्वर ने भेज दिया था। कल ही फिर यह सदा के लिए मुझसे अलग हो जायँगे।

ऐसी अवस्था में मनुष्य का कुछ उदास होना स्वाभाविक ही है। लेकिन मांटगोमरी का मन मुझे कुछ भी उदास नहीं देख पड़ा। जैसे यह जुदाई उन्हें तनिक भी नहीं अखर रही हो।

मेरे मन में भी कप्तान ही की तरह यह प्रश्न उठा कि इतने

जानवरों को लेकर ये भले आदमी क्या करते हैं ? पहले जब मैंने इन जानवरों का जिक्र छेड़ा था, तब इस भले आदमी ने यह क्यों कहा था कि ये जानवर उनके अपने नहीं हैं ? उनके उस अद्भुत आकृति के काले कलूटे साथी के बारे में भी मेरे मन में अनेक प्रश्न उठे थे। इन्हीं सब कारणों से मांटगोमरी मेरी नजर में एक रहस्यमय व्यक्ति बन गये थे। सब घटनाओं ने मेरी कल्पना के राज्य में प्रश्नों की भीड़ खड़ी कर दी थी। मैं चुपचाप उनके बारे में सोचने लगा।

भोजन के बाद आधी रात तक लंदन के बारे में मांटगोमरी के साथ मेरी बातें होती रहीं। रेलिंग के सहारे पास-पास हम दोनों खड़े थे। निस्तब्ध स्थिर सागर में तारे चमक रहे थे। हमारी अधमुंदी आँखें स्वप्न देखती-सी जान पड़ती थीं। हम लोग अपने-अपने विचारों में डूबे हुए थे। प्रशान्त वातावरण में भावावेग से उच्छ्वसित होकर कुछ देर बाद मैंने कहा—आपने मेरे जीवन की रक्षा की है मि० मांटगोमरी !

"यह तो बिकुल ही भाग्य का खेल था", मांटगोमरी ने निःस्पृह भाव से उत्तर दिया।

मैंने कहा—तो भी प्रत्यक्ष में आप ही मेरे रक्षक हैं ; इसलिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

मांटगोमरी ने कहा—किसी को धन्यवाद देने की ज़रूरत नहीं है साहब। आपको सहायता की आवश्यकता थी और मुझे डाक्टरी के बारे में कुछ ज्ञान की। मेरा यह एक ख़याल ही था कि मैंने आपके इंजेक्शन दिया, आपको पथ्य दिया। असल बात यह है कि अर्से से एक ही तरह की दिनचर्या थी, समय काटे नहीं कटता था। कुछ नया काम करने को बहुत जी चाह रहा था। उस दिन अगर मेरा मिजाज़ ठीक न होता, अथवा यदि आपको देखकर मेरे मन में खीझ या नफ़रत पैदा होती, तो अब तक आप की क्या दशा होती, यह कहना

कठिन है।

उनकी बात सुनकर मेरा उत्साह कुछ फीका पड़ गया।

"वह चाहे जो हो"—मैंने कहना शुरू किया।

मांटगोमरी बीच ही में बोल उठे—भाग्य, मैं आपसे कहता हूँ, यह बिल्कुल ही भाग्य की बात है। मनुष्य का सब कुछ भाग्य के अधीन है। जो लोग बिल्कुल गधे हैं, वे ही इस साधारण-सी बात को समझ नहीं पाते। आप बता सकते हैं, मैं क्यों आज यहाँ, सभ्य जगत् से इतनी दूर, एक निर्वासित मनुष्य का जीवन बिता रहा हूँ? कहाँ प्राण-चंचल, उत्सव से गूँजता हुआ लंदन शहर और कहाँ निरानन्द सुनसान यह टापू? जानते हैं, मेरा क्या अपराध है? ग्यारह वर्ष पहले एक कुहासे की रात में केवल दस मिनट के लिए मेरा दिमाग़ ख़राब हो गया था, उसी के फलस्वरूप आज मेरी यह अवस्था है।—कहकर वह चुप हो गये।

मैंने पूछा—उसके बाद?

मांटगोमरी ने कहा—उसके बाद और क्या?

दोनो ही जने चुप हो रहे। क्षण भर बाद वह हँस उठे। बोले—सन्नाटे की अँधेरी रात है; आकाश में असंख्य तारागण खिल उठे हैं। तारों की रोशनी में कैसा जादू है! यह जैसे हृदय के भीतर की सब गुप्त बातें खोल कर कहलाना चाहती है। शायद उन्हें छिपाये रखना ही ठीक है, लेकिन तो भी आप से कह देने को जी चाहता है।

मैंने कहा—आप निश्चिन्त होकर मुझसे सब खोलकर कह सकते हैं। आपकी बातें कभी किसी पर प्रकट न होंगी......अर्थात् आपको अगर यह आशंका हो।

कहते-कहते भी वह रुक गये, संदेह के भाव से सिर हिलाने लगे।

यह देखकर मैंने कहा—रहने दीजिए। जी नहीं चाहता, तो न कहिए। सुनकर मुझे क्या लाभ होगा। आपकी गुप्त बात गुप्त ही रहना अच्छा है। कहकर शायद आपका हृदय कुछ हल्का होगा, अगर मैं उस बात को गुप्त रखूँ। किन्तु यदि मैंने कभी उसे प्रकट कर दिया, तब तो......

मांटगोमरी की हिचकिचाहट को देखकर मैंने समझ लिया कि वह यह निश्चय नहीं कर पा रहे हैं कि मुझसे अपना भेद खोलना ठीक होगा या नहीं। सच तो यह है कि कब एक डाक्टरी का छात्र किस अपराध के लिए लंदन से निकाल दिया गया था, यह जानने का कोई कौतूहल मेरे मन में भी न था। लेकिन हाँ, इस बारे में अपने मन की गढ़ी एक धारणा अवश्य मैंने बना ली थी।

मैं धीरे-धीरे वहाँ से चला गया। देखा, काली-सी मूर्ति झुकी हुई दूर पर आसमान के तारे देख रही है। आगे बढ़कर देखा, वह वही मांटगोमरी का किम्भूत-किमाकार कलूटा सेवक था। मेरे पैरों की आहट से चौंककर, मेरी ओर देखकर, फ़ौरन् उसने अपनी नज़र फेर ली।

यह घटना आप लोगों को शायद बहुत मामूली ही जान पड़ेगी, लेकिन मेरे सारे शरीर में एक बिजली की लहर-सी दौड़ गई। जहाज के चक्के के पास एक छोटी-सी लालटेन के सिवा और कोई रोशनी हमारे आस-पास नहीं थी। उस स्थान पर एक तरह से अँधेराघुप ही था। उसी अन्धकार में पल भर के लिए उस व्यक्ति से मेरी आँखें चार हो गईं थीं। उस व्यक्ति की दोनों आँखें एक मटमैले हरे रंग की ज्योति से चमक रही थीं।

यह मैं जानता हूँ कि मनुष्य की आँखों में लाल आभा सुदुर्लभ होने पर भी असंभव नहीं है, हालाँकि उस समय यह बात मुझे मालूम न थी। किन्तु, यह दृष्टि तो बिल्कुल ही अमानुषिक थी। मनुष्य की

दृष्टि तो कभी ऐसी हो ही नहीं सकती। देखते ही मैं समझ गया कि वह अभी तक प्रकृतिस्थ नहीं हो पाया था। वह कुरूप, काली, रोओं से भरी आकृति और उसकी अग्नि बरसानेवाली दृष्टि देखकर इस अधेड़ अवस्था में भी मैं एक बच्चे की तरह आतंक से काँप उठा। धीरे-धीरे मेरे मन से वह भाव दूर हो गया। मैं वास्तव में लौट आया। मांटगोमरी का वह कुत्सित आकारवाला नौकर रेलिंग पकड़कर आकाश की ओर ताक रहा है और स्वयं मांटगोमरी मुझ से बात-चीत कर रहे हैं।

मांटगोमरी ने कहा—चलिए, सोवें, रात हो गई।

हम दोनों जाकर सो गये।

रात बुरे-बुरे सपने देखते बीती। रात गहरी है, आकाश में फीका-फीका चंद्रमा है। एक अस्पष्ट श्वेत प्रकाश की रेखा ने मेरे केबिन की दीवार पर पड़कर एक अमंगलसूचक आकृति धारण की। कुत्ते एकाएक जाग उठे और फिर चीखने-चिल्लाने तथा उछल-कूद मचाने लगे। इसके फलस्वरूप दुश्चिन्ता और एक अजाने आतंक के बीच ही सारी रात बीती। अन्त को प्रातःकाल की ठंडी हवा में मैं सो गया।

५

केवल प्रवाह में बहता रहा

रात भर बन्दूक की आवाज़ और उन्मत्त जनता के वीभत्स सपने से सवेरे आँख खुलते ही ऊपर से किसी के कर्कश चीत्कार का शब्द सुनाई पड़ा। आँखें रगड़कर कान लगाकर सुनने लगा। कुछ क्षणों के लिए यही समझ में न आया कि मैं कहाँ हूँ। इसके बाद एकाएक मेरे कानों में नंगे पैरों किसी के तेज चलने की आहट पहुँची, और ज्ञान पड़ा कि जैसे किसी भारी चीज़ को समुद्र में फेंका जा रहा है। उसी के साथ जंजीर की झनझनाहट भी सुन पड़ी।

एकाएक जहाज का मुँह घूम गया, और साथ ही साथ पानी जहाज से टकरा-टकराकर छलछल करने लगा। एक हरे रंग की लहर, जिसके ऊपर एक पीली आभा दौड़ रही थी, बारबार ऊपर उठकर जहाज की गोल शीशेदार खिड़की से टकराने और सौ टुकड़े होकर नीचे लुढ़कने लगी। मैं अपने बिछौने से उछलकर खड़ा हो गया और कपड़े पहनकर सीधे डेक पर जा पहुँचा।

पूर्व आकाश में सूर्योदय की धूम थी। अरुणावर्ण आकाश की ओर ताकते ही पहले कप्तान की पीठ मुझे देख पड़ी। उसके चौड़े कंधों के ऊपर से नज़र दौड़ाकर मैंने देखा, वह 'पूमा' भय से सिटपिटाया और सिकुड़ा हुआ पिंजड़े के भीतर बैठा है।

इतने में कप्तान गरज उठा—ले जाओ जहाज से सबको; अभी ले जाओ! मैं अपना जहाज फिर वैसा ही साफ़-सुथरा देखना चाहता हूँ। कप्तान मेरा रास्ता रोके खड़ा था, इसी से रास्ता छोड़ने के लिए उसका कंधा छूकर मैंने इशारा किया। चौंक कर दो पग पीछे हट कर वह कुछ देर तक एकटक मेरी ओर ताकता रहा। देखते ही मैं समझ गया कि अभी तक वह ठीक होश-हवास में नहीं है।

"हल्लो!" कहकर उसने बेवक़ूफ़ की तरह मेरी ओर ताका। इसके बाद ही उसकी आँखों में ज्योति लौट आई। बोला—अरे! यह तो मिस्टर—मिस्टर—

मैंने कहा—प्रेन्डिक।

कप्तान ने कहा—धत् तेरे प्रेन्डिक की! 'चुप रहो'—हाँ, यही तुम्हारा ठीक नाम है—मि० चुप रहो।

मैंने सोचा, इस नरपशु के मुँह लगना बेकार है; लेकिन इसके बाद ही वह जो कर बैठा, उसकी मैं उस जैसे आदमी से भी आशंका नहीं कर सकता था। मांटगोमरी एक किनारे खड़े मैली-सी पोशाक पहने एक मोटे-से भले आदमी से बातें कर रहे थे। वह सज्जन, जान पड़ता है, अभी-अभी जहाज पर आये थे। मेरी ओर उँगली से इशारा करके कप्तान गरज उठा—निकल जाओ मि० चुप रहो—निकल जाओ मेरे जहाज से!

उसका कंठ-स्वर सुनकर मांटगोमरी और उनके वह साथी सज्जन घूमकर देखने लगे।

मैंने कहा—आप यह क्या कह रहे हैं ?

कप्तान ने वैसे ही गरजकर कहा—बदनसीब मिस्टर चुप रहो, मैं क्या कह रहा हूँ, यह तुम समझ नहीं पा रहे हो ? मेरे जहाज से सीधे समुद्र के जल में फाँद पड़ो—जल्दी भागो—समझे मि० चुप रहो ! हम अब जहाज को सफ़ा करेंगे । अभी उतर जाओ मेरे जहाज से !

मैं भौचक्का-सा उसकी ओर ताकने लगा । इतनी देर में जैसे मेरे होशहवास लौट आये । जान पड़ा, यही तो मैंने चाहा था । इस झगड़ालू शराबी के साथ यात्री के रूप में समुद्री यात्रा न कर पाना कोई शोचनीय दुर्भाग्य की बात नहीं है । मैंने मांटगोमरी की ओर देखा ।

मांटगोमरी के बदले उनके साथी ने संक्षेप में मुझे जता दिया कि वे लोग मुझे अपने साथ नहीं ले जा सकते ।

"मुझे साथ नहीं ले जा सकते !" कहकर अवाक् विस्मय के साथ मैंने उन सज्जन के मुँह की ओर देखा, किन्तु कोई भावान्तर मुझे वहाँ नहीं देख पड़ा ।

"देखिए..." कहकर कप्तान की ओर फिरकर मैंने कुछ कहना चाहा; लेकिन कप्तान बीच ही में बम की तरह फट पड़ा—"उतर जाओ मेरे जहाज से—अभी उतर जाओ ! दुनिया भर के जीव-जन्तुओं और मनुष्यभक्षक जानवरों के लिए ही तो मेरा जहाज बना है न ? और तुम लोग ? तुम लोग तो उनसे भी अधम हो ! वे तुमको अगर न ले जायँ तो तुम जहन्नुम में जाओ । मेरे जहाज में अब तुम्हारे लिए जगह नहीं हो सकती । इस टापू में आकर मुझको काफ़ी नसीहत मिल गई है ।

मैंने अनुनय के स्वर में दीनता के साथ कहा—लेकिन—मि०

मांटगोमरी...

हताश भाव प्रकट करनेवाली मुद्रा से हाथ पलटकर मांटगोमरी ने जता दिया कि वह निरुपाय हैं। प्रौढ़ आगन्तुक की बात वह टाल नहीं सकते।

कप्तान ने घोषणा कर दी—अभी इस जहाज से उतर जाओ—अब मैं अधिक देर नहीं करूँगा।

इसके बाद जो हुआ, वह जैसा हास्यकर है, वैसा ही मर्मस्थल को चोट पहुँचानेवाला भी। एक-एक करके तीनों आदमियों से मैं अनुनय-विनय करने लगा। पहले उस प्रौढ़ आदमी से, उसके बाद मांटगोमरी से और अन्त में उस शैतान कप्तान से। यहाँ तक कि जहाज के खलासियों और कुलियों से भी मैंने दया की भिक्षा माँगी। मांटगोमरी ने एक शब्द भी नहीं कहा; वह केवल सिर हिलाने लगे।

कप्तान वही एक रट लगाये रहा—अभी उतर जाओ मेरे जहाज से—चूल्हे में जाय आईन अदालत। मैं ही यहाँ सब कुछ हूँ।

क्रोध और व्यर्थता से मैं पागल-सा हो गया। सब को धमकाने लगा। उसके बाद निस्सहाय भाव से, शून्य दृष्टि से सब की ओर ताकने लगा।

इसी बीच खलासी लोग उन जानवरों को जहाज से नीचे उतारने लगे थे। एक बड़े से लंच में उन पशुओं को एकत्र किया जाने लगा। उस टापू से जो लोग जहाज के सामान को उतारने आये थे, उनकी ओर तब तक मेरी नज़र नहीं पड़ी थी।

मांटगोमरी या उनका साथी, किसी को मेरे बारे में रत्ती भर भी चिन्तित नहीं देखा गया। वे उस समय अपने ही सामान और जानवरों की देख-भाल में उलझे हुए थे। कप्तान उनकी ओर आगे बढ़ गया; किन्तु सहायता करने के बदले वह उनके काम में विघ्न ही डालने लगा।

अपनी असहाय अवस्था की कल्पना करके अत्यन्त दुःख में भी मुझे हँसी आने लगी। प्रातःकाल कलेवा नहीं मिला था, इससे शरीर में और भी कमज़ोरी मालूम पड़ रही थी। मैं स्पष्ट समझ गया कि इस दुर्बल शरीर से कप्तान को रोकना या मांटगोमरी और उनके साथी के ऊपर ज़ोर-जबरदस्ती करना या ज़ोर दिखाना संभव नहीं है। भाग्य के हाथ अपने को सौंप देने के सिवा और कोई उपाय नहीं है। मेरी मौजूदगी को सम्पूर्ण रूप से उपेक्षा करके मांटगोमरी वगैरह अपने लंच में सामान और जानवरों के पिंजड़े लादने लगे।

जहाज के सब जानवरों को जब लंच में लाद दिया गया, तब कप्तान के आदमी मुझे ठेल-ठाल कर जहाज के किनारे ले जाने लगे। अपने को छुड़ाने की चेष्टा में प्राणपण से मैं हाथ-पैर फेंकने लगा, लेकिन उससे कुछ लाभ नहीं हुआ। उस अवस्था में भी मांटगोमरी वगैरह के लंच पर जो लोग थे, उनके अद्भुत तमीले (ताँबे के रंग के) मुखों की ओर मेरी दृष्टि आकृष्ट हुई। ठसाठस भरा हुआ वह लंच धीरे-धीरे जहाज के पास से हटने लगा। नीचे झाकने पर हरे रंग की जलराशि देख पड़ी। मैं आत्म-रक्षा के लिए प्राणपण से पीछे हटने की चेष्टा करने लगा।

लंच पर जो लोग थे, वे मेरी दशा देखकर आनंद से तालियाँ बजाने लगे; किन्तु मांटगोमरी के झिड़कने पर चुप हो गये। 'लेडी वेइन' जहाज की डोंगी पास ही थी। पानी से आधे के लगभग भर गई थी। किसी तरह का सामान या खाने-पीने की चीज होना तो दूर, उसमें एक डाँड तक नहीं था। मैं उस डोंगी पर जाने के लिए किसी तरह राज़ी नहीं हुआ। पट पड़कर जहाज के डेक से चिपटकर पड़ा रहा। तब खलासियों ने मेरी कमर में रस्सी बाँधकर मुझे जबर्दस्ती उस डोंगी में उतार दिया। इसके बाद डोंगी जिस रस्सी से जहाज में बँधी थी

उसे काट दिया। वज्राहत की तरह मैंने देखा, सामने का जहाज धीरे-धीरे मुँह फेर रहा है। पाल में हवा लगते ही वह फरफराता हुआ फूल उठा। लहरों की ताल पर हिलता-डुलता मुँह फेरकर मेरी ओर पीठ करके जहाज धीरे-धीरे नजरों से ओझल हो गया

जहाज किधर गया, मैंने घूमकर नहीं देखा। क्या से क्या हो गया, यह पहले मैं ठीक-ठीक समझ न सका। शून्य दृष्टि से समुद्र की ओर, जिसमें तेल की बूँदें छहरा रही थीं, डोंगी के बीच गुड़ी-मुड़ी होकर मैं पड़ा रहा। कुछ देर बाद मुझे मालूम हुआ कि जहाज में आने के पहले की मेरी वही असहाय अवस्था फिर लौट आई है। घूमकर देखते ही मैंने देखा, थोड़ी दूर पर जहाज के ऊपर कप्तान खड़ा है, और मुझे देखकर व्यंग्य की हँसी हँस रहा है। मैंने टापू की ओर ताका। पांच आगे बढ़ते-बढ़ते क्रमशः छोटा होता जा रहा है।

यह अमानुषिक निष्ठुरता इतनी देर बाद जैसे मेरी समझ में आई। अब किनारे पहुँचने का मेरे लिए कोई उपाय नहीं है। एक-मात्र आशा यही है कि लहरों के साथ बहते-बहते शायद मेरी यह डोंगी किसी तरह किनारे जा लगे। पहली मर्तबा डोंगी पर जब मैं था, मुझे सर्दी लग गई थी। वह असुस्थता अभी तक मैं दूर नहीं कर पाया था। उस पर प्रचंड भूख की ज्वाला से मैं अत्यन्त दुर्बल हो पड़ा था, नहीं तो शायद मुझ में मन की दृढ़ता की इतनी कमी न होती। एकाएक छोटे बच्चे की तरह मैं फफक-फफक कर रो उठा। मेरे दोनों गालों से आँसू बहने लगे। पागल की तरह मैं डोंगी के तख्तों में हाथ-पैर पटकने लगा। साथ ही साथ ईश्वर से अपनी मृत्यु की प्रार्थना भी करने लगा।

६

कुत्सित आकार का नौकारोही

मुझे इस तरह बहते जाते देखकर शायद उस टापू के रहनेवालों को दया आ गई। टापू मेरे पूर्व की ओर था। मेरी डोंगी कोना पकड़कर अत्यन्त धीमी गति से उधर आगे बढ़ रही थी। अधीर आनन्द के साथ एकाएक मैंने देखा, वह लंच अपना मुँह घुमाकर मेरी ओर आ रहा है। लंच ठसाठस लदा हुआ था। उसके पास आते ही मैंने देखा, मांट-गोमरी का साथी, जिसके सिर के सब बाल सफेद थे, पीछे की ओर बैठा हुआ एकटक मेरी ओर ताक रहा है। वह विकलांग कुरूप कलूटा आदमी भी 'पूमा' के पास खड़ा मेरी ओर आग बरसानेवाली ज्वलंत दृष्टि से देख रहा है। लंच पर और भी तीन व्यक्ति थे। उनकी आकृति अति अद्भुत थी। कुछ-कुछ पशु की-सी। स्टग हाउंड (कुत्ते) उन्हें देखकर लगातार विकट चीत्कार कर रहे थे। मांटगोमरी 'हाल' पकड़े थे। लंच को आगे बढ़ा लाकर चट से उन्होंने मेरी डोंगी लंच के पीछे बाँध ली। लंच में बिल्कुल जगह न रहने के कारण इसी तरह पीछे

बाँधकर मुझे ले जाने की व्यवस्था की गई।

अब मैं आनन्द से आपे के बाहर हो रहा था, सुध-बुध खो बैठा था। अब वह भाव दूर हो गया था। मैंने मांटगोमरी के सादर संभाषण का प्रत्युत्तर उन्हें दिया। उनसे मैंने कहा—मेरी डोंगी में पानी ही पानी भरा है। तब उन्होंने मुझे एक टीन का डिब्बा दिया। उससे मैं डोंगी के भीतर का पानी बाहर उलीचने लगा।

लगभग सारा पानी उलीच डालने के बाद लंच पर जो लोग सवार थे, उनके प्रति मेरी दृष्टि आकृष्ट हुई।

मैंने देखा, वह सफेद बालोंवाले भले आदमी तब भी एकटक मुझे देख रहे थे। मगर उस देखने में जैसे कुछ संशय की छाया थी। मुझसे नज़र मिलते ही उन्होंने नज़र फेर ली। उन सज्जन के शरीर की गठन सुडौल थी। माथा चौड़ा और मुख के अवयव कुछ स्थूल थे। किन्तु उनकी आँखों का ऊपरी हिस्सा कुछ फूला और नीचे झुका हुआ था। मोटे होठों की नीचे जानेवाली किनारे की रेखा उनके विचार की दृढ़ता का परिचय दे रही थी। वह धीमी आवाज में मांटगोमरी से बात कर रहे थे। उसका कुछ भी मुझे नहीं सुनाई दे रहा था। इस के बाद मेरी दृष्टि उनके साथी तीनों आदमियों की ओर आकृष्ट हुई। केवल उनके मुख ही दिखाई दे रहे थे; लेकिन नहीं जानता, उनके मुखों में क्या बात थी कि देखकर घृणा से मेरा सारा शरीर संकुचित हो उठा। स्थिर दृष्टि से मैंने उन्हें लक्ष्य किया; किन्तु समझ नहीं पाया, किस कारण से मेरे मन में उनके प्रति घृणा उत्पन्न होने लगी।

मुझे वे पीले रंग की जाति के ही आदमी जान पड़े। एक विचित्र पोशाक से उनका सारा शरीर ढका हुआ था। हाथों की उँगलियों में, यहाँ तक कि उनके पैरों तक में मरहम पट्टी-सी की हुई थी—पट्टियाँ बँधी थीं! मनुष्य की ऐसी पोशाक मैंने कभी नहीं देखी थी।

उनके सिर पर पगड़ी थी। पगड़ी के बाद ही उनका अवास्तव मुख-मण्डल देख पड़ता था। नीचे की चौंह की हड्डी उठी हुई थी, उनकी आँखों की दृष्टि चमकीली थी। सिर पर विरले बाल थे और वे बहुत ही मोटे थे, बहुत कुछ घोड़े की पूँछ के बालों से मिलते-जुलते। वे बैठे थे। देखकर जान पड़ा कि वे किसी भी जाति के आदमी से लम्बाई में बड़े होंगे। मांटगोमरी के साथी वह प्रौढ़ व्यक्ति लगभग छः फुट लम्बे थे। ये तीनों आदमी, जिनका वर्णन मैं कर रहा हूँ, कम से कम उनसे भी बालिश्त भर ऊँचे होंगे।

बाद को अवश्य मुझे मालूम हुआ था कि उन में से कोई भी मेरी अपेक्षा लम्बा नहीं था। उनके शरीर का ऊपरी हिस्सा ही इस तरह अस्वाभाविक रूप से बढ़ा था; किन्तु दोनों पैरों की जाँघें बहुत ही छोटी और अद्भुत ढंग की थीं, जैसे टेढ़ी और मोड़ी हुई-सी। उनके पीछे से वही कलूटा व्यक्ति झाँक रहा था, जिसकी आँखें अँधेरे में अंगारे जैसी जलती हैं।

इतनी देर तक मैं उन लोगों की ओर एकटक ताक रहा था। अब उन्होंने भी मेरी ओर ताका। आँखें चार होते ही एक-एक करके तीनों मुँह फेरकर एक अद्भुत चोर नज़र से मुझे ताकने लगे। मैंने यह समझकर उनकी ओर से अपनी नज़र फेर ली कि इस तरह मेरा देखना उन्हें बुरा लग रहा है। क्रमशः हम लोग उस टापू के पास पहुँच गये और मैंने उधर नज़र दौड़ाई। टापू नीचा ही था। घने पेड़ भरे पड़े थे। उनमें अधिकांश ही एक अज्ञात नाम की जाति के पेड़ थे। धूसर बालू ढालू होकर समुद्र के किनारे तक फैली हुई थी। इधर-उधर कई पेड़ और झाड़-झंखाड़ थे। कुछ ऊपर पत्थर की दीवार से घिरा एक चबूतरा था, और भीतर की ओर छत-पटी दो कोठरी देख पड़ती थीं।

किनारे पर पानी के पास एक आदमी खड़ा था। दूर से जान पड़ा था कि और भी कईएक किंभूत-किमाकार (न जाने कैसे बदसूरत) प्राणी इधर-उधर झाड़ियों की आड़ से झाँक रहे हैं। लेकिन पास आने पर कोई नहीं देख पड़ा। किनारे खड़े आदमी को मैंने ध्यान से देखा। मँझोले क़द का आदमी था। काले हब्शी की-सी शरीर की गठन थी। किन्तु उसके भारी मुख में होंठ नाम की कोई चीज़ न थी। उसके हाथ अस्वाभाविक रूप से पतले थे, और दोनों पैर लंबे-लंबे टेढ़ेमेढ़े थे। भारी सिर को सामने की ओर झुकाकर वह एकाग्र मन से हम लोगों को ताक रहा था। मांटगोमरी और उनके साथी की तरह वह भी जाकेट और नीली सर्ज का सूट पहने था। हम लोगों को पास आते देखकर वह अत्यन्त अद्भुत भाव से इधर-उधर दौड़ने लगा। मांटगोमरी के हुक्म देते ही लंच के ऊपर से चार जने एक साथ उछल-कर किनारे फाँद पड़े। उनके चलने-फिरने का ढंग कैसा बुरा था! किनारे के पास एक कृत्रिम और तंग 'डक' (नाव लगने का घाट) बना था। मांटगोमरी लंच को उसके भीतर ले गये। किनारेवाला वह आदमी दौड़कर हम लोगों की ओर आगे बढ़ा। मैंने उसे 'डक' ज़रूर कहा है; लेकिन वह नाले के सिवा और कुछ न था। लंच किसी तरह उसके भीतर जा सकता था।

लंच से उतरते ही तीनों आदमी माल-असबाब उतारने लगे। किनारे पर का वह आदमी भी उनकी सहायता करने में लग गया। हाथ-पैरों में बैंडेज बँधे हुए उन तीनों आदमियों के चलने-फिरने के ढंग को देखकर ही मुझे सब से अधिक विस्मय हुआ था। उनका अंग-संचालन ठीक संकुचित या जड़तायुक्त नहीं कहा जा सकता; किन्तु न जाने कैसा विश्री था। उसे देखकर घृणा भी होती थी और विस्मय भी। पैरों के जोड़ जैसे ग़लत जगह पर लगे हों, ऐसा जान पड़ता था।

मनुष्य के जैसे स्वाभाविक पैर होते हैं, ठीक वैसे नहीं थे। कुत्ते उस समय भी ज़ोर-ज़ोर से भूँक रहे थे। मांटगोमरी के साथी सज्जन जैसे उन कुत्तों को लेकर किनारे पर उतरे, वैसे ही वे कुत्ते उन किनारे पर के अद्भुत व्यक्तियों की ओर झपटने के लिए जंजीर में झटके देने लगे।

वे तीनों व्यक्ति टूटी-फूटी भाषा में आपस में बातें कर रहे थे। किनारे पर के उस आदमी ने, जो टापू से आया था, उत्तेजित भाव से जाकर उन लोगों से न जाने क्या कहा। मालूम नहीं, ये लोग किस भाषा में बातें कर रहे थे। शायद वह कोई विदेशी भाषा होगी। लेकिन मुझे जान पड़ा, जैसे यह भाषा और यह कण्ठ-स्वर मैं पहले कहीं सुन चुका हूँ। सफेद बालोंवाले उन सज्जन को घेरे हुए दो कुत्ते समान स्वर से भूँक रहे थे। वह सज्जन चिल्लाकर उन कुत्तों को चुप रहने के लिए धमकाने लगे। मांटगोमरी भी लंच से उतर पड़े। इसके बाद माल-असबाब उतारा जाना शुरू हुआ। बहुत देर से भूखा हूँ, उसके ऊपर नंगे सिर पर सूर्य की तीव्र किरणें पड़ रही हैं। इस दुर्बल शरीर से मैं उन लोगों की सहायता करने के लिए आगे बढ़ नहीं सका।

उन प्रौढ़ सज्जन को एकाएक जैसे मेरा ख़याल आ गया। आगे बढ़ आकर मुझ से बोले—आपको देखकर जान पड़ता है, आपने अभी सबेरे का कलेवा नहीं किया। इस त्रुटि के लिए मैं आपसे क्षमा-प्रार्थी हूँ। कारण, और चाहे जो हो, आप इस समय हम लोगों के अतिथि हैं; अतएव आपकी ख़बर लेना और आपको कष्ट न होने देना हमारा कर्त्तव्य है।

घनी काली भौंहों के नीचे उनकी दोनों काली उज्ज्वल आँखों में बुद्धि की दीप्ति जगमगा रही थी। तीक्ष्ण दृष्टि ऊपर उठाकर

उन्होंने मेरी ओर देखा। बोले—मांटगोमरी कहता है, आप शिक्षित आदमी हैं। विज्ञान के सम्बन्ध में भी आप को कुछ ज्ञान है। लेकिन और स्पष्ट विवरण पाने से मैं सुखी होऊँगा, मि० प्रेन्डिक।

मैंने उन्हें बताया कि रॉयल कॉलेज आफ़ साइन्स में, प्रोफेसर हक्सली की देख-रेख में बॉयोलोजी (जीव-विज्ञान) लेकर कई वर्ष मैंने खोज की है। सुनकर उन्होंने भौंहें सिकोड़कर कहा—तब तो अवश्य यह मामला कुछ और ही तरह का हो गया। हम दोनों ही जने बायोलोजिस्ट हैं— माने मांटगोमरी और मैं। और इस टापू को भी बॉयोलोजी की चर्चा का एक अड्डा कहा जा सकता है।

सादी पोशाक पहननेवाले वे लोग ठेलागाड़ी में पूमा को चबूतरे की ओर ले जाने की व्यवस्था कर रहे थे, उधर कुछ देर तक ताककर उन्होंने फिर कहा—नहीं जानता, कब आप यह टापू छोड़कर जा सकेंगे। इस टापू के आसपास कभी कोई जहाज़ नहीं आता। बहुत हुआ तो साल भर में कहीं एक बार हम एक आध जहाज़ इधर आता-जाता देख पावेंगे।

एकाएक वह मेरे पास से चले गये। जान पड़ता है, उस चबूतरे के घेरे के भीतर घुस गये। मांटगोमरी उन आदमियों की सहायता से एक नीची-सी ठेला गाड़ी में छोटा-मोटा सामान चढ़ा रहे थे। लामा (एक जानवर), खरगोशों के कई पिंजड़े और कई एक स्टग हाउंड (कुत्ते) उस समय भी लंच के ऊपर थे। मांटगोमरी ने आगे बढ़कर मेरे पास आकर मुझसे हाथ मिलाया और कहा— अच्छा ही हुआ जो आप यहाँ आ गये। मुझे प्रसन्नता ही हुई। कप्तान साला पूरा गधा है। बदमाश आपके जीवन को असह्य बना देता, आपके नाक में दम कर देता।

मैंने कहा—अब की भी आपने मेरे जीवन की रक्षा की।

मांटगोमरी ने कहा—अब भी यह ज़ोर देकर कहना कठिन है। यह टापू बहुत ही ख़राब जगह है। आपकी दशा में अगर मैं पड़ता, तो यहाँ चलने-फिरने में बहुत ही सावधानी बरतता। और ...

कुछ कहते-कहते रुककर उन्होंने बात टाल दी। शायद वह जो कुछ कहना चाहते थे, उसके बारे में उन्हें कोई हिचक हो रही थी। इसके बाद उन्होंने और प्रसंग छेड़ दिया। बोले—इन ख़रगोशों को नीचे उतारूँगा। क्या आप इस काम में मेरी कुछ सहायता करेंगे?

ख़रगोशों को उतारने का काम बड़े मज़े का था। हम दोनों जने पकड़कर एक बक्स (जिसमें ख़रगोश थे) खुश्की में ले आये। इसके बाद ऊपर का पल्ला खोलकर बक्स को टेढ़ा करते ही हड़बड़ाकर ख़रगोश उसमें से बाहर निकलने लगे। इसके बाद मांटगोमरी ताली बजा-बजाकर उन्हें इधर-उधर भगाने लगे। उछलते-कूदते हुए वे भागने लगे। सब कोई बीस एक थे। मांटगोमरी ने कहा—जाओ दोस्तो, अपना वंश बढ़ाकर सारे टापू में फैल जाओ। हमें यहाँ मांस की बड़ी कमी है।

ज़रा देर बाद वह वृद्ध सज्जन एक फ़्लास्क में ब्रांडी और कुछ बिस्कुट लेकर लौट आये। बोले—फ़िलहाल यह खाकर भूख मिटाओ, मि० प्रेन्डिक।

चुपचाप मैं उन बिस्कुटों का सद्व्यवहार करने लगा। उन दोनों ने मिलकर और भी बीस के लगभग ख़रगोश टापू में छोड़ दिये। अवश्य ही 'पूमा' के साथ तीन बड़े खरगोशों के बक्स भी भीतर भेज दिये गये थे। शराब पीने का अभ्यास तो मुझे कभी नहीं रहा, अतएव ब्रांडी मैंने लौटा दी।

७

बन्द दरवाज़ा

जान पड़ता है, पाठक मेरी अवस्था को कुछ-कुछ समझ पा रहे हैं। पहले तो सभी कुछ मुझे इतना अजीब जान पड़ा, मुझे इतनी कल्पनातीत घटनाओं के घेरे के भीतर से जाना पड़ा कि मैं इन अस्वाभाविक घटनाओं के आपेक्षिक गुरुत्व के सम्बन्ध में ठीक-ठीक विचार ही नहीं कर पाया था। मैं लामा के पीछे-पीछे आगे बढ़ने लगा। मांटगोमरी मेरे पीछे-पीछे आ रहे थे। तेजी से मेरे पास आकर उन्होंने मुझसे चबूतरे के घेरे के भीतर न जाने के लिए कहा। मैंने देखा, बड़े पींजड़े समेत पूमा और लंच का सारा माल-असबाब चबूतरे के घेरे के भीतर जाने के द्वार पर बाहर रक्खा हुआ है।

पीछे घूमकर देखा, वह वृद्ध सज्जन मेरी ही ओर आ रहे हैं। मांटगोमरी को लक्ष्य करके बोले—अपने इन अकस्मात् आये हुए अनावश्यक अतिथि को लेकर क्या किया जाय? अब यह एक समस्या आ पड़ी है।

मांटगोमरी ने कहा—विज्ञान के सम्बन्ध में इन्हें कुछ ज्ञान है।

चबूतरे की ओर ताककर सिर हिलाकर उन्होंने कहा—जी चाहता है, इन नये लाये हुए प्राणियों को लेकर अभी अपना काम शुरू कर दूँ। तुम्हारी क्या राय है ?

" हाँ, सो तो ठीक ही है, " यह उत्तर मांटगोमरी ने दिया। पर उनके स्वर में उत्साह नहीं था।

"इन अतिथि महाशय को उस जगह भी नहीं रक्खा जा सकता, और इनके रहने के लिए कोई नई जगह तैयार कर देने के लिए समय भी हमारे पास नहीं है। इसके सिवा इन पर विश्वास करके इनसे सब बातें खोलकर कह देना भी अभी संभव नहीं है।"

मैंने कहा—मैं पूरी तौर से आप लोगों के हाथ में हूँ।

मालूम नहीं ' उस जगह ' से उक्त सज्जन ने कहाँ का इशारा किया। मांटगोमरी ने कहा—मैं यही बात सोच रहा था। अच्छा, मेरी कोठरी का बाहर का दर्वाजा...

"ठीक ठीक, वही जगह अच्छी है"—मांटगोमरी की ओर देखकर वह कह उठे। हम तीनों जने चबूतरे की ओर आगे बढ़ने लगे। वृद्ध ने कहा—माफ़ करना मि॰ प्रेन्डिक,—लेकिन आप यहाँ बिना बुलाये आये हैं। हम लोगों का यहाँ कुछ गोपनीय कार्य है, शायद कुछ-कुछ राक्षसों का-सा ही है; किन्तु इस समय आपको सब बाते बताना संभव नहीं। जिस का दिमाग सही हो, ऐसे समझदार आदमी को अवश्य ही यह मामला ऐसा कुछ भयानक नहीं समझ पड़ेगा, लेकिन तो भी, देखिए, आपको हम लोग पूरी तौर से जानते-पहचानते नहीं.........

मैंने कहा—सो तो है ही ! और मैं भी इतना मूर्ख नहीं हूँ कि आप लोग अपनी सब बातें मुझे न बतलाएँ तो मैं बुरा मानूँ।

उनके मोटे-मोटे होठों में एक मलिन हँसी की रेखा झलक गई। इस बीच हम लोग चबूतरे के प्रधान प्रवेश-द्वार को नाँघ गये थे। भारी

लकड़ी का दरवाजा लोहे के फ्रेम में जड़ा हुआ था और चाभी लगी हुई थी। आगे बढ़ने पर एक कोने में एक छोटा-सा दरवाज़ा मुझे देख पड़ा। मांटगोमरी के साथी ने जेब से एक चाभी निकालकर दरवाज़ा खोला। जैसी अद्भुत वह चाभी थी, वैसा ही मजे का उस चामी से दरवाज़ा खोलने का तरीका था।

उनके पीछे-पीछे मैंने एक छोटी कोठरी में प्रवेश किया। कई एक जरूरी असबाबों से वह कोठरी सजी हुई थी। कोठरी के भीतर और एक दरवाजा था। उसके बाद पक्के फर्श का आँगन था। यह दरवाजा जरा-सा खुला हुआ था। मांटनोमरी ने जाकर उसे बिलकुल बन्द कर दिया। कोठरी के अपेक्षाकृत अँधेरे कोने में एक झूला पड़ा था। दूसरी ओर एक खिड़की थी, उसमें लोहे के सींकचे लगे थे। वहाँ से समुद्र देख पड़ता था।

उन्होंने कहा—यहीं आप रहेंगे; किन्तु कोई दुर्घटना न होने पावे, इसलिए भीतर का दरवाजा मैं उधर से ताला लगाकर बन्द कर दूँगा।

मैंने देखा, खिड़की के पास एक अच्छी-सी डेक-चेयर रक्खी है। झूले के पास एक बुक-शेल्फ में पुरानी किताबें सजी रक्खी हैं। उनमें अधिकांश डाक्टरी की किताबें थीं। किन्तु दुःख की बात है कि वे सब ग्रीक और लेटिन भाषा में थीं। इन दोनों भाषाओं में मेरी गति नहीं थी। बाहर के दरवाजे से निकलकर वह चले गये। जान पड़ा, भीतर का दरवाजा खोलने में उन्हें प्रबल आपत्ति है।

मांटगोमरी ने लौट आकर कहा—हम लोग साधारणतः इसी जगह खाना-पीना करते हैं। इसके बाद वह ज़रा इधर-उधर करके अपने साथी के पीछे चल दिये। मैंने उन्हें पुकारते सुना—"मोरो—मि० मोरो!" उस समय मैंने इस पर कुछ विशेष ध्यान नहीं दिया। कुछ देर बाद उन किताबों को उलटते-पुलटते समय एकाएक मुझे ख़याल

आया, जैसे मैंने पहले कभी यह नाम सुना है।

खिड़की के पास बैठकर परम तृप्ति के साथ बचे हुए बिस्कुटों का सद्व्यवहार करते-करते मैं सोचने की चेष्टा करने लगा—'मोरो'—यह नाम तो मैंने कहीं सुना है। कहाँ सुना है?

खिड़की से मैंने देखा, उन सफेद पोशाक पहने हुए लोगों में से ही एक आदमी एक पैकिंग किया हुआ बक्स समुद्र के किनारे-किनारे लिये जा रहा है। क्षण भर ही में आँखों से ओझल हो गया। कुछ देर बाद पीछे ताले में चाभी लगाने और उसे घुमाने का शब्द सुन पड़ा। इसके बाद ही बन्द दरवाजे के उस तरफ़ से लंच से लाये हुए स्टग हाउंड कुत्तों का शब्द सुनाई पड़ा। वे ठीक भूँक नहीं रहे थे, न जाने कैसे अद्भुत शब्द से गरज रहे थे। इसके बाद ही उनके तेज़ी से दौड़ने-उछलने की और मांटगोमरी की उन्हें शान्त करने की चेष्टा की आहट मिली।

मुझ से अपनी सब बातें छिपाने का उनका प्रबल प्रयास और सतर्कता देखकर मुझे विस्मय हुआ। 'मोरो' नाम इतना जाना-जाना लग रहा है, तो भी किसी तरह यह याद नहीं आया कि ठीक कहाँ, किस प्रसंग में सुना है। इसके बाद मैं समुद्र-तट के उस सफेद पोशाक पहने हुए आदमी के बारे में सोचने लगा। कैसी विश्री अंगभंगी करके वह उस बक्स को खींचे लिये जा रहा था। ऐसा अद्भुत चलने का ढंग किसी मनुष्य का मैंने पहले कभी नहीं देखा था। मैं यह लक्ष्य कर रहा था कि इन अद्भुत लोगों में से किसी ने कभी मुझसे कोई बात नहीं की, हालाँ कि ख़ास अपनी चोर-नज़र से कई बार वे मेरी ओर ताकते देखे गये। असभ्य, बर्बर की रूढ़ दृष्टि से बिल्कुल जुदा वह ताकना था। और वैसी ही ख़ास तौर की उनकी आवाज़ भी है। जैसे कहीं पर इसमें कोई त्रुटि है! इसके बाद ही याद आई,

मोंटगोमरी के उस अद्भुत नौकर की जलती हुई दोनों आँखें।

मैं उसके बारे में सोच रहा था, ठीक इसी समय वह आकर मेरे सामने उपस्थित हो गया। वही सफेद पोशाक पहने था। एक छोटी-सी ट्रे में काफ़ी और कुछ उबाले हुए फल-मूल मेरे लिए लाया था। नम्र विनय से सिर झुकाकर उसने ट्रे को टेबिल पर रख दिया। उसे आगे बढ़ते देख मैं काँपकर कुछ पीछे हट गया।

इसके बाद अवाक् विस्मय से मैं जैसे गतिशक्तिरहित हो गया। काले-काले उलझे हुए बालों की फाँक से उसके दोनों कान मुझे दिखाई पड़े।—वे पतले, सुई की नोक जैसे नुकीले, हल्के तँबीले रंग के थे।

उसने कहा—आप का ब्रेकफ़ास्ट (नाश्ता) है सर।

मैं तब भी एकटक उसके मुँह की ओर ताक रहा था। उसकी बात का जवाब कुछ नहीं दिया। वह मुँह फेरकर दरवाज़े की ओर बढ़ गया—जाते-जाते गर्दन घुमाकर उसने एक बार मुझे देख लिया।

स्मृतिशक्ति के न जाने किस अज्ञात ख़याल से, उसके गमन-मार्ग की ओर ताकते-ताकते एकाएक दो बातें मुझे याद आ गईं—मोरो—हाँ हाँ, 'मोरो-आतंक।" और साथ ही साथ दस साल पहले की एक घटना रजत-पट पर चलचित्र की तरह मेरे मानस-पटल पर उभर आई। क्षण भर में मुझे स्मरण हो आया, बादामी काग़ज़ के ऊपर लाल अक्षरों में छपा हुआ एक विज्ञापन, जिसे पढ़कर सब लोग आतंक से सिहर उठे थे। धीरे-धीरे सारी घटना स्पष्ट याद आ गई। किसी अतीत काल की विस्मृति के अतल तल से वह विज्ञापन अद्भुत प्रकट भाव से फिर मेरे चेतन मन में उदय हो आया। तब मेरी अवस्था बहुत कम थी और मोरो की अवस्था, जान पड़ता है, ५० साल की होगी। विख्यात फिजियालोजिस्ट (शरीर विज्ञान-वेत्ता) मोरो, विज्ञान-जगत् में अपनी असाधारण कल्पना-शक्ति और युक्ति की निर्ममता के लिए सुपरिचित थे।

तो क्या यह वही मोरो हैं? एक जीव का रक्त अन्य जीव के देह में इंजेक्ट करके (प्रवेश कराकर) कैसा असाध्यसाधन किया जा सकता है, इस बारे में उनकी गवेषणा (खोज) ने विज्ञान-जगत् में अचिन्तनीय हलचल मचा दी थी । अपुष्ट देह की पुष्टि के लिए भी उनकी गवेषणा का पंडितों ने विशेष समादर किया था। इसी समय अचानक उन्हें सब छोड़-छाड़कर लंदन से चले जाना पड़ा।

हलचल मचानेवाली कोई विज्ञान के आविष्कार की नई बात जनसाधारण के सामने प्रकट करने के उद्देश्य से, एक संवादपत्र का कोई रिपोर्टर उनकी गवेषणाशाला (लेब्रोरेटरी) में एक बार गया था। किन्तु दैवसंयोग से एक अत्यन्त मर्मान्तिक दुर्घटना के (हाँ, शायद दुर्घटना ही!) फलस्वरूप मोरो की खोज अनिष्टकारिणी प्रमाणित हुई। जिस दिन इस गवेषणा के बारे में डॉक्टर मोरो का लेख प्रकाशित हुआ, उसी दिन एक विकलांग कुत्ता डॉ० मोरो की लेबोरेटरी से भाग गया। बेचारे की दशा अत्यन्त शोचनीय हो गई थी। उसके शरीर की खाल उतार ली गई थी; उसके अंग-प्रत्यंग भी अनेक जगह से काटकूट कर विकृत कर दिये गये थे।

एक सुप्रसिद्ध सम्पादक ने (इस खोज में जो आदमी मोरो का सहायक था, उसी के किसी आत्मीय ने) देश के विवेक के सामने यह मामला उठाया। गवेषणा के ऊपर देश के विवेक की विजय होने के उदाहरण इसके पहले भी पाये जा चुके थे। सारा देश डॉ० मोरो के ऊपर क्रोध से पागल हो उठा और डॉ० मोरो को फौरन देश-त्याग करने के लिए लाचार होना पड़ा। उनको यह दण्ड शायद ठीक ही दिया गया; किन्तु उनके कईएक सहकारियों के क्षीण प्रतिवाद के सिवा, अधिकांश वैज्ञानिकों ने जिस तरह उनका बायकाट किया था, वह एक लज्जाजनक कहानी है। अखबारों से जहाँतक जाना जाता है, उससे कहा जा सकता

है कि उनकी कईएक गवेषणा-मूलक परीक्षाएँ बहुत ही निष्ठुर हुई थीं, इसमें सन्देह नहीं। वैज्ञानिक गवेषणा छोड़कर उसके बदले में शायद वह सामाजिक शान्ति और सौहार्द पा सकते; लेकिन वह इसके लिए राज़ी नहीं हो सके। गवेषणा का उन्माद जिस पर एक बार सवार हो जाता है, उसके लिए ऐसी शर्त पर राजी हो जाना प्रायः असंभव ही है। फिर वह क्वाँरे ही थे, और अपने स्वार्थ के सिवा और किसी की चिन्ता उन्हें नहीं करनी थी।

पक्की तौर से समझ गया, यह वही डॉ० मोरो हैं। जिधर से देखता और विचारता हूँ, इसी एक निश्चय पर पहुँचता हूँ। पूमा और अन्य जीव-जन्तुओं को किस मतलब से इस निर्जन टापू में लाया गया है, यह इतनी देर में मेरी समझ में आ गया। किसी एक गैस की अद्भुत भीनी महक अब तक मेरी चेतना के भीतर समाई हुई थी। एकाएक समझ में आ गया कि यह गंध काहे की है। यह है व्यवच्छेदागार की एंटीसेप्टिक की गंध।.........दीवार की आड़ से पूमा के गरजने का शब्द और एक घायल कुत्ते का चीखना फिर सुनाई पड़ा।

किन्तु एक वैज्ञानिक के निकट जीव-व्यवच्छेद (Vivisection) ऐसी कोई डरने की बात नहीं मालूम होना चाहिए कि वह सब से उसे छिपाने की कोशिश करता रहे। इसी के साथ मेरे मन में स्पष्ट रूप से मांटगोमरी के नौकर के पतले नुकीले कान और जलती हुई आँखें चमक उठीं। सामने के हरे-नील सागर की ओर मैं एकाग्र मन से ताकता रहा। पिछले कई दिनों की अद्भुत घटनाओं ने मेरे मन में धक्कामुक्की—ठेलमठेल—शुरू कर दी थी।

इस सब का क्या मतलब है? सुनसान टापू में दीवार से घिरा एक चबूतरा, एक निर्मम जीव-व्यवच्छेदी वैज्ञानिक और वे विकलांग कई मनुष्य या मनुष्य-पशु?

८

पूमा का आर्तनाद

मेरे विचारों के सिलसिले को तोड़ते हुए मांटगोमरी ने प्रवेश किया और उनके पीछे-पीछे उनका वह सेवक भी कुछ खाने-पीने का सामान लेकर उपस्थित हुआ। उस बदशकल और अद्भुत आकार के प्राणी की ओर कनखियों से मैंने देखा। देखा, वह भी अद्भुत चंचल आँखों से मुझे घूर रहा है। मांटगोमरी ने मुझे सूचित किया कि डॉ० मोरो हमारे साथ भोजन नहीं करेंगे, इस समय किसी काम में व्यस्त हैं।

मैंने कहा—देखिए, मोरो नाम मैंने सुन लिया है।

उन्होंने कहा—ग़ज़ब हो गया! सचमुच आपने सुन लिया? आपके सामने उनका नाम लेकर कैसी मूर्खता मैंने की! मुझे जरा सोच कर देखना चाहिए था। तब तो शायद हमारे गुप्त रहस्य का कुछ आभास आपको मिल गया है! —ह्विस्की दूँ?

मैंने कहा—धन्यवाद। मगर मैं शराब नहीं पीता।

उन्होंने कहा—लेकिन मेरा काम तो उसके बिना नहीं चलता।

काश मैं आप जैसा सात्विक हो सकता ! लेकिन घोड़े की चोरी हो जाने के बाद अस्तबल में ताला बन्द करने से क्या लाभ ? इस निकृष्ट नशे के कारण ही आज मैं इस टापू में पड़ा हुआ हूँ। यही नशा और वह कुहासे से भरी रात......ऐसे ही समय मैंने मोरो का निमन्त्रण पाया। सोचा, जाने दो, मेरा भाग्य अच्छा ही है......कैसी अद्भुत बात है, है न ?

बाहर का दरवाज़ा बन्द करके मांटगोमरी का सेवक चला गया। उसके जाते ही मैंने प्रश्न किया—मि० मांटगोमरी, आपके इस सेवक के कान ऐसे नुकीले क्यों हैं ?

उन्होंने एक कौर वैसे ही मुँह में डाला था। मेरी बात सुनते ही वह एक कसम खा बैठे। इसके बाद पल भर के लिए मेरी ओर ताक कर मेरी बात को दोहराकर बोले—नुकीले कान !

यथासंभव शान्त कण्ठ से धीरे-धीरे मैंने कहा—हाँ, थोड़े नुकीले ही तो हैं। और उनके चारों ओर हल्के तँबीले रोएँ भी हैं।

और थोड़ी ह्विस्की पीकर अत्यन्त चिन्तित भाव से उन्होंने धीरे-धीरे कहा—मेरी धारणा थी कि उसके कान बालों में ही ढके रहते हैं।

मैंने कहा—कुछ देर पहले वह काफ़ी लेकर आया था। वह काफ़ी के कप को टेबिल पर रखने जा रहा था।, इसी समय उसके कानों पर मेरी नजर पड़ गई। और उसकी दोनो आँखें ? अंधकार में अंगारे की तरह जलती हैं।

कुछ देर सोचकर मांटगोमरी ने कहा—मुझे भी ज्ञान पड़ता था कि उसके कानों में कुछ जैसे एक तरह का गोलमाल है। इससे वह इस तरह उन्हें ढके रहता है !......ठीक किस तरह के कान हैं, बतलाइए तो ?

मांटगोमरी के बोलने का ढंग स्वभावतः ही कुछ अटकता-सा है, इस समय वह और भी अस्पष्ट सुन पड़ा।

उनके बोलने के ढंग से जान पड़ा कि वह जान-बूझकर अन-जान या भोले बन रहे हैं; लेकिन मैंने मुख से यह भाव प्रकट नहीं किया। मैंने कहा—नुकीले और बहुत छोटे हैं। काफ़ी रोओं से ढके हुए भी हैं। सब मिलाकर देखने से वह एक अद्भुत जीव जान पड़ता है। ऐसा और कोई आदमी मैंने आज तक नहीं देखा।

पीछे की, दीवार से घिरी, जगह से किसी पशु का आर्तनाद और चीख सुन पड़ी। सुनते ही समझ गया, यह पूमा की चिल्लाहट है। मांटगोमरी काँप उठे। मेरी बात के उत्तर में बोले—ऐसी बात है?

मैंने कहा—आपने उसे कहाँ पाया?

वह बोले—सानफ्रैंसिस्को से।—हाँ, इस आदमी का चेहरा अवश्य ही कुत्सित कुरूप है। और बुद्धि भी बहुत ही कम, नहीं के बराबर है। उसे याद ही नहीं कि वह कहाँ से यहाँ आया है। मगर मुझे तो अभ्यास हो गया है—इन दोनों आदमियों को। आपको वह कैसा लगता है?

मैंने कहा— मुझे तो वह बहुत ही अस्वाभाविक लगता है। आशा करता हूँ, मुझे आप कल्पना-प्रवण न समझेंगे, अगर मैं यह कहूँ कि उसमें ऐसी कोई एक बात है, जिसके कारण उसके पास आते ही मेरा शरीर घृणा से संकुचित होने लगता है—केवल यही नहीं, रोंगटे भी खड़े होने लगते हैं। जान पड़ता है, जैसे किसी दानव के संस्पर्श में आ गया हूँ।

खाना बन्द करके मांटगोमरी मेरी बातें सुन रहे थे, बोले—आप भी कैसी बातें कर रहे हैं! मुझे तो ऐसा कुछ नहीं मालूम पड़ता। यह कहकर उन्होंने फिर खाना शुरू कर दिया।

मैंने कहा—सच कहता हूँ, उसे देखकर कुछ मेरी ही वैसी धारणा नहीं होती ; जहाज के और लोगों ने भी उसे देखकर शायद कुछ ऐसा ही समझा था। वे तो सब उस बेचारे के ऊपर बहुत ही खफ़ा थे ! आपने कप्तान को तो देखा था ?

इसी समय पूमा और भी दूने जोर से चीख पड़ा। वह चीत्कार बड़ा ही मर्मभेदी था। मांटगोमरी ने साँस रोक कर कोई एक कसम खाई। मेरा जी चाहा कि समुद्र के किनारेवाले लोगों के बारे में इन भले आदमी से कुछ प्रश्न करूँ। ठीक इसी समय वह पूमा आर्त-विह्वल स्वर से रो उठा।

मैंने पूछा—अच्छा बताइए, समुद्र के किनारे जिन्हें देखा था, वे किस जाति के लोग हैं ?

अन्यमनस्क भाव से मांटगोमरी ने उत्तर में कहा—वे खूब सुन्दर आदमी हैं, क्यों न ?

साथ ही साथ पूमा ने फिर बहुत तेज़ चीख मारी। मांटगोमरी ने भौंहें सिकोड़ीं।

मैंने फिर कुछ नहीं कहा। पूमा फिर चीख उठा। यह चीखना पहले से भी बढ़कर विकट था। और एक पेग व्हिस्की का पीकर मांटगोमरी ने मेरी ओर ताका। उनकी इच्छा थी कि शराब की उपकारिता के सम्बन्ध में मेरे साथ बहस करें। बोले—आप जानते हैं, इस शराब ने ही आपकी जान बचाई है। उन्होंने मेरी जान बचाई है, यह तथ्य मुझे जताने के लिए जैसे वह कुछ व्यस्त जान पड़े। मैंने भी कुछ इसका उत्तर दिया था, जो इस समय स्मरण नहीं।

हमारा भोजन समाप्त हुआ।

मांटगोमरी का सेवक वही विकलांग जीव आया और भोजन के टेबिल को साफ करके चला गया। मांटगोमरी भी मुझे अकेला छोड़कर

चले गये। जान पड़ा, काटे जा रहे पूमा को चिल्लाहट अब और वह बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं। बातों ही बातों में उन्होंने अपनी स्नायुमण्डली की कमज़ोरी का भी हाल कह दिया। मैं उनके इस इशारे को समझ गया।

धीरे-धीरे जितना समय बढ़ने लगा, पूमा का रोना-चिल्लाना भी उतना ही बढ़ने लगा। पहले उसका चीखना सुनकर मुझे कष्ट हो रहा था; किन्तु क्रमशः मेरा धैर्य जाता रहा। मैं 'होरेस' की एक पुस्तक के पृष्ठ उलट-पुलट रहा था, उसे फेंककर क्रोध और खीझ के मारे अस्थिर होकर कोठरी के भीतर इधर से उधर टहलने लगा।

लाचार होकर कानों में उँगली देनी पड़ी। लेकिन वह बड़ा ही हृदय-विदारक चीखना-चिल्लाना था। अब मुझ से बर्दाश्त न हो सका। मैं धीरे-धीरे उस बंद कोठरी से निकल पड़ा। गर्म दिनों के तीसरे पहर का समय था, जब लोग अक्सर सो रहते हैं। प्रधान प्रवेश-द्वार से निकल-कर मैं उस दीवार के किनारे-किनारे चलने लगा।

वह चीत्कार जैसे बाहर और भी ज़ोर से सुनाई देता था। सारे संसार की यंत्रणा जैसे उसके इस रोने-चिल्लाने में मूर्त हो उठी हो। पास की कोठरी में एक विवश प्राणी असह्य यंत्रणा से छटपटा रहा है, यह जानकर भी मैं उसे अनायास सहन कर सकता, अगर वह अपनी यंत्रणा प्रकट करने की भाषा न पाता। किन्तु, यंत्रणा जब अपने को प्रकट करने की भाषा पाकर हमारी स्नायुतंत्री में आघात करती है, तब हम उसके गुरुत्व की उपलब्धि कर सकते हैं, समवेदना से हमारा हृदय उबल पड़ता है। बाहर चमकती हुई धूप थी, समुद्र के स्निग्ध वायु से जंगल के हरे पत्ते हिल रहे थे। किन्तु, मुझे ऐसा जान पड़ा कि उस क्रंदन के हाथ से जब तक छुटकारा नहीं मिलता, तब तक सारा जगत् अर्थहीन है। कुछ देर बाद फिर उस प्राणी का चीखना-चिल्लाना नहीं सुन पड़ा।

१

जंगल का रहस्य

उस कुटी के पीछे लताओं और झाड़ों से ढका हुआ एक टीला-सा था। झाड़-झंखाड़ और घास-फूस को हटाता हुआ मैं चलने लगा। कहाँ जा रहा हूँ, यह मैं आप नहीं जानता। टीले की छाया के नीचे होकर जाते-जाते मैं टीले के दूसरी ओर जा पहुँचा। फिर धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। कुछ दूर जाकर एक छोटी नदी देख पड़ी। एक तंग उपत्यका (Valley) के बीच से वह वह रही थी। चुपचाप कान लगाकर सुनने लगा। चाहे दूरी के कारण हो, अथवा घने झाड़-झंखाड़ की आड़ के कारण, उस चबूतरे के भीतर का कोई शब्द उस जगह नहीं पहुँचता था। चारों ओर सन्नाटा था। हवा भी जैसे रुकी हुई थी। इसी समय 'खस-खस' शब्द करता हुआ एक खरगोश आड़ से निकला और मुझे देखते ही दौड़कर ऊपर भाग गया। कुछ देर इधर-उधर करके एक पेड़ की छाँह में मैं बैठ गया।

सुन्दर जगह है। दोनों ओर के घने पत्तेवाले पेड़ों की आड़ में

वह क्षुद्र नदी लगभग अदृश्य हो गई है। केवल एक स्थान पर छोटे त्रिभुज के आकार में थोड़ा-सा उसका जल चमक रहा है। सामने कुहासे का नीला आवरण है। उसके बाद दूर पर, नदी के उस पार, घने पेड़ों और छोटे झाड़ों का जंगल है। उसके ऊपर उज्ज्वल नील आकाश है। यहाँ-वहाँ दो-एक आर्किड फूले हुए हैं—कोई सफेद है, कोई लाल। कुछ देर तक इधर-उधर घूमकर वहाँ के दृश्य की बहार देखने लगा। मांटगोमरी के उस सेवक का स्मरण हो आया; लेकिन इस गर्मी में उस के बारे में सोचना कुछ अच्छा नहीं लगा। तंद्रा-सी आने लगी, आँखें बन्द हो गई।

मालूम नहीं कितनी देर बाद, नदी के उस पार से, जहाँ बेशुमार हरियाली थी, एक खसखसाहट का शब्द मेरे कानों में पड़ा और उससे मैं जाग पड़ा। उस शब्द का अनुसरण करके मैंने देखा, किन्तु कुछ भी नहीं नज़र आया। देखा, फर्न के पेड़ की चोटी हिल रही है। इसी समय एकाएक उस पार के किनारे पर कोई एक चीज देख पड़ी। पहले मैं नहीं समझ पाया कि वह कौन प्राणी है। वह प्राणी सिर झुकाकर मुँह डुबाकर नदी का पानी पीने लगा। इतनी देर बाद मेरी समझ में आया कि वह मनुष्य है। वह चौपाये की तरह चार पैरों (दो हाथ दो पैरों) से चल रहा था। उसके शरीर का रंग ताँबे का-सा था। सिर पर काले काले बाल थे। शरीर पर नीली पोशाक थी। मैंने देखा, इस टापू के लोगों की विशेषता ही यह है कि उन सबके चेहरे निहायत भद्दे और कुरूप हैं। उसके जीभ से पानी चाटने का 'चक-चक' शब्द मुझे स्पष्ट सुन पड़ा।

अच्छी तरह उसे देखने के लिए मैं झुका, इसी समय एक ढेला (कंकड़) मेरे हाथ से गिर पड़ा। शब्द सुनकर वह चौंका और अपराधी की तरह सिर उठाकर जैसे उसने ऊपर देखा, वैसे ही मेरी ओर

उसकी आँखें चार हो गईं। साथ ही साथ वह सीधा होकर खड़ा हो गया। आस्तीन से मुँह पोंछकर वह मुझे देखने लगा। उसके दोनों पैर, बाकी शरीर के आधे भी होंगे या नहीं, इसमें सन्देह है। हम दोनों जने लगभग एक मिनट तक एकटक एक दूसरे की ओर ताकते रहे। इसके बाद दो-एक बार पीछे की ओर ताक कर वह उस झाड़ी-झुरमुट के भीतर चला गया। जाते–जाते पीछे घूमकर उसने अनेक बार मुझ पर लक्ष्य किया। उसके चले जाने के बाद भी बहुत देर तक मैं उधर ताकता रहा। मेरी तंद्रा बिलकुल दूर हो गई थी।

इसी समय पीछे कोई शब्द होने से मैं चौंक पड़ा। घूमकर देखा, एक खरगोश अपनी सफेद पूँछ हिलाता हुआ गायब हो गया। साथ ही साथ मैं उछल पड़ा।

इस बदसूरत आधी पशु की आकृतिवाले प्राणी के प्रकट होने के साथ ही साथ सन्नाटे के तीसरे पहर की निर्जनता के सम्बन्ध में मेरी धारणा बिलकुल ही भ्रान्त सिद्ध हुई। भय-चकित दृष्टि से चारों ओर मैं ताकने लगा। मेरे पास कोई शस्त्र न था; इसलिए अफसोस हुआ। उसके बाद ही मैंने सोचकर देखा, वह प्राणी मनुष्य की पोशाक पहने है; जंगली असभ्य मनुष्य की तरह वह नंगा नहीं है। मैंने अपने को यह समझाने की चेष्टा की कि उस आदमी की प्रकृति शायद शांत ही है। उसके चेहरे पर जो भयानकता दिखाई दी है, वही शायद उसका यथार्थ परिचय नहीं है।

लेकिन तो भी मैं पूर्ण रूप से आश्वस्त नहीं हो सका। ढालू उतार से मैं बाईं तरफ़ नीचे उतरने लगा। चलता जाता था और इधर-उधर ताकता जाता था। मनुष्य हाथों-पैरों से चौपायों की तरह क्यों चलता है? मनुष्य कहीं जीभ से चाटकर पानी पीता है? इसी समय किसी पशु की करुण चीख सुन पड़ी। जान पड़ा, शायद वही

घूमा है। जिधर से वह शब्द आ रहा था, उसकी विपरीत दिशा में चलते-चलते, नदी को लाँघकर, उस पार के झाड़-झंखाड़ के भीतर राह बनाता मैं आगे बढ़ा।

एकाएक चौंककर देखा, एक जगह पर बहुत-सी जमीन एकदम लाल हो रही है। पास जाकर देखा, एक तरह का घने पत्तोंवाला एक छोटा झाड़ है। उसमें फूल टिकते नहीं, हाथ लगाते ही पँखड़ियाँ झड़ जाती हैं। इसके बाद ही देखा, फर्न के एक झुरमुट की छाया में एक मरा हुआ खरगोश पड़ा है। उसके चारों ओर ढेरों मक्खियाँ भिनभिना रही हैं। सिर उसका धड़ से अलग है। यहाँ वहाँ ख़ून के दाग़ हैं। मैं सन्नाटे में आ गया। टापू में आनेवाले एक प्राणी का इस तरह अन्त हो गया।

मृत खरगोश के शरीर में और कहीं चोट का चिह्न नहीं था। जान पड़ता है, एकाएक उसे दबोचकर साथ ही साथ सिर धड़ से अलग कर दिया गया है। उसकी रोएँदार देह की ओर देखकर मैं नहीं समझ सका कि कैसे इस तरह उसका सिर काटना संभव हुआ। पूर्वोक्त मनुष्य (या पशु) का मुख देखकर पहले मेरे मन में जो अज्ञात आतंक अंकुरित हो उठा था, वह और भी सुस्पष्ट होकर मेरे ऊपर जैसे छा गया। अब मेरी समझ में आया कि इस अनजाने देश में अकेले निकलकर मैंने बड़ी भारी ग़लती की! चारों ओर के झाड़-झुरमुटों ने मेरी कल्पना में और ही रूप धारण कर लिया। उनकी छाया, केवल छाया ही मुझे नहीं जान पड़ी; जान पड़ा, जैसे वे गुप्त स्थान हैं—उनमें छिपे रहकर शत्रु के ऊपर एकाएक उछलकर आक्रमण किया जा सकता है, उसे दबोच लिया जा सकता है। हरएक आहट जैसे अनागत विभीषिका की पूर्व सूचना जान पड़ती थी। जैसे कोई लोग अदृश्य स्थान से मुझे ताकते हुए आक्रमण करने की ताक में लगे

हुए हैं, ऐसा जान पड़ता था।

मैंने ठीक किया कि जितनी जल्दी हो सके, मुझे उसी चबूतरे के घेरे के भीतर भाग जाना चाहिए। साथ ही साथ घूमकर उन झाड़-झंखाड़ों को नाँघते-फाँदते-रौंदते मैं बेदम दौड़ने लगा।

कुछ दूर जाकर थोड़ी-सी साफ़ जगह दिखाई दी। घास-फूस और झाड़-झंखाड़ वहाँ भी अपना राज्य फैलाने की तैयारी कर रहे थे। वहाँ पहुँचने के पहले ही मैं रुक गया। उस साफ़ खुली जगह के उस पार भी घना जंगल था। उस ख़ाली जगह में एक बड़ा-सा पेड़ पड़ा हुआ था। उसके ऊपर, देखने में बहुत ही कुरूप, तीन आदमी बैठे हुए थे। उनमें एक स्त्री थी, बाकी दो मर्द थे। कमर के पास थोड़े-से लाल कपड़े के टुकड़े के सिवा उनके शरीर पर और कोई आवरण नहीं था। उनके शरीर का रंग लाली लिये था। किसी असभ्य मनुष्य के शरीर का वैसा रंग मैंने नहीं देखा। मुँह ख़ूब गोल-गोल था। माथा भीतर की ओर दबा हुआ था। सिर पर पतले-पतले खड़े बाल थे। मुख पर होंठ नहीं थे। इस तरह की कुरूप पाशविक आकृति पहले कभी मैंने नहीं देखी।

वे तीनों आपस में बातें कर रहे थे। उसमें वे इतने मशगूल थे कि उन्हें मेरे वहाँ पहुँचने की ख़बर ही नहीं हुई। वे सिर डुलाकर, गर्दन हिलाकर, अद्भुत अंग-भंगी और मुद्रा करके, सुर के साथ कुछ कहने लगे। उनके सब शब्द मैंने स्पष्ट सुन पाये; किन्तु एक अक्षर भी मेरी समझ में नहीं आया। एक अद्भुत भाषा में रेंढ़-रेंढ़कर वे न जाने क्या बार-बार कह रहे थे। अब तक जो बातें कर रहा था, वह एकाएक एक बार चीत्कार कर उठा। इसके बाद सामने की ओर दोनों हाथ फैलाकर वह खड़ा हो गया।

बाक़ी दो आदमी भी उसी की तरह खड़े हो गये और उसके

स्वर में स्वर मिलाकर चीख़ने लगे। गाने के सुर के ताल-ताल पर सभी एक साथ शरीर को हिलाने लगे। मैंने ध्यान देकर देखा, उनके भी दोनों पैर बहुत छोटे-छोटे हैं और दोनों हाथ पतले-पतले और लंबे हैं। घूम-घूम कर, अद्भुत अंगभंगी करके, पैर उठा कर, तीनों जने नाचने लगे। उनके गाने में एक सुर भी जैसे फूट उठा। एक जगह पर एक शब्द भी जैसे मैंने पकड़ पाया। 'आलूला' या 'बालूला' शब्द बार-बार सुन पड़ा। एक अद्भुत आनन्द से उनकी आँखें चमकने लगीं—मुखमण्डल पर भी एक चमक-सी आ गई। होंठ न होने के कारण उनके मुँह के छिद्र से लार बहने लगी।

इस अद्भुत टापू में आने के बाद से जो कई समस्याएँ या प्रश्न मेरे मन में दिखाई दिये थे, इन लोगों की हरकतें देखते-देखते एकाएक जैसे उनका एक ठीक उत्तर मुझे मिल गया। इन प्राणियों को देखकर मेरे मन में एक साथ दो परस्पर-विरोधी भाव जाग उठते थे। जान पड़ता था, वे मेरे सम्पूर्ण अपरिचित हैं; किन्तु उसके बाद ही फिर जान पड़ता था कि वे कितने ही दिनों के परिचित हैं! इन जिन तीन प्राणियों ने मेरे सामने अद्भुत अंगभंगी करके नृत्य-गान किया, वे देखने में मनुष्य के समान हैं; किन्तु हरएक में अन्य किसी परिचित प्राणी की समानता है। मनुष्य की-सी आकृति है, पहनावा-पोशाक है और कुछ-कुछ मनुष्य की प्रकृति रहने पर भी इन तीनों के साथ सूअर का जो दृश्य देख पड़ा, उसे मैं किसी तरह अपने मन से दूर नहीं कर सका।

हतबुद्धि-सा होकर कुछ देर खड़ा रहा। वे तीनों प्राणी उछल-उछलकर गा रहे थे; एकाएक एक प्राणी उछलते-उछलते फिसल पड़ा, तो उसने चौपाये की तरह होकर अपने को सँभाल लिया। इसीसे मेरा सब सन्देह दूर हो गया; किन्तु इसके बदले एक अत्यन्त सांघातिक प्रश्न

मेरे मन में जाग उठा।

मैं चुपचाप वहाँ से लौटने लगा। चलते-चलते पत्तों की खड़क से मैं चौंक उठा—कहीं वे लोग मुझे पकड़ न लें, मुझ पर हमला न कर दें। सिकुड़कर जड़ की तरह एक झाड़ की आड़ में चलने लगा। बहुत-सा आगे चलने के बाद मेरा साहस लौट आया। मैं सहज भाव से चलने लगा।

इस समय मुझे एकमात्र चिन्ता यह थी कि किस उपाय से इन प्राणियों से दूर चला जाऊँ। कुछ दूर जाते ही जंगल में एक पगडंडी मुझे देख पड़ी। उसी से कुछ दूर आगे बढ़ने पर एक छोटी-सी साफ़ जगह देख पड़ी। एकाएक रुककर मैंने देखा, एक झाड़ों के झुरमुट के नीचे की झिरी से दो कुरूप कुत्सित पैर दिखाई दे रहे हैं। मेरे डगों की ताल से ताल मिलाकर वे दोनों पैर भी चुपचाप चलने लगे। हम दोनों के बीच में अधिक से अधिक तीस गज़ का फ़ासला होगा। हम दोनों एक दूसरे के समानान्तर चल रहे थे। उस प्राणी के शरीर का ऊपरी हिस्सा झुरमुटों की आड़ में छिपा हुआ था। उसने शायद मुझे देख नहीं पाया, यह आशा करके मैं एकाएक रुक गया। मैं भय से विह्वल हो उठा। जी चाहा, भाग खड़ा होऊँ। मगर बड़ी मुश्किल से मैंने अपने को सँभाला। लताओं के झुरमुट की फाँक से इतनी देर बाद उस प्राणी के शरीर का ऊपरी हिस्सा देख पड़ा। यही जीव नदी में पानी पी रहा था। एक पेड़ की छाँह में वह खड़ा था। मेरी ओर जैसे उसने मुँह फेरा, वैसे ही मेरी आँखें उसकी आँखों से मिल गईं। उसकी आँखों से एक नीले रंग की आभा निकल रही थी। पल भर वह चुपचाप खड़ा रहा, इसके बाद चुपचाप तेज़ी से पैर बढ़ाता हुआ वह जंगल की हरियाली में अदृश्य हो गया। आँखों से उसके ओझल होने पर भी मुझे जान पड़ा, वह मुझे ताक

रहा है ।

वह क्या है ? मनुष्य है या कोई पशु ? मेरे साथ वह कैसा सलूक करना चाहता है ? मेरे पास कोई शस्त्र नहीं है, एक लाठी या छड़ी तक नहीं है । अतएव उसके साथ लड़ाई ठानना या उससे भिड़ना पागलपन के सिवा और कुछ नहीं है । भरोसा केवल इतना ही है कि वह मुझ पर हमला करने की हिम्मत नहीं कर पहा है । मैं साहस पर भरोसा करके दाँत से दाँत दबाये उस की ओर आगे बढ़ गया । डर के मारे मेरी रीढ़ के भीतर तक कंप हो रहा था, मगर यह बात उसे किसी तरह मालूम न होने दूँगा, यह मैंने अपने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया । कुछ लम्बे-लम्बे पेड़ों के झुरमुट को नांघकर मैंने और एक बार उसकी ओर ताका । लगभग बीस गज़ के फ़ासले से वह मुझे ताक रहा था । जान पड़ा, वह यह ठीक नहीं कर पा रहा है कि क्या करे । एकटक उसकी ओर ताकता हुआ मैं और भी दो पग आगे बढ़ा । पूछा—तुम कौन हो ? उसने जैसे मेरी आँखों की ओर ताकने की चेष्टा की; एकाएक बोल उठा—"ना !" "ना" कहकर ही मुँह फेरकर उछलता हुआ वह लतापत्तों की आड़ में चला गया । वहाँ से मुँह बढ़ाकर मुझे ताकने लगा । गोधूलि की बेला हो गई थी । उसी झुटपुटे में घने पेड़-पत्तों की आड़ में उसकी आँखों से एक ज्योति सी छिटकने लगी ।

मेरा बुरा हाल हो गया । बढ़े हुए खौफ से मेरे प्राण होठों पर आ गये । लेकिन डरने से तो काम नहीं चलेगा । मेरे लिए अब एकमात्र उपाय यही है कि साहस पर भरोसा करके उसके सामने पहुँचकर उसे घबरा दूँ । किन्तु आगे बढ़ते ही घने हो रहे अन्धकार के भीतर वह ग़ायब हो गया । उस अन्धकार को भेद कर और एक बार उसकी आँखों की ज्योति फूट उठी । इसके बाद फिर मैंने उसे नहीं पाया ।

इतनी देर में मुझे ख़याल हुआ कि यहां इस अँधेरे में ठहरना

ख़तरे से ख़ाली नहीं है। सूर्य अस्त हुए अभी थोड़ी ही देर हुई; किन्तु इसी बीच उस जंगल में पत्तों के घने झुरमुट के कारण अन्धकार घना हो आया। एक निशाचर पतंगा मेरे सिर के ऊपर चुपचाप चक्कर काटने लगा। इस विपत्तियों से भरे हुए अज्ञात अपरिचित वन में अगर मैं रात बिताना नहीं चाहता, तो मुझे अभी उस चबूतरे की चहारदीवारी के भीतर प्रवेश करना होगा।

फिर वही कोठरी, फिर वही पूमा का आर्त्तनाद! सोचने और चिन्ता करने से लौटने का उत्साह घट जाता है; किन्तु उपाय क्या है? इस निर्जन वन में विभीषिकामय अन्धकार के निकट अपने को सौंप देने से तो वह कोठरी और पूमा का आर्त्तनाद सहन करना भी सौगुना अच्छा है। जिस झुरमुट की आड़ में वह कुरूप जीव ग़ायब हो गया था, उधर और एक बार नज़र डालकर उसी ढालू रास्ते से होकर नदी की ओर बढ़ चला। जिस राह से आया हूँ, उसी राह से लौट जाऊँगा।

तेज़ी से चलते-चलते इधर-उधर बिखरे हुए पेड़ों-पौधों के बीच एक समतल स्थान में पहुँचा। सूर्यास्त के बाद भी जो धुँधला प्रकाश आकाश में कुछ देर तक रहता है, वह भी धीरे-धीरे अन्धकार में डूबता जा रहा है। नीला आकाश क्षण भर में और भी गहरा नीला हो उठा। उसी निकटवर्ती अन्धकार के पर्दे को भेद कर एक-एक करके तारे निकलने लगे। पास-पास खड़े हुए पेड़ों के अवकाश से जो अँधेरा अब तक झाँक-सा रहा था, उसने अब सुयोग पाकर सारे वन को छा लिया।

हम दोनो ही—मैं और वह जीव—आगे बढ़ने लगे। अन्धकार ने सारी पृथ्वी को अपनी गोद में छिपा लिया। उज्ज्वल नील आकाश की पृष्ठभूमि में वृक्षों की चोटियाँ स्याही की रेखाओं के समान जान पड़ने लगीं। उन रेखाओं के नीचे सभी कुछ अँधेरे से ढका

हुआ था। मैं चलने लगा। क्रमशः जंगल कम चौड़ा रह गया; घास फूस घनी मिलने लगी। कुछ देर बाद बालू-भरे एक निर्जन स्थान में पहुँच गया। उसे नाँघने के बाद और थोड़ी-सी ऐसी जगह थी, जहाँ छोटे वृक्षों का घना झुरमुट था।

इसी समय मेरे दाहनी ओर कोई चीज़ खसखस शब्द कर उठी। पहले मैंने सोचा, शायद यह मेरा भ्रम है; क्योंकि जब मैं चलते-चलते थम गया था, तब वृक्षों की चोटियों पर हवा की सरसराहट के सिवा और किसी तरह का कोई शब्द मुझे नहीं सुनाई पड़ा था। फिर चलने लगा। जान पड़ा, मेरे पैरों की आहट तक उस सुनसान में प्रतिध्वनि कर रही है।

जंगल का रास्ता छोड़कर अपेक्षाकृत छोटे और पतले झाड़-झंखाड़ों के बीच चलने लगा। रह-रहकर दाहनी ओर घूम-घूमकर देखता जाता था। मतलब यह था कि अगर वह प्राणी मेरा पीछा कर ही रहा होगा, तो सहसा उसे घबरा दूँगा; लेकिन कोई मुझे नहीं देख पड़ा। पर, तो भी जान पड़ने लगा कि जैसे कोई एक प्राणी इधर-उधर कहीं छिपा हुआ है। मैंने अपनी चाल कुछ और तेज़ कर दी। कुछ देर बाद एक छोटा-सा टीला नाँघकर जब आगे बढ़ा, तब जान पड़ा, जैसे एक काली छाया ने और एक काली छाया को ऊपर उछलकर छाप लिया। भय के मारे मेरे हाथ-पैर जैसे बेकार हो गये। मैं कान लगाकर सुनने लगा; लेकिन अपने हृदय की धड़कन के सिवा और कोई भी शब्द नहीं सुन पड़ा। तो शायद यह मेरे ही मनका भ्रम था? साहस बटोरकर फिर समुद्र के शब्द को लक्ष्य करके दौड़ने लगा।

कोई मिनट भर इस तरह दौड़ने के बाद एक नीची-सी जगह पर जा पहुँचा। सामने ही समुद्र का जल था। शान्त सन्नाटे की रात में स्थिर समुद्र के जल पर प्रतिफलित होकर तारे काँप रहे थे। कुछ

दूर पर झिनकी की असमतल पर्वत-श्रेणी के ऊपर समुद्र की लहरें टकरा-टकराकर, पछाड़ खा-खाकर एक म्लान ज्योति बिखेर रही थीं। पश्चिम ओर के आकाश में वृश्चिक राशि का प्रकाश संध्या-तारा की उज्ज्वल पीले रंग की चमक के साथ मिल गया था। मेरे पूर्व ओर समुद्र और पश्चिम ओर अन्तरीप (Cape) है। सहसा याद आगया कि समुद्र के किनारे होकर पश्चिम ओर जाने पर 'मोरो की कुटी' मिलेगी।

थोड़ी दूर आगे बढ़ते ही एकाएक एक छोटे-से ठूँठ की ठोकर खाकर मैं गिरने को हुआ, किन्तु सँभल गया। पीछे फिरकर आस-पास की झाड़ियों की ओर मैंने देखा। वहाँ अन्धकारपूर्ण छोटे-छोटे वृक्षों के सिवा और कुछ भी नहीं दिखाई दिया। मगर फिर भी जान पड़ा, प्रत्येक अन्धकार का ढेर जैसे हमले के लिए ताक लगाये मेरी ओर घूर रहा है। लगभग एक मिनट तक स्थिर भाव से खड़े रहकर मैं पश्चिम की ओर आगे बढ़ने लगा। तब भी मेरी दृष्टि उन घने अन्धकार का ढेर बने हुए झाड़-झंखाड़ों (Bush) के ऊपर लगी हुई थी। और कुछ दूर जाते ही जान पड़ा, वह घनी छाया भी जैसे हिली और मेरे पीछे चली।

मेरी छाती धड़कने लगी, जैसे कोई वहाँ हथौड़ा चला रहा हो। पश्चिम की ओर ताकते ही सहसा उपसागर (नाला-सा, जहाँ लंच ठहरा था) देख पड़ा। फिर रुक गया। साथ ही साथ वह अन्धकार भी लगभग दस-बारह गज़ के फ़ासले पर ठहर गया। किनारा जहाँ पर घूम गया था, वहाँ से लगभग दो मील की दूरी पर एक टिमटिमाती रोशनी दिखाई पड़ती थी। तारों के प्रकाश में धूसर बालुकामय तट अस्पष्ट दिखाई दे रहा था। समुद्र के किनारे पर पहुँचने के लिए कुछ वृक्षों और एक झाड़ों के झुरमुट को पार करना होगा।

पीछे फिरकर और एक बार उस छाया की ओर मैंने ताका। अब की वह जैसे और भी स्पष्ट देख पड़ी। समझ गया, यह कोई पशु नहीं है ; कारण, दोनों पैरों पर यह सीधा खड़ा था। रुँधे हुए स्वर से मैं चीख उठा—"वहाँ पर कौन है ?" कोई उत्तर नहीं मिला। मैं एक पग आगे बढ़ गया, लेकिन तो भी वह नहीं हिला। सख्त और सीधा होकर खड़ा रहा। इसी समय एक पत्थर की ठोकर लगी।

एकाएक एक उपाय सूझा। उस काली छाया-मूर्ति की ओर पलक झपकाये विना देखते रहकर मैंने वह पत्थर का टुकड़ा, जिसकी ठोकर लगी थी, हाथ में उठा लिया। मुझे ऐसा करते देखकर वह फौरन् घूमकर खड़ा हो गया। उसके बाद घने अँधेरे में दूर हट गया। एक लड़कपन की कसरत याद आ गई। बड़े-बड़े कुत्तों को धमकाने के लिए यह कौशल बहुत काम आता था। एक रूमाल में वह पत्थर बाँधकर उसे लक्ष्य करके खींच मारने का भाव मैंने दिखाया। साथ ही साथ तेजी से उसके भागने का शब्द सुन पड़ा। प्रबल उत्तेजना के कारण अब मैं अपने को सँभाल नहीं सका, थर-थर काँपने लगा। सारे शरीर से पसीना निकल रहा था। शत्रु दूर भाग गया था ; लेकिन कपड़े में बँधा वह पत्थर का टुकड़ा अभी तक मेरे हाथ में था।

मन में साहस बटोरने में कुछ देर लगी। उसके बाद समुद्र का किनारा ताककर, झाड़-झंखाड़ घास-फूस को लाँघता-चीरता मैं दौड़ने लगा। तट की बालू के ऊपर आने पर जान पड़ा, जैसे कोई प्राणी आँधी की तरह वेग से मेरी ओर दौड़ा आ रहा है।

अब मैं अपना दिमाग सही नहीं रख सका। बालू के ऊपर जान लेकर भागा। साथ ही साथ पीछे की वह मूर्ति भी और तेज़ी से पीछा करने लगी। बहुत जोर से चीखकर मैं चौगुने वेग से भागने लगा। मैंने देखा, अस्पष्ट काली-काली कई एक छाया-मूर्तियाँ उछलती-कूदती उसी

छोटे पेड़-पौधों के झुरमुट की ओर दौड़ गईं। उन में से हरएक खरगोश के आकार से तीन-चार गुनी बड़ी होगी! ओह, इस समय का आतंक मुझे जिंदगी भर न भूलेगा! मैं सामने के जल को लक्ष्य करके दौड़ने लगा; लेकिन तो भी उस छाया ने मेरा पीछा करना नहीं छोड़ा। पीले रंग का प्रकाश दिखाई दे रहा था; लेकिन वह अब भी दूर—बहुत दूर था। सन्नाटे की अँधेरी रात थी। मेरे पीछे सुनाई देनेवाली पैरों की आहट धीरे-धीरे मेरे पास आने लगी—हम दोनों के बीच का फासला क्रमशः घटता जा रहा था। अनजानी जगह में, इस घनी अँधेरी रात में, इस तरह इतना दौड़ना! मेरा दम फूल गया। बहुत ही कष्ट हो रहा है। समझ गया, चबूतरे तक पहुँचने के पहले ही शत्रु के चंगुल में पड़ जाऊँगा। तब मैं जान पर खेलकर घूमकर खड़ा हो गया। सारी शक्ति को बटोरकर जोर से वह पत्थर मैंने खींच मारा।

वह काली मूर्त्ति चारों पैरों से दौड़कर मेरा पीछा कर रही थी। मेरे घूमते ही वह मनुष्य की तरह दो पैरों से सीधी खड़ी हो गई। मेरा मारा हुआ पत्थर का टुकड़ा धायँ से उसकी बाईं कनपटी में लगा। चोट खाने से पागल-सा होकर, अन्धे की तरह दौड़ते हुए आकर उसने दोनों हाथों से मुझे ढकेल दिया और उसके बाद समुद्र के जल में मुँह डालकर निस्तब्ध-सा पड़ा रहा।

साहस करके फिर मैं उसकी ओर नहीं बढ़ा। सन्नाटे की रात थी, आकाश में तारे चमक रहे थे, चारों ओर जल छल-छल कर रहा था। उस जीव से अपने को यथेष्ट दूर रखकर, उस पीले प्रकाश को लक्ष्य करके चलने लगा। इसी समय फिर पूमा का कातर आर्त्तनाद सुन पड़ा—स्वस्ति की साँस मैंने ली ...ान बच गई! जिस चीखने को बर्दाश्त न कर पाने के कारण कोठरी से निकलना और इस विपत्ति में पड़ना पड़ा, उसी पूमा के मर्मभेदी क्रंदन को सुनकर इस समय मेरे जान

में जान आई—मैं आश्वस्त हुआ। समझ गया, मैं अपने डेरे पर आ पहुँचा हूँ। सारी शक्ति बटोरकर फिर दौड़ना शुरू कर दिया। जान पड़ा, जैसे कोई नाम लेकर मुझे पुकार रहा है।

१०

मनुष्य का आर्त्तनाद

पास जाते ही देखा, मेरी ही कोठरी के खुले दर्वाज़े से रोशनी आ रही है। दूर पर अन्धकार को चीर कर मांटगोमरी का चिल्लाना सुन पड़ा— मेरा नाम लेकर पुकार रहे थे। उस समय भी मैं दौड़ता आ रहा था। फिर उनका पुकारना सुन पड़ा—"मि० प्रेन्डिक !" दौड़ते-दौड़ते क्षीण स्वर से मैंने उत्तर दिया—"मैं यहाँ हूँ !" इसके बाद ही मैं उनके पास पहुँच गया।

"कहाँ थे अबतक ? दिन भर काम में लगे रहने के कारण मैं आपकी खबर नहीं ले सका। अभी आध घंटा पहले मुझे आपका ख़याल आया। तभी से आपको खोज रहा हूँ।"— मांटगोमरी ने कहा।

फिर कोठरी में ले जाकर मुझे डेक-चेयर पर बिठाया। एकाएक इतनी रोशनी में आकर मेरी आँखें चौंधिया गईं थीं।

मांटगोमरी कहने लगे—हम लोग सोच भी नहीं सके थे कि

आप हम लोगों से कहे बिना सारे टापू में घूमते फिरेंगे। मैं तो डर गया था—लेकिन यह क्या ! बात क्या है, कहिए तो ?

मेरी हालत देखकर मांटगोमरी चौंक उठे।

मुझ में जो कुछ शक्ति बची थी, वह भी इतनी देर में ख़तम हो गई थी। मेरा सिर छाती पर लटक गया था। मुझे ब्रांडी पिलाने का यह अच्छा मौका मांटगोमरी ने हाथ से नहीं जाने दिया। मैं कह उठा—यह दरवाज़ा बंद कर दीजिए।

"हमारे टापू के किसी अद्भुत निवासी के हाथ आप निश्चय ही पड़ गये थे, क्यों न ?" कहकर ही उन्होंने उठकर दरवाजा बन्द कर दिया और मुझे ब्रांडी में कुछ पानी मिलाकर पीने को दिया। मेरी हालत उस समय बहुत ख़राब हो रही थी। मांटगोमरी ने अस्पष्ट भाव से कुछ कहा। शायद यह कि मुझे सावधान करने को वह भूल गये थे। छोटे-छोटे टूटे-फूटे शब्दों में मैंने उनके प्रश्न का उत्तर दिया।

मैं अन्त में उच्छ्वसित स्वर में कह उठा—बताइए मुझे, इस सब का मतलब क्या है ?

उन्होंने कहा—यह वैसा कुछ भयानक मामला नहीं है। लेकिन रहने दो, आज नहीं कहूँगा। एक दिन जितना आप बर्दाश्त कर सकते हैं, उसकी दृष्टि से इतनी जानकारी काफ़ी है। कल सब कहूँगा।

एकाएक दारुण यंत्रणा से वही पूमा विकट आर्तनाद कर उठा। असीम खीझ से मांटगोमरी न जाने कौन एक शपथ कर बैठे।

मैंने पूछा—मेरा पीछा किसने किया था मि० मांटगोमरी ? वह मनुष्य है, या कोई जानवर ?

मांटगोमरी ने कहा—आपको इस समय सोने की ज़रूरत है। अब भी अगर आप सो न जायँगे, तो कल पागल हो जायँगे।

सीधे होकर, उनके सामने खड़े होकर, दृढ़ स्वर में मैंने कहा—

जल्दी बताइए, किसने मेरा पीछा किया था ?

निष्प्रभ दृष्टि से मेरी ओर ताककर मांटगोमरी ने एक तरह का मुँह बनाया। घड़ी भर पहले ही उनकी आँखों में जो चमक दिखाई दी थी, वह जैसे बुझ गई। बोले—आपकी बातें सुनकर जान पड़ता है, एक 'बोगल' (जंगली खूनी जानवर) ने आपका पीछा किया था।

मेरा सारा शरीर रोमांचित हो उठा। क्षण भर में ही यह भाव दूर हो जाने पर मैं सिर पर हाथ रखकर बैठ गया। पूमा फिर चीख उठा।

मांटगोमरी कोठरी में टहलते-टहलते मेरे पास आये और मेरे कंधे पर हाथ रखकर बोले—मि० प्रेन्डिक, हमारा यह उद्देश्य कभी नहीं था कि हम अपने इस अद्भुत टापू में आपको इस तरह घूमने-फिरने का मौका दें। लेकिन आप के इतना डरने की कोई बात नहीं है। अभी तक आपकी स्वाभाविक अवस्था नहीं लौटी। मैं आपको नींद की एक दवा देता हूँ, उसे खाकर सो जाइए। इसके असर से कई घंटे तक आपको अच्छी नींद आवेगी। बस,अब कुछ न बोलिए, जाकर सो रहिए। नहीं तो मैं आपकी किसी बात का जवाब न दूँगा।

मैंने फिर कुछ भी उत्तर नहीं दिया। सामने झुककर दोनों हाथों से मुँह ढक लिया। कोई दवा लाकर उन्होंने मुझे खाने के लिए दी। उसे चुपचाप मैंने खा लिया।

दूसरे दिन जब नींद खुली, तब दिन चढ़ आया था। चित होकर कुछ देर तक कोठरी की छत को ताकता रहा। देखा, छत की धन्नियाँ और आँवें जहाज की लकड़ी की हैं। करवट लेते ही देखा, खाने के लिए रक्खा है। बड़ी भूख लगी थी ; चटपट खाट से उतरने लगा तो कमज़ोरी के कारण धड़ाम से गिर पड़ा। खैर, भोजन करने बैठ गया। सिर भारी-भारी लग रहा था। पहले दिन की घटनाओं में से बहुत थोड़ी ही पहले

याद आई। खुली हुई खिड़की से झर-झर करके सुहावनी हवा आ रही थी और सामने भोजन रक्खा था। बहुत अच्छा मालूम हुआ। मेरे पीछे भीतर जाने का दरवाज़ा था। वह खुल गया। घूमकर देखा, मांटगोमरी थे। "सब ठीक तो है? ख़ूब! आप बहुत व्यस्त देख पड़ते हैं इस समय", कहकर ही उन्होंने वह दरवाज़ा बंद कर दिया। तब मैं नहीं जानता था कि वह दरवाज़े में ताला लगाना भूल गये हैं।

धीरे-धीरे रात की सब घटनाएँ मुझे याद आगईं। उनकी याद से ही आतंक के मारे मैं काँप उठा। इसी समय भीतर से एक आर्तनाद सुन पड़ा। लेकिन यह पूमा की चीख़ नहीं थी। मुँह का कौर मुँह में ही रह गया। कान खड़े करके सुनने लगा। लेकिन हवा के शब्द के सिवा और कुछ भी नहीं सुन पड़ा। तो क्या मैंने ग़लत सुना? बहुत देर तक चुप रहने के बाद फिर खाना शुरू किया। सहसा एक क्षीण अस्पष्ट शब्द सुनाई दिया। पत्थर की तरह सन्न होकर बैठा रहा। गत रात्रि की विभीषिका से मैं जरूर बहुत डर गया था; लेकिन इस क्षीण अस्पष्ट शब्द को सुनकर मेरा सारा शरीर ठंडा पड़ गया। वह शब्द किसका था, यह इतनी देर में मेरी समझ में स्पष्ट आगया। कोई जैसे फफक-फफककर रो रहा है। वह हृदय-विदारक आर्तनाद को बड़े कष्ट से दबाकर बार-बार फूल-फूल उठता है। यह किसी पशु का आर्तनाद नहीं है! कोई मनुष्य जैसे असह्य यातना से आर्तनाद करता हुआ रह-रह कर फफक उठता है।

यह समझ में आते ही मैंने फौरन् जाकर दरवाज़े का हेन्डिल पकड़कर उसे खोल दिया।

"ठहरिए, ठहरिए मि० प्रेन्डिक, इधर न आइएगा" कहते-कहते घबराये हुए मांटगोमरी मेरी ओर दौड़ पड़े। एक डियर हाउंड (कुत्ता) उछलकर आर्तनाद कर उठा। मैंने देखा, एक बर्तन खून से भरा रक्खा

है। खून बहुत कुछ सुर्ख़ी लिए ब्राउन रंग का है। 'कार्बोलिक' एसिड की गंध चारो ओर फैली हुई है। धीमी हल्की रोशनी में देखा, कुछ दूर पर एक खुला दरवाज़ा है; उसके ऊपर लकड़ी के फ्रेम में लाल रंग की कोई चीज़ मज़बूती से कस कर बाँधी हुई है—उसके सारे अंगों में आघात के चिन्ह हैं, और बैंडेज बँधे हैं। उसे आड़ में करके डॉ० मोरो तनकर सीधे खड़े हो गये। न दबाये जा सकनेवाले क्रोध से उनका मुँह सफेद पड़ गया है, जैसे उसमें एक बूँद भी रक्त न रह गया हो। लेकिन भर में ही खून से रँगे हाथों से मेरी गर्दन पकड़कर उन्होंने मुझे पीछे ढकेल दिया। मैं चित गिर पड़ा। इसके बाद उन्होंने अपनी बलिष्ठ भुजाओं से बच्चे की तरह मुझे ऊपर उठाकर मेरी कोठरी में फेंक दिया। साथही दरवाज़ा बन्द करने और चाभी घुमाने का शब्द सुन पड़ा। उन्हें शान्त करने के लिए मांटगोमरी ने जैसे कुछ कहा। उसके उत्तर में डॉ० मोरो ने कहा—ओह, क्षण भर की असावधानता से सारे जीवन की साधना नष्ट होगई थी।

"वह ठीक समझता नहीं," मांटगोमरी ने कहा। और भी न जाने क्या सब उन्होंने कहा, कुछ समझ में नही आया।

"ना, वह समय अभी नहीं आया," डा० मोरो ने कहा।

इसके बाद दोनों में कुछ बातें हुईं, जिन्हें मैं नहीं सुन पाया। सीधा होकर उठ खड़ा हुआ। भय से सारा शरीर काँप रहा था। भया॰ वह दुर्निवार एक सन्देह मन में जाग उठा—तो क्या जीवित मनुष्य-देह का व्यवच्छेद (चीरफाड़) भी संभव है? तूफ़ान से क्षुब्ध अंधकारपूर्ण आकाश में बिजली की लकीर की तरह यह प्रश्न मन के भीतर चमक उठा। मन में घनी हो रही विभीषिका ने एकाएक निकटवर्ती विपत्ति का पूर्वाभास सूचित किया।

११

मनुष्य का शिकार

अपनी कोठरी का दर्वाज़ा खुला देखकर मन में आया कि यहाँ से छुटकारा पाने का यही अच्छा मौक़ा है। इस बारे में मुझे तनिक भी सन्देह नहीं रहा कि मोरो ने एक मनुष्य के शरीर की ही चीरफाड़ की है। एक जीवका रक्त दूसरे शरीर में पहुँचाने के बारे में उन्होंने कभी एक लेख लिखा था, यह भी इसी के साथ याद आ गया। मोरो का नाम जब से सुन पड़ा, तभी से मैं उनके इस अमानुषिक दुष्टकृत्य के साथ द्वीपवासी प्राणियों की वीभत्स आकृति का कार्य-कारण-सूत्र खोजने की चेष्टा में था। इतने समय के बाद सारा मामला मेरी आँखों के सामने स्पष्ट हो उठा। तो ये बदनसीब प्राणी, मोरो की निर्मम परीक्षा की ही अपूर्व सृष्टि हैं!

तो ये दोनों शैतान मिथ्या आश्वासन देकर मुझे यहाँ धोखा देकर ले आये हैं? शायद अभी मेरे ऊपर ही उनकी यह निर्मम परीक्षा शुरू हो जायगी। ओह, इससे तो मृत्यु ही सौगुनी अच्छी है! मनुष्य

के लिए जिस अत्यन्त वीभत्स, अत्यन्त विकृत आकृति की कल्पना संभव है, वही मेरे लिए अपेक्षा कर रही है। असह्य यंत्रणा देने के बाद ये मुझे वही कुत्सित कलेवर देंगे। उसके बाद मुझे इस टापू के अन्यान्य प्राणियों के बीच खेद देंगे। मैं पशु बन जाऊँगा और उसी के साथ मेरी आत्मा भी मरकर बदल जायगी। एक हथियार अपनी रक्षा के लिए चाहिए। चारों ओर खोजने लगा। एकाएक एक उपाय मुझे सूझा। डेक-चेयर को उल्टाकर उसका एक डंडा मैंने निकाल लिया। उसके साथ एक कील भी उसमें लगी हुई उखड़ आई। कील लगी रहने के कारण यही हथियार मनुष्य के लिए घातक बन गया।.........एकाएक पैरों की आहट सुनाई दी। चट से दरवाज़ा खोलते ही देखा, मांटगोमरी मुझसे लगभग एक गज़ के फ़ासले पर खड़े हैं, दरवाज़े में चाभी लगाने आये हैं। डंडा तानकर जिधर कील थी, उधर से मैंने उनके मुँह पर ताककर भर ज़ोर प्रहार किया। लेकिन मांटगोमरी फुर्ती से हट गये, जिससे इस बार उनके प्राण बच गये। क्षण भर इधर-उधर करके उसी समय मैं दौड़कर कोठरी से बाहर निकल गया।

"प्रेन्डिक ! प्रेन्डिक ! उजबक की तरह आप यह क्या कर रहे हैं ? सुनिए—सुनिए !"—मांटगोमरी विस्मय के साथ चीख़ उठे।

ओह ! और क्षणभर की देर होती तो बस, फँस जाता ; और क्या ? ज़रूर मुझे पकड़ लेते, उसके बाद काट-कूटकर अस्पताल के खरगोश की तरह ही मेरी हालत करके छोड़ते। मेरा नाम लेकर चिल्लाते हुए मांटगोमरी मेरे पीछे दौड़ने लगे।

उत्तर-पूर्व की ओर लक्ष्य करके अन्धे की तरह मैं दौड़ने लगा। कल रात को जिधर गया था, उधर अब न जाऊँगा। दौड़ते-दौड़ते पीछे ताककर देखा, मांटगोमरी के पीछे-पीछे उनका वह नौकर भी मेरी ओर दौड़ा चला आ रहा है। पागल की तरह ऊपर की ओर दौड़कर

चढ़ने लगा। लगभग एक मील इस तरह दौड़ने के बाद मैं थक गया। विश्राम के लिए कुछ देर खड़ा रहा। मांटगोमरी या उनके नौकर का कोई पता न था। उनका शब्द भी नहीं सुनाई देता था। फिर दूने वेग से समुद्र की ओर मैं भागा। पागल की तरह दौड़ते-दौड़ते सामने के टीले पर पहुँचा। उसके बाद उसे पार होकर पूर्व ओर घूमकर एक पत्थरों की उपत्यका (Valley) के ऊपर उपस्थित हुआ। उसके दोनों ओर घना जंगल था। बहुत थककर बेदम हो चुका था—हृदय की तीव्र धड़कन मुझे स्पष्ट सुनाई दे रही थी। मांटगोमरी अथवा उनके सेवक की कोई आहट न पाकर, आश्वस्त होकर, एक बेत के झाड़ की छाया में थकावट के मारे लेट रहा।

बहुत देर तक वहीं पड़ा रहा। हिलना-डुलना तो दूर रहा, इस समय यह भी सोचने-विचारने का साहस नहीं होता था कि मुझे अब क्या करना और किधर जाना चाहिए। जंगली 'प्रकृति' मुझे घेरे धूप में चुपचाप नींद का मज़ा ले रही है। कहीं कोई शब्द या खटका नहीं है। केवल कई एक छोटे डाँसों (मच्छरों) ने मुझे खोज निकाला है और मेरे ऊपर भनभन करके उड़ रहे हैं। सोये हुए प्राणी के श्वास-प्रश्वास लेने के समान शब्द करती हुई समुद्र की लहरें किनारे की ज़मीन पर आकर टकराती और पछाड़ खा रही हैं।

इसी तरह लगभग एक घण्टे तक मैं सोता रहा। इसी समय मांटगोमरी वगैरह की आवाज़ सुनाई दी—वे मेरा नाम लेकर, चिल्लाकर मुझे पुकार रहे थे। अब तो निश्चिन्त होकर बैठे रहा नहीं जा सकता। क्या किया जाय? इस द्वीप में केवल मांटगोमरी, डॉ० मोरो और उनकी सृष्टि, कुछ विकल अंगवाले मनुष्य हैं। मोरो और मांटगोमरी चाहें तो अनायास ही अपनी सृष्टि के इन पशुतुल्य विकलांग मनुष्यों को मेरे विरुद्ध खड़ा कर सकते हैं, मेरे ऊपर छोड़ सकते हैं। इसके सिवा

मोरो और मांटगोमरी, दोनों के पास रिवाल्वर हैं और मेरा सहारा है केवल यह मामूली लकड़ी का डण्डा।

उसी तरह सन्नाटे में पड़े-पड़े भूख-प्यास का ख़याल आया तो मैं चौंक पड़ा। इतनी देर बाद मेरी समझ में आया कि मेरी दशा कितनी शोचनीय, कितनी असहाय है। भोजन प्राप्त करने का कोई उपाय समझ में न आया। मेरे चारों ओर सैकड़ों पेड़-पौधे हैं; लेकिन उनमें से किसका फल या कंदमूल खाने लायक है या खाकर भूख मिट सकती है, यह मेरा जाना नहीं था; क्योंकि वनस्पति-शास्त्र या उद्भिज-विद्या के संबंध में मुझे इतना भी ज्ञान नहीं था। टापू में कुछ खरगोश जरूर हैं, लेकिन उन्हें किस तरह पकड़ूँगा? जितना सोचता हूँ, उतना ही हताश होना पड़ता है।

इसी समय एकाएक एक स्टग-हाउंड के भूँकने का शब्द सुन पड़ा। नई विपत्ति की आशंका के साथ-साथ समुद्र के शब्द को लक्ष्य करके साँस रोककर मैं भागा। मन को स्थिर करने में एक क्षण की देर करने से भी वे लोग मुझे पकड़ लेते। राह के काँटों से मेरा शरीर घायल हो गया, पोशाक कट-फट गई; लेकिन उधर ध्यान देने का अवकाश नहीं था। कुछ भी हिचकिचाहट न करके सामने की छोटी नदी पार होकर पश्चिम किनारे पर एक फर्न वृक्ष के झुरमुट की आड़ में जाकर खड़ा हुआ। इसी समय फिर किसी कुत्ते का भूँकना सुन पड़ा। इसके बाद फिर सन्नाटा। तो जान पड़ता है, शायद विपत्ति टल गई! एक मिनिट, दो मिनिट, इसी तरह चुपचाप समय बीतने लगा। घन्टे भर के लगभग मैं यों ही वहाँ खड़ा रहा। इसके बाद फिर मेरा साहस लौट आया। अब मुझे अपने तईं असहाय नहीं मालूम पड़ता। जान पड़ता है, भय और निराशा की सीमा मैं पार कर आया हूँ। मैं समझ गया, बचने का कोई उपाय नहीं; मृत्यु निश्चित है। यह ख़याल मन में

आते ही मेरे मन का बल फिर लौट आया ; मैं जान पर खेलने के लिए तैयार हो गया। जब मरना निश्चित है, तब फिर डर काहे का ? यहाँ तक कि जी चाहा, मोरो ही के सामने चलूँ। यों सोचते-सोचते अनजान में ही समुद्र के जल में उतर पड़ा था। सोचकर देखा, अगर बिलकुल ही कोई बचने की सूरत नजर न आवेगी तो मरकर भी तो इस यंत्रणा के हाथ से छुटकारा पा सकूँगा ! अन्त तक क्या होता है, देख क्यों न लिया जाय। बिलकुल ही लापर्वाही के साथ अपने भाग्य का फलाफल जानने के लिए मेरा मन कौतुहली हो उठा। सारा शरीर काटों से छिदा हुआ था, अंग-अंग में वेदना हो रही थी। मैं सारा शरीर पानी में डालकर किनारे के पेड़ों की ओर ताकने लगा। एकाएक मुझे उधर एक काले-काले चेहरे की झलक देख पड़ी। वह मुख मुझे ही लक्ष्य कर रहा था।

हम लोग जब टापू में आये थे, तब यही प्राणी किनारे पर खड़ा था, यह बात एक झलक देखकर ही मैंने जान ली। वह एक पाम-वृक्ष के एक ओर झुके हुए तने को पकड़े झूल रहा था। मैं अपना डंडा तानकर उसके सामने पहुँचा कि किचिर-मिचिर करके वह कुछ कह उठा। उसका केवल एक शब्द मेरी समझ में आया—"तुम—तुम—तुम" ! एकाएक वह उस पेड़ पर से फाँद पड़ा ; इसके बाद झाड़ी के भीतर घुस गया और पत्तों की फाँक से कौतूहल-पूर्ण दृष्टि से मुझे लक्ष्य करने लगा।

और प्राणियों को देखकर मेरे मन में जो घृणा का भाव जग उठा था, वह इसे देखकर नहीं हुआ। उसने कहा—"तुम नाव पर थे।"

खैर, तो यह एक मनुष्य है ; कम से कम मांटगोमरी के उस सेवक जैसा। कारण, यह बात कर सकता है।

मैंने कहा—हाँ, मैं नाव पर आया था, जहाज पर से।

"यो !" वह कह उठा। उज्ज्वल आँखों की जलती हुई दृष्टि

से वह मेरे शरीर को नीचे से ऊपर तक देखने लगा—मेरा हाथ, वह लकड़ी का टुकड़ा, कोट की वह फटी हुई जगत और काँटों से छिदे हुए अंग-प्रत्यंग। किन्तु जैसे कोई चीज़ देखकर वह घबरा गया। उसकी नज़र सब तरफ घूमकर फिर मेरे हाथ पर जम गई। वह हाथ फैलाकर गिनने लगा—एक, दो, तीन, चार, पाँच—एँ!

उस समय मैं उसकी इस बात का मतलब ठीक नहीं समझ पाया था। इन सभी पशु-मनुष्यों के हाथों में पाँच-पाँच उँगलियाँ नहीं थीं। यहाँ तक कि किसी हाथ में तीन उँगलियाँ भी नहीं थीं। उसने गिनकर देखा, मेरे ठीक पाँच उँगलियाँ हैं। लेकिन उस समय मैंने समझा, शायद यह एक तरह की अभ्यर्थना करने की पद्धति है। उत्तर में मैंने भी वैसा ही किया। देखा, इससे वह बहुत सन्तुष्ट हुआ। मेरी ओर फिर एक बार तीक्ष्ण दृष्टि से ताककर उसी क्षण वह तीन छलाँगें मार-कर झाड़ी की आड़ में चला गया। पत्तियों और डालियों को हटाता हुआ मैं भी उसकी ओर आगे बढ़ा। उस झाड़ी को लाँघते ही मैंने देखा एक बड़े-से पेड़ की मोटी-सी जड़ को पकड़कर, मेरी ओर पीठ किये वह मज़े से झूल रहा था। मैंने पुकारा—सुनो जी।

एकदम उछलकर वह मेरे सामने आकर खड़ा हो गया।

मैंने कहा—सुनो, मुझे भूख लगी है। खाने को कहाँ मिलेगा?

उसने कहा—खाने को? हाँ, आदमी का खाना मिल सकता है।

वह पेड़ की जड़ अभी तक हिल रही थी। उधर एक बार नज़र घुमाकर उसने देखा, फिर कहा—कुटिया में है।

मैंने कुछ अधीर भाव से पूछा—लेकिन कुटिया है कहाँ? जानते ही हो, मैं यहाँ नया आया हूँ।

अब वह घूमकर तेजी से आगे-आगे चलने लगा। बोला—आओ।

मैं उसके साथ जाने लगा। क्या होता है, अन्त देखना चाहिए।

मैं समझा था, उसकी कुटिया में उसी के समान और भी मनुष्य होंगे। उनके साथ मित्रता कर पाऊँ तो उन्हें अपनी मुट्ठी में कर सकूँगा। लेकिन कौन जाने, मनुष्य-जीवन की स्मृति अब भी उनमें कितनी बलवान है।

मेरा साथी बन्दर की तरह उछलता-कूदता हुआ चलने लगा। उसके दोनो हाथ नीचे झूले हुए थे—जबड़ा सामने की ओर कुछ आगे निकला हुआ था।

चलते-चलते मैंने पूछा—तुम कितने दिनों से इस टापू में हो?

उसने उत्तर देने के बदले पलटकर प्रश्न किया—कितने दिनों से?

इसी प्रश्न का और एक बार उच्चारण करके उसने अपनी तीन उँगलियाँ उठाकर दिखाईं। मैंने समझ लिया, इस प्राणी में बुद्धि या समझने की शक्ति बहुत थोड़ी है। मैंने यह समझने की कोशिश की कि वह क्या कह रहा है। देखा, इससे वह खीझ उठा।

और भी दो-एक बातों के बाद वह एकाएक आगे बढ़कर एक छलांग में एक पेड़ से कुछ तोड़ लाया और छिलका अलग करके उन्हें खाने लगा।

खैर, एक खाने की चीज़ का पता तो लगा! मैंने और भी दो-एक प्रश्न किये; लेकिन वह किसी का ठीक-ठीक उत्तर न दे पाया। अधिकतर उसने उसी तरह किचिर-मिचिर करके अस्पष्ट वाणी में मेरे प्रश्न के उत्तर में पलटकर प्रश्न ही किये। वे उसके प्रश्न अधिकांश अर्थहीन ही थे।

मैं उसके इस अद्भुत चालचलन को देखता-देखता चला जा रहा था; किधर किस राह से जा रहा हूँ, इधर कुछ ध्यान ही नहीं था।

कुछ देर बाद एक ऐसी जगह पर जा पहुँचा, जहाँ केवल बड़े-बड़े पेड़ धूप में झुलसे, पीले पड़े हुए थे।

क्षण भर बाद ही एक साफ और खुली जगह देख पड़ी। वह मैदान या समतल स्थान छोटा ही था। उसके ऊपर हल्दी के रंग की कोई चीज़ बिछौने की तरह बिछी हुई थी—बहुत कुछ गंधक जैसी। उसके ऊपर से धुएँ का एक पर्त-सा दौड़ गया। उसकी झाँफ (गंध) कैसी कड़ी और बुरी थी। मेरी नाक और आँखों में धुँआ लगने से जलन पैदा हो गई। दाहिनी ओर एक शिलाखण्ड की आड़ में समुद्र का नीला जल दिखाई दे रहा है।

हमारी पगडंडी एकाएक मुड़कर एक गुफा में जाने की पगडंडी के सामने बन्द हो गई। दोनो ओर मटमैले खाकी रंग का ज्वालामुखी का निकला हुआ पदार्थ ढेर था। उसी के भीतर से गुफा की पगडंडी में प्रवेश करना पड़ता है। हम दोनो ने उसी पगडंडी पर चलना शुरू किया।

तीव्र सूर्य के प्रकाश से यहाँ आने पर दोनों आँखें चौंधिया गई। दोनों ओर वह ज्वालामुखी के लावे की दीवार ऊँची होती हुई सिर से ऊँची हो गई है। हरे और लाल रंग की कोई चीज़ थोड़ी-सी आँखों के आगे दिखाई पड़ी। मेरा पथ-प्रदर्शक प्राणी एकाएक रुककर खड़ा हो गया और बोला—"कुटिया।"

मैंने देखा, जहाँ पर खड़ा हूँ, उसके नीचे एक चौड़ा-सा खड्डा है। उसके भीतर घोर अन्धकार है। कुछ अद्भुत आवाज़ें कान में पहुँची। मैं आँखें फाड़-फाड़ कर इधर-उधर ताकने लगा। एक दुर्गन्ध का भभका आया। बन्दरों के रहने की जगह में जैसी दुर्गंध आती है, बहुत कुछ वैसी ही। दूर पर सूर्य के प्रकाश से चमक रहे ढालू हरे पेड़ पौधों के ऊपर होकर रास्ता चौड़ा हो गया है। सूर्य के प्रकाश की दो धाराएँ तंग पगडंडी के रास्ते होकर आ रही और अन्धकार की छाती पर लोट रही हैं।

१२

आईन जो लोग कहते हैं

एकाएक एक ठंडे स्पर्श से मैं सिहर उठा। चौंककर घूमकर देखा, लाल रंग का एक प्राणी मेरे पास खड़ा है। किसी छोटे लड़के के शरीर से खाल उतार लेने पर वह जैसा दिखाई देगा, यह बहुत कुछ देखने में वैसा ही था। इसके अंग-प्रत्यंग ठीक 'स्वाथ' (अफ्रीकी वानर-जाति) के से ही थे। वैसा ही नीचा माथा और वैसी ही धीमी ठुमुक-चाल। देखते ही देह घिना उठती है। अँधेरा जब कुछ आँखों को सह गया, तब मैंने देखा, वह प्राणी मेरे पास खड़े होकर एकटक मुझे देख रहा है। मेरे साथी का कोई पता नहीं है।

दोनों ओर लाये की ऊँची दीवार है। उसके बीच से होकर एक तंग राह चली गई है। इधर-उधर छोटी-छोटी घास और पौधों के कुसुंटों से उस राह में कुछ-एक छोटी-छोटी कोठरियाँ-सी बन गई हैं। जो टेढ़ी-मेढ़ी राह यहाँ से गुफा की पगडंडी के सिरे तक चली गई है, वह तीन गज से अधिक चौड़ी न होगी। फलों के छिलकों के ढेर और

अन्यान्य कूड़ा-करकट के कारण इस स्थान में इतनी दुर्गन्ध भरी पड़ी है कि बर्दाश्त नहीं होती।

वह छोटा स्लाथ तब भी एकटक मेरी ओर ताक रहा था। वह वानर-मनुष्य (जो मुझे यहाँ ले आया था) अब लौटकर आ गया। पास की एक कोठरी से उसने हाथ का इशारा करके मुझे बुलाया। ठीक इसी समय दानव-जैसा एक प्राणी, स्वाँग की तरह झूमता कहीं से आकर क्रोध की कठोर दृष्टि से मुझे देखने लगा। मैं सिटपिटा गया। एक बार मन में आया कि भीतर आने का रास्ता बन्द कर दूँ। लेकिन नहीं, मेरे इस अभियान का अन्त कहाँ है, फल क्या होता है, यह देखना ही होगा। उस अपने हथियार (अर्थात् कील लगे डंडे) को हाथ में ताने उसी गन्दे तंग रास्ते से मैं अपने उस साथी की ओर घुटनों के बल बढ़ने लगा।

वह जगह अर्धचन्द्र के आकार की थी। बहुत कुछ मधुमक्खी के छत्ते के निचले हिस्से की तरह। लावा और लकड़ी के कई एक पात्र उसमें रक्खे थे। उनमें कुछ फल-मूल और नारियल धरे थे। किन्तु आग कहीं नहीं दिखाई दी। कोठरी के सबसे अधिक अँधेरे कोने में एक घने अंधकार का पिंड-सा देख पड़ा। वह मुझे आगे बढ़ते देखकर चीख उठा—"हेई!" मेरे पथ-प्रदर्शक उस वानर-मानव ने प्रवेश-पथ के पास थोड़े-से उजाले में आकर एक नारियल का खोपड़ा मुझे दिया। भरसक निर्विकार भाव बनाये रखकर मैं दाँतों से उसकी गिरी नोचकर खाने लगा। हालाँकि भय के मारे मेरा सारा शरीर काँप रहा था, अँधेरी तंग गुफा में मेरा दम घुट रहा था। वह छोटा स्लाथ झोपड़ी में घुसने की राह पर खड़ा रहा। मैंने देखा, और एक कुत्सित कदाकार प्राणी की छाया गर्दन घुमाकर ज्वलन्त दृष्टि से मुझे ताकने लगी।

अन्धकार का वह रहस्यमय प्राणी फिर कह उठा—"हेई !"

शायद वह पूछ रहा था कि यह कौन है ?

वानर-मानव कह उठा—यह एक मनुष्य है, यह एक मनुष्य है—मनुष्य, मनुष्य, जीता-जागता मनुष्य, मुझ जैसा !

निविड़ निस्तब्ध अन्धकार से वही प्राणी "चुप रहो !" कहकर सुअर की तरह घोंत्-घोंत् करके गुर्राने लगा। निर्विकार भाव बनाये रखकर पहले ही की तरह मैं गरी चबाने लगा। बहुत चेष्टा करने पर भी उस घने अन्धकार को भेदकर कुछ भी स्पष्ट नहीं दिखाई पड़ा।

अन्धकार के भीतर से फिर सुनाई पड़ा—यह मनुष्य है ? यह क्या हम लोगों के साथ रहेगा !

आवाज़ बहुत ही भद्दी और मोटी थी। सिर्फ यही नहीं, अद्भुत भी थी। फूटे बर्तन के शब्द की तरह खनखनाती हुई ! वानर-मनुष्य ने प्रश्न की दृष्टि से मेरी ओर देखा। वह आशा कर रहा था कि मैं उत्तर में कुछ कहूँगा। मैंने कहा—हाँ, मैं तुम लोगों के साथ रहूँगा।

फिर वही आवाज़ आई—यह एक मनुष्य है। इसे भी आईन सीखना होगा।

उस अन्धकार के भीतर अन्धकार से अधिक काली एक अपाहिज-सी मूर्ति की अस्पष्ट रेखाएँ इतनी देर बाद जैसे दिखाई पड़ीं। और भी मैंने लक्ष्य किया, प्रवेश-मार्ग को रोके, अन्धकार को और भी बढ़ाते हुए और दो प्राणी खड़े हैं। वह डंडा मैंने और भी मजबूती से थाम लिया। अन्धकार के भीतर का वह प्राणी और भी ज़ोर से चिल्ला उठा—कहो......

इसके बाद उसने कुछ कहा, लेकिन मैं ठीक समझ नहीं सका।

वह सुर करके कहने लगा—"चार पैरों से चलना नहीं—यही तो आईन है—हम मनुष्य हैं।"

मैं तो भौचक्का हो गया! वानर-मनुष्य ने कहा—तुम कहो।

और प्राणियों ने भी धमकाने के स्वर में उसी के शब्दों को दोहराया। समझ गया, मुझे भी इन व्यर्थ बातों की आवृत्ति करनी होगी। इसके बाद ही जो कुछ शुरू हुआ, उसे हद दर्जे के प्रलाप के सिवा और क्या कहा जा सकता है?

अन्धकार का वह प्राणी उसी अर्थहीन स्तोत्र का एक-एक चरण सुर करके कहने लगा और हम सब उसकी प्रतिध्वनि करने लगे। इन पंक्तियों का उच्चारण करते-करते सभी झूम-झूमकर घुटनों में हाथ से ताल देते जाते थे। मुझे भी वही करना पड़ा। जान पड़ा, मैं शायद मरकर किसी दूसरी दुनिया में आ पहुँचा हूँ। अँधेरी झोपड़ी है, वहाँ सूर्य की किरणों का प्रकाश थोड़ा-बहुत आ पड़ने से उन विकल अंगवाले प्राणियों का अस्पष्ट आभास मिल रहा है। सभी एक साथ झूम-झूमकर आवृत्ति करने लगे—

"चारों पैरों से चलना नहीं—यही तो आईन है—हम मनुष्य हैं।"

"पानी मुँह डालकर पीना नहीं—यही तो आईन है—हम मनुष्य हैं।"

"मछली-मांस खाना नहीं—यही तो आईन है—हम मनुष्य हैं।"

"पेड़-पौधों को नाखून से खोंटना नहीं—यही तो आईन है—हम मनुष्य हैं"

"मनुष्य पर हमला करना नहीं—यही तो आईन है—हम मनुष्य हैं।"

इसी तरह की और अनेक बातें हम लोग कहते गये—क्या-क्या हम नहीं करेंगे। इससे बढ़कर असंभव, इससे बढ़कर भद्दा, इससे भी बढ़कर पागलपन शायद सारे संसार में और न होगा!

इस अद्भुत आईन की आवृत्ति का नशा-सा जैसे सब पर सवार हो गया था। और भी जोर से, और भी अधिक झूमते हुए, हम लोग आईन की आवृत्ति करने लगे। मैंने ऐसा भाव दिखलाया, जैसे मैं भी इन लोगों के आईन के नशे में मतवाला हो गया हूँ। लेकिन भीतर ही

भीतर जैसे बहुत ही खीझ लग रही थी। वैसे ही हँसी भी आ रही थी।

क्या-क्या हम नहीं करेंगे, इसकी सूची समाप्त हो गई। अबकी एक नये ही सुर में हम लोग गा उठे—

"वह जो यंत्रणा-घर है, वह तो उन्हीं का है।"
"तैयार करता है जो हाथ, वह भी उनका है।"
"चोट पहुँचाता है जो हाथ, वह भी उनका है।"
"आराम करता है जो हाथ, वह भी उनका है।"

इस तरह यह आवृत्ति भी देर तक होती रही; लेकिन उसका अधिकांश मेरी समझ में नहीं आया। यह जिनके सम्बन्ध में है, वह कौन हैं, कौन जाने? जान पड़ा, शायद मैं सपना देख रहा हूँ। लेकिन सपने में कभी ऐसा गाना सुना हो, यह तो याद नहीं आता—

"वज्र मारता है जो हाथ, वह भी उनका है।"
"अथाह लोना सागर, वह भी उनका है।"

अचानक एक सांघातिक संभावना मेरे मन में जाग उठी—इन सब मनुष्यों को पशु बनाकर मोरो ने ही क्या इनके खोखले दिमाग में ये सब बातें भर दी हैं—अपने को उनके देवता के आसन पर बिठाया है? वह चाहे जो हो, मैंने गाना रोका नहीं, न अन्यमनस्क भाव ही दिखाया। चारों ओर चम-चमाते हुए बड़े-बड़े दाँत और बलिष्ठ हाथों के पंजे मौजूद थे। उनकी ओर से मैं यथेष्ट सजग था। उनके साथ मैं भी गा उठा—

"आकाश भर में ये जो तारे भरे पड़े हैं, वे भी उनके हैं।"
"उन्हीं का यह सब है—सभी उनका जानता हूँ।"

अन्त को स्तोत्र समाप्त हुआ। आँख उठाकर देखा, वानर-मनुष्य के मुख पर पसीना चमचमा रहा है। इतनी देर में मेरी आँखों को भी अन्धकार में देखने का अभ्यास हो गया था। अँधेरे कोने की

ओर ताकते हुए, जो हम लोगों को गान का अभ्यास करा रहा था, उसे मैंने और भी स्पष्ट देखा। लंबा-चौड़ा वह बहुत कुछ मनुष्य के ही बराबर है; किन्तु उसका सारा शरीर भूरे रोओं से ढका है, बहुत कुछ स्काई-टेरियर (एक जाति का कुत्ता) से मिलता है। यह मैं कहाँ आ गया? यह सब क्या है? मुझे लेकर ये सब क्या करना चाहते हैं? आप क्या कल्पना कर सकते हैं कि आपके चारों ओर ऐसे सब भयानक, विकल अंगवाले, उन्मत्त प्राणी हैं, जिनका अस्तित्व केवल कल्पना-शक्ति के चूड़ान्त विकास में ही संभव है? अगर कर सकते हैं, तभी शायद मनुष्य-जाति के मूर्तिमान् व्यंग्य इन प्राणियों के बीच मेरी दशा के गुरुत्व को कुछ कुछ समझ सकेंगे।

वानर-मानव कह उठा—यह एक पाँच उँगलियोंवाला मनुष्य है, पाँच उँगलियोंवाला मनुष्य है! मुझ जैसा।

मैंने हाथ खोलकर आगे बढ़ा दिया। अन्धकार पूर्ण कोने से भूरे रंग का वह प्राणी झुककर देखने लगा। देखकर कह उठा—

"चारों पैरों से चलना नहीं—यही तो आईन है—हम मनुष्य हैं।"

कहकर उसने अपना विकृत हाथ बढ़ाकर मेरा हाथ ज़ोर से पकड़ लिया। कैसा अद्‌भुत उसका वह हाथ था—ओफ़! ठीक ऐसा जान पड़ता था कि हिरन का खुर काट-कूट कर किसी तरह एक पशु का पंजा-सा तैयार कर दिया गया है! विस्मय और यंत्रणा से मैं प्रायः चीख़-सा उठा। सिर झुकाकर वह मेरे नाखूनों की परीक्षा करने लगा। इसके बाद झोपड़ी में घुसने की राह के पास रोशनी में आकर उपस्थित हुआ। उस प्रकाश में उसके मुँह की ओर जो मैंने ताका तो घृणा से मेरा शरीर संकुचित-सा हो उठा। किसी मनुष्य की कौन कहे, किसी पशु का मुख भी ऐसा भोंडा नहीं हो सकता! केवल कुछ भूरे-भूरे रोएँ और तीन

ऊँची जगहें हैं—दो आँखें और मुँह। दाढ़ी हिलाकर वह बोला—इसके नख छोटे हैं। बहुत अच्छा है। बहुतों के बड़े-बड़े नाखून रहते हैं। यों कहकर उसने मेरा हाथ छोड़ दिया। साथ ही साथ मैंने अपना शस्त्र सँभाला।

वानर-मानुष ने कहा—फल खाओ और कन्दमूल खाओ, यही उनकी इच्छा है।

अंधकार का वह प्राणी कह उठा—मैं आईन सिखाता हूँ। जो नये लोग हैं, वे यहाँ आते हैं, आईन सीखते हैं। अन्धकार में बैठकर मैं आईन सिखाता हूँ।

कोई एक प्राणी कह उठा—हाँ, ठीक है।

आईन-शिक्षक ने कहा—जो लोग आईन को तोड़ते हैं, वे कड़ा दण्ड पाते हैं। आईन तोड़नेवाला कोई नहीं बचेगा।

परस्पर एक दूसरे की ओर कनखियों से देखकर सभी एक साथ कह उठे—कोई नहीं बचेगा।

वानर-मानुष बोल उठा—कोई नहीं, कोई नहीं। देखो, मैंने एक दफ़ा एक अन्याय किया था—हड़बड़ाकर आईन को दोहराते-दोहराते रुक गया था। कोई नहीं समझ पाया। लेकिन देखो, मेरा हाथ जल गया है, अब तक दाग़ बना है। वह बड़े हैं, वह अच्छे हैं।

अन्धकार में खड़ा वही प्राणी—आईन सिखाने वाला—कह उठा—कोई नहीं बच सकता, कोई नहीं बचेगा।

सब पशु-मानुष एक दूसरे को कनखियों से देखते हुए कह उठे—कोई नहीं बच सकता, कोई नहीं बचेगा।

"जो अन्याय है, उसे करना चाहना उचित नहीं"—आईन-रक्षक ने कहा। इसी सिलसिले में वह कहता गया—"तुम क्या चाहोगे, मैं नहीं जानता। लेकिन हम को जानना होगा। हम में से कोई कोई किसी को,

या कुछ हिलते-डुलते देखकर उसका पीछा करते हैं, उसके बाद मौका पाकर उस पर हमला कर देते हैं, उसे काटते हैं, मार डालते हैं, खून पीते हैं। यह अन्याय है!"

"मानुष को तोड़ो (मारो) नहीं—यह आईन है—हम मानुष हैं।"

"मछली-मांस खाना नहीं—यह तो आईन है—हम मानुष हैं।"

"कोई नहीं बचेगा"—एक नाटा-सा प्राणी कह उठा।

"जो अन्याय है, उसे करना चाहना उचित नहीं है"—आईन-रक्षक ने कहा—"कोई नाखूनों से, दाँतों से पेड़-पौधों की जड़ें तोड़ते हैं, धरती खोदकर सूँघते हैं; यह अन्याय है।"

"अन्याय करनेवाला कोई सज़ा से नहीं बचेगा"—सब एक साथ कह उठे।

आईन-रक्षक ने कहा—"कोई पेड़-पौधों की छाल उधेड़ता है, कोई मुर्दे की कब्र खोदता है। कोई सिर से टक्कर मारकर लतिहाव करता है, कोई बिना कारण के एकाएक दौड़कर काट खाता है; कोई-कोई गंदगी पसन्द करता है..."

वानर-मानुष ने पैर खुजलाते-खुजलाते कहा—"कोई सजा से नहीं बचेगा।"

वह छोटा स्लाथ बोला—"कोई नहीं बचेगा।"

आईन-शिक्षक बोला—"सज़ा ज़रूर होगी! कड़ी सज़ा! इसी से कहता हूँ, सब लोग आईन सीखो। फिर कहो—"

फिर वह पूर्वोक्त आईन दोहराने लगा। हम सबने भी मिलकर सब बातों को दोहराया। एक तो यह दुर्गन्ध, उसके ऊपर यह चिल्लाना और प्रलाप। मेरे सिर में दर्द होने लगा। लेकिन जब तक और कोई मौक़ा न मिले, तब तक कोई उपाय नहीं। कहने लगा—

"चारों पैरों से चलना नहीं—यही तो आईन है—हम मनुष्य

हैं।" इत्यादि

अपनी ही चीख-पुकार में बाहर का कोई शब्द हमें सुनाई नहीं पड़ रहा था। इसी समय एक सुअर-मनुष्य (जिन दोनोंको पहले मैं देख चुका था, उन्हीं में से एक) ने स्लाथ के सिर के ऊपर से सिर निकालकर उत्तेजित भाव से कुछ कहा, जिसे मैं समझ नहीं पाया। जो लोग भीतर आने के द्वार पर खड़े थे, वे सब सुनते ही फ़ौरन् वहाँ से भाग गये। वानर-मनुष्य भी दौड़कर बाहर निकल गया और अन्धकार में छिपा हुआ प्राणी भी उसके पीछे-पीछे चल दिया। मैंने देखा, वह प्राणी बहुत बड़ा है; उसके सारे शरीर में रुपहले रोएँ हैं! मैं वहाँ अकेला रह गया।

मैं बाहर निकल ही रहा था, ठीक इसी समय एक स्टग-हाउंड की आवाज़ सुन पड़ी। साथ-ही-साथ बाहर निकलकर, उसी डंडे को मज़बूती से पकड़कर, मैं अधीर उत्तेजना से काँपने लगा। मेरी ओर पीठ करके बीस के लगभग पशु-मानव उत्तेजित मुखमुद्रा और अंगभंगी करके आपस में कुछ कह-सुन रह थे। उनके विकृत सिर कंधे के ऊपर जैसे थे ही नहीं। देख ही नहीं पड़ते थे, यही कहना ठीक होगा। और भी कई एक अर्ध-पशु आकृति के प्राणी ज्वलन्त प्रश्न-सूचक दृष्टि से बाहर ताक रहे थे। उनकी दृष्टि का अनुसरण करके मैंने देखा, दूर पर—बहुत दूर पर—पेड़-पौधों की आड़ में डॉ० मोरो मेरी ओर आगे बढ़ते आ रहे हैं—क्रोध से उनका मुख-मण्डल तमतमा रहा है। उनके पीछे ही मांटगोमरी भी हैं; उनके हाथ में तना हुआ रिवाल्वर है।

आतंक से विह्वल होकर मिनट-भर के लगभग चुपचाप मैं खड़ा रहा। घूमकर देखा, मेरे पीछे की राह रोके हुए एक प्राणी मेरी ओर बढ़ा आ रहा है। उसका पीला-पीला मुख बड़ा-सा है। छोटी-छोटी दोनों आँखें अंगारे की तरह जल रही हैं। घूमकर दाहिनी ओर देखा।

दो-तीन गज के फ़ासले पर एक तंग राह दीवार के बीच से होकर चली गई है और वहाँ की घनी छाया के ऊपर प्रकाश की कुछ किरणें आकर पड़ रही हैं। मेरे उधर जरा आगे बढ़ते ही डॉ० मोरो चीख़ उठे—"खबरदार !—पकड़ो, पकड़ो, उसे !"

पहले एक व्यक्ति ने मेरी ओर ताका, उसके बाद सभी मेरी ओर मुख़ातिब हुए। मेरा बड़ा ही सौभाग्य था कि उनका मन (या समझ) साधारण मनुष्यों के मन की तरह सजग नहीं था—फ़ुर्ती से किसी बात को समझ नहीं पाते थे।

उनमें से एक ने, जो मेरे बिल्कुल पास था, मोरो की तरफ़ प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखा। इसी समय मौका देखकर, एक धक्का मारकर उसे मैंने एक दूसरे प्राणी के ऊपर ढकेल दिया। उसने हाथ बढ़ाकर मुझे पकड़ना चाहा, किन्तु मैं उसकी पकड़ में नहीं आया—उसका हाथ मेरे शरीर से छू जाने पर भी किसी तरह मैं उसके हाथ नहीं आया। इतने में वह छोटा-सा स्लाथ मुझे पकड़ने चला। मैंने अपने हाथ का वह डंडा ज़ोर से उसके कुरूप मुख पर मारा। उस कील की चोट से उसका मुख बहुत-सा कट गया। पास ही एक खड़ी चढ़ाई-सी थी, बहुत कुछ मिल की चिमनी की तरह। गुफा के बाहर तक वह चली गई थी। उसी राह से मैं ज़ोर से जान लेकर भागा। पीछे से सब का मिला हुआ गरजना सुनाई दे रहा था—"पकड़ो, पकड़ो !" भूरे रंग का वह अतिकाय प्राणी मेरे पीछे दौड़ा हुआ आया और दीवार की वह राह रोककर खड़ा हो गया। मैं तब भी उस तंग राह से ऊपर चढ़ रहा था। चढ़ते-चढ़ते पश्चिम में, इन प्राणियों की झोपड़ी के ऊपरी हिस्से में आ पहुँचा। उस जगह के ऊपर गंधक का बिछौना-सा बिछा था।

मेरा बड़ा भारी सौभाग्य यह था कि मैंने इस राह को देख पाया। इस पतले और टेढ़े-मेढ़े मार्ग से निश्चय ही उन पशु-मनुष्यों को चढ़ने में

असुविधा हो रही थी। साफ़ ज़मीन के ऊपर मैं दौड़ने लगा। कुछ आगे जाने पर राह ढालू हो गई थी। मै उतरकर नीचे भागने लगा सामने के लम्बे-लम्बे घास-फूस को नाँघकर मैं एक घने छोटे पौधों के झुमुंट के पास पहुँचा। पैरों के तले काली मिट्टी की दलदल जान पड़ी। घूमकर देखा, पहलेपहल मेरा पीछा करनेवाले प्राणी उस गुफा के मुँह से निकल रहे हैं। और भी कुछ देर तक उसी तरह दौड़ता रहा। फिर पीछे और चारों ओर पशु-मनुष्यों की भयानक चीख़-पुकार सुनाई पड़ने लगी।

गुफा के द्वार से मुझ पर आक्रमण करने के लिए आनेवालों का गर्जन और झाड़झंखाड़ तथा वृक्षों की शाखाओं-पत्तियों के टूटने का शब्द सुनाई पड़ रहा है। शिकारी पशु जैसे शिकार देखकर गरजता और हुमकता है, वैसे ही कई एक ये पशु-मानव चीख़ उठे। बाईं ओर से स्टग-हाउंड कुत्तों का भूँकना जारी है और साथ-ही-साथ मोरो तथा मांटगोमरी चीख़ रहे हैं। चटपट दाहिनी ओर घूमकर मैं साँस रोके हुए दौड़ने लगा। सुना, जैसे मांटगोमरी मुझ से जान बचाकर भागने के लिए कह रहे हैं।

कुछ देर इस तरह दौड़ते-दौड़ते मैं जहाँ जा पहुँचा, वहाँ केवल छोटे-छोटे पौधे थे। तब मैं जान पर खेल रहा था, उन्हीं के भीतर हो-कर दौड़ने लगा। घुटनों-घुटनों तक ऊँचे झाड़-झंखाड़ को मँझाकर चलते-चलते एक बेंत का बन मिला। मैं उसके भीतर टेढ़ी-मेढ़ी पग-डंडी में घुस गया। चीख़ते-चीख़ते मेरे बाईं तरफ़ से सब लोग चले गये। सहसा लाल रंग के तीन अद्भुत जीव मेरे सामने कूद पड़े। खड़े रास्ते से होकर मैं और कुछ दूर आगे बढ़ गया। वहाँ ख़ूब खुलासा साफ़ जगह मिली। उसके बाद ही और एक बेंत का झुमुंट था।

सामने जहाँ पर रास्ता एकाएक घूमकर दीवार के समानान्तर

हो गया है, उसके ठीक नीचे ही बहुत बड़ा गढ़ा था, दूर से जिसका बिल्कुल ही पता नहीं चलता। प्राणपण से दौड़ते-दौड़ते अचानक सिर के बल उसके भीतर जा रहा।

जहाँ मैं गिरा था, वहाँ एक कँटीले गुलाब का झाड़ था और इधर-उधर पत्थर के टुकड़े बिखरे पड़े थे। गिरा तो मैं सिर के बल, मगर बीच में कुछ सँभल गया, तो भी हाथ और माथे के ऊपर ही शरीर का सारा बोझ पड़ा। कान कट-फट गये, मुँह ख़ून से तर हो गया। सामने की छोटी नदी से कुहासे का एक टुकड़ा टेढ़ा-मेढ़ा आकार रखकर आया और चारों ओर फैल गया। दिन की तेज़ रोशनी में यह कुहासा देखकर विस्मित हुआ। लेकिन चुपचाप खड़े होकर विस्मय प्रकट करने का समय वह न था। नदी का किनारा पकड़कर दाहिनी ओर चलने लगा। आशा यह थी कि शायद समुद्र तक जा पहुँचूंगा, और कुछ नहीं तो डूब मरने का मौक़ा तो मिल ही जायगा। इतनी देर बाद मुझे ख़याल आया कि वह हथियार (डंडा) कहीं छूट गया।

कुछ आगे बढ़ते ही वह गुफा में जाने की राह बिल्कुल सँकरी होगई और मैं नदी के जल में उतर पड़ा। लेकिन फ़ौरन् उछलकर बाहर निकल आया—बहुत ही गरम पानी था, लगभग खौलता हुआ। नदी के चक्कर मारते हुए पानी में गंधक का पतला पर्त मुझे देख पड़ा।

लगभग साथ-ही-साथ गुफा की राह और अस्वच्छ नीले आकाश में एक परिवर्तन दिखाई दिया। समुद्र के जल में हज़ारों सूर्यों का प्रति-बिम्ब-सा पड़ रहा है। मेरे सामने ही मौत है। उस समय भी मैं हाँफ रहा था; सारे शरीर से आग की चिनगारियाँ निकल रही थीं; दोनों गालों से गर्म खून की धारा-सी बह रही थी। नस-नस में रक्त का हल्का-सा स्पंदन अनुभव कर रहा हूँ। पीछा करनेवालों को कुछ पीछे

छोड़ सका हूँ, यह सोचकर बहुत प्रसन्न और उत्फुल्ल हुआ। तब फिर सामने मौत खड़ी है, इसका ख़याल ही नहीं रहा। जिस राह से आया था, उस ओर अब घूमकर देखा।

कान खड़े करके सुनने लगा। कोई शब्द नहीं सुनाई दे रहा है। केवल कीड़े-पतंगों का एकतान सुर और चिड़ियों की चहचहाट सुनाई दी। हवा तक उस समय रुकी हुई थी। इसी समय बहुत दूर से कुत्तों का अस्पष्ट भूँकना सुन पड़ा। साथ-ही-साथ और भी कुछ आवाजें और चाबुक फटकारने का शब्द उठकर, धीरे-धीरे, दूर, नदी के पास जाकर लीन हो गया। खैर, कम-से-कम कुछ देर के लिए तो निश्चिन्त हो गया। लेकिन एक बात खूब अच्छी तरह समझ में आ गई कि मोरो या मांट-गोमरी के विरुद्ध इस टापू का कोई भी आदमी या प्राणी मेरी सहायता करने न आवेगा।

१३

सुलह का प्रसंग

फिर लौटकर समुद्र की ओर आगे बढ़ा। गर्म जलवाली नदी क्रमशः चौड़ी होती गई है। जल कम हो गया है, नदी के भीतर छोटे-छोटे पौधे और लताएँ निकल आई हैं। तमाम केंकड़े और लंबे-लंबे बहु-पद प्राणी वहाँ थे। वे मेरे पैरों की चाप से चौंक उठे। समुद्र के खारी पानी के बिलकुल पास तक मैं पहुँच गया। जान पड़ा, अब सिर से आफ़त टल गई। पीछे जिस घनी हरियालीवाले झाड़ों के झुरमुट के ऊपर वह धूमिल गुहा-पथ आ मिला था, उधर झुककर देखा। प्रबल उत्तेजना के कारण मुझे यह भूल ही गया था कि मैं मौत को गले लगाने के लिए ही यहाँ भागकर आया हूँ। जिन लोगों को कभी ऐसी विपत्ति का सामना नहीं करना पड़ा, वे मेरे इस मनोभाव को किसी तरह नहीं समझ सकते।

इसी समय एक संभावना की बात मेरे मन में आई। मोरो और मांटगोमरी तो अपने दलबल सहित मेरा पीछा कर रहे हैं, इसी मौके में अगर मैं समुद्र के किनारे से घूमकर उनसे पहले ही अपनी कोठरी में घुस सकूँ तो कैसा हो? उन लोगों की कोठरी तो बहुत मज़बूत नहीं होगी। उसकी दीवार की चुनाई से एक पत्थर का टुकड़ा निकालकर उसकी सहायता से छोटे दरवाजे का ताला तोड़ डाला जाय तो कैसा हो? एक छुरी या पिस्तौल या और कोई हथियार अगर मिल जाय, तो उन लोगों के साथ लड़ना क्या कुछ कठिन होगा? और कुछ न हो, प्राण बच जाने का एक मामूली इशारा भी तो इसमें है।

मन-ही-मन यही ठीक करके पानी के किनारे-किनारे मैं पश्चिम की ओर चलने लगा। अस्त होनेवाले सूर्य की धीमी पड़ती हुई धूप मेरी आँखों को चौंधियाये दे रही थी। प्रशान्त महासागर छोटी-छोटी लहरें उठाकर शान्त हो गया था।

किनारा पकड़कर मैं दक्षिण की ओर बढ़ने लगा। सूर्य मेरे दाहिनी ओर थे। एकाएक देखा, सामने के झुरमुट के भीतर से एक-एक करके अनेक प्राणी निकलते आ रहे हैं--पहले मोरो और उनके बड़े-बड़े कुत्ते निकले, उसके बाद मांटगोमरी और उनके पीछे और भी दो जने निकले। मैं रुककर खड़ा हो गया। मुझे देखकर तरह-तरह की अंगभंगी करके वे लोग आगे बढ़ने लगे। मैं चुपचाप उनके पास आने की प्रतीक्षा करने लगा। टापू की ओर जो झाड़-झुरमुट थे, उनकी ओर मैं न आ सकूँ, इस मतलब से दो पशु-मानुष उधर दौड़ गये। मांटगोमरी सीधे मेरी तरफ दौड़े। उनके पीछे कुत्ते लिये हुए मोरो अपेक्षाकृत धीमी चाल से आगे बढ़ने लगे।

जड़ता दूर करके, सजग होकर, समुद्र की ओर घूमकर मैं सीधा पानी में उतरने लगा। लगभग तीस गज़ उतर जाने के बाद भी पानी

मेरी कमर तक भी नहीं पहुँचा। ज्वार-भाटे की सीमा-रेखा में जो जल-जन्तु रहते हैं, मैंने धुँधले प्रकाश में देखा, वे मेरी आहट पाकर आस-पास से भागने लगे।

मांटगोमरी चीख़ उठे—अरे! यह क्या करते हैं साहब?

तब मैं कमर-कमर तक पानी में खड़ा था। उनकी आवाज़ सुनकर घूमकर उनकी ओर मैंने ताका। तब तक मांटगोमरी पानी के किनारे तक पहुँच गये। वह बेहद हाँफ रहे हैं—मुख और आँखें एक दम सुर्ख हो रही हैं, लम्बे-लम्बे बाल अस्त-व्यस्त होकर उड़ रहे हैं। नीचे का होंठ नीचे झूल जाने के कारण उनके असमान दाँतों की पाटी दिखाई पड़ रही है। मोरो भी बढ़े आ रहे हैं। उनके मुख पर दृढ़ता की छाप है। उनके साथ के कुत्ते मुझे देखकर भूँक उठे। दोनों ही आदमियों के हाथ में भारी चाबुक हैं। दूर खड़े पशु-मानव देख रहे हैं। मांटगोमरी के प्रश्न के उत्तर में मैंने कहा—क्या करता हूँ? डूब मरने जा रहा हूँ।

मांटगोमरी और मोरो ने एक दूसरे की ओर देखा। इसके बाद मोरो ने पूछा—क्यों?

मैंने कहा—इस कारण कि आप लोगों के हाथ से यंत्रणा भोगकर मरने की अपेक्षा डूब मरना हजार दर्जे अच्छा है।

मांटगोमरी ने मोरो की ओर देखकर नीचे स्वर में कहा—मैंने तुम से क्या कहा था?

इसके उत्तर में मोरो ने जैसे कुछ कहा। मैं नहीं सुन पाया। इसके बाद मोरो ने पूछा—आप को यह ख़याल कैसे आया कि मैं आप को सताऊँगा—यंत्रणा दूँगा?

मैंने कहा—मैंने अपनी आँखों से जो देखा है......और ये जो प्राणी हैं......

"चुप, चुप!"—मोरो हाथ उठाकर कह उठे।

मैंने कहा—ना, चुप नहीं रहूँगा।—ये सब तो मनुष्य ही थे! बताइए तो, अब उनकी क्या दशा है? आप क्या समझते हैं कि सब जान-सुनकर मैं अपनी ऐसी दशा कराने को राजी हूँगा?

मोरो और मांटगोमरी के पीछे मांटगोमरी का सेवक म्लिंग् खड़ा था। और एक सफेद पोशाक पहने विचित्र आकार का जानवर भी था। उनके भी पीछे वृक्ष की छाया में वानर-मानुष खड़ा था और उसके पीछे कई और अस्पष्ट मूर्तियाँ थीं।

"ये सब प्राणी क्या हैं?"—उन लोगों की ओर इशारा करके मैं चिल्लाया, जिसमें मेरी सब बातें वे लोग भी सुन लें। मैंने कहा—ये लोग आप ही लोगों की तरह मनुष्य थे। उनमें आप ही ने पशुत्व का संचार किया है; इसके बाद उन्हें अपना अनुगत सेवक बना लिया है; हालाँकि आप अब तक उनसे काफी डरते रहते हैं!—सुनो तुम सब लोग.........

मोरो को लक्ष्य करके, उन्हें उँगली से दिखाकर, पीछे खड़े प्राणियों को सम्बोधन करके ऊँचे गले से मैंने कहा—सुनो, तुम लोग क्या समझ नहीं पा रहे हो कि ये दोनों आदमी तुम से डरते हैं, अच्छी तरह दबते हैं? फिर तुम क्यों इनसे डरते हो? तुम तो बहुत से......

बीच में बाधा देकर मांटगोमरी कह उठे—दोहाई है आपकी मिस्टर प्रेन्डिक, चुप होइए, चुप होइए।

डाक्टर मोरो भी चीख़ उठे—मि० प्रेन्डिक!

वे दोनों एक ही साथ, एक ही आवाज़ में चीख़ उठे। जान पड़ता है, उनका यही उद्देश्य था कि मेरी बातें उन पशु-मानवों को न सुनाई पड़ें। उनके पीछे पशु-मानवों के विस्मित चेहरे दिखाई दे रहे थे; जैसे वे सन्नाटे में आ गये हों। उनके विकृत हाथ नीचे झूल पड़े

थे और कन्धे कुछ ऊपर उठ गये थे। जान पड़ा, जैसे वे मेरी बातें समझने की कोशिश कर रहे हैं—जैसे उन्हें कुछ-कुछ याद आ रहा है कि पहले वे मनुष्य ही थे।

मैं पहले ही की तरह चिल्लाने लगा। अब स्पष्ट याद नहीं कि क्या कहकर मैं चिल्लाया था। शायद इसी तरह की कोई बात कही थी कि मोरो या मांटगोमरी, इन दोनों की हत्या की जा सकती है और इनसे डरने की कोई बात नहीं है। यह तथ्य उनके दिमाग़ में प्रवेश कराना ही मेरा एकमात्र उद्देश्य था। हालाँकि अन्त को वह मेरे ही लिए प्राण-घातक हो उठा था। गहरे रंग की पोशाक पहनकर जो हरे रंग की आँखोंवाला प्राणी हमारे आने के दिन किनारे खड़ा था, वह पेड़-पत्तों के बीच से निकलकर आगे आया। बाक़ी सब मेरी बात अच्छी तरह से सुनने के लिए पेड़-पौधों की आड़ ठेलकर आगे बढ़े। अन्त को बेदम हो जाने पर मुझे चुप होने के लिए लाचार होना पड़ा।

डॉ० मोरो ने कहा—ज़रा एक मिनिट रुककर मेरी बात सुन लीजिए, उसके बाद जो जी में आवे, कहिएगा।

मैंने कहा—कहिए, क्या कहना चाहते हैं?

डॉक्टर मोरो ने एक बार खाँसा, फिर ज़रा सोचा, उसके बाद चीख़ उठे—ख़ूब सहज लैटिन में कहता हूँ, जिस लैटिन को स्कूली लड़का भी समझ सकता है। सुनिए, चेष्टा करते ही समझ सकेंगे।

यों कहकर उन्होंने लैटिन में कहा—"मैंने पशुओं के शरीर को काट-पीट कर उन्हें मनुष्य बनाया है, मैं मनुष्य को पशु नहीं बनाता।"

इसके बाद अपनी भाषा में बोले—जीव का व्यवच्छेद (Vivisation) उसे मनुष्य में बदलने की प्रक्रिया है। निकल आइए, मैं आपको सब समझा दूँगा।

मैं हँस दिया। बोला—वाह, यह तो बड़े मज़े की बात है!

वे बातचीत करते हैं, घर-द्वार तैयार करते हैं, खाना तक बना लेते हैं? ....उहूँ, ये सब मनुष्य थे। हाँ, निकलूँगा क्यों नहीं! मेरी जान फ़ालतू है न?

मोरो ने कहा—आप जिस जगह खड़े हैं, वहां बेशुमार शार्क (Shark) मछलियाँ हैं—आपको निगल जायँगी।

मैंने कहा—अच्छा तो है। मैं तो यही चाहता हूँ। इस दुर्दशा से तो बच जाऊँगा मैं!

"एक मिनट ठहरिए।" कहकर उन्होंने अपनी जेब से कोई एक चीज़ निकाली। सूर्य के प्रकाश में वह चमचमा उठी। उसे दूर फेंककर उन्होंने कहा—"यह मेरा रिवाल्वर है, इसमें गोलियाँ भरी हैं। मांटगोमरी भी अपना रिवाल्वर अभी फेंक देंगे। हम दूर चले जाते हैं। बोलिए, कितनी दूर चले जानेपर आप निश्चिन्त हो सकेंगे? लीजिए ये दोनों रिवाल्वर, आगे बढ़िए।"

मैंने कहा—उहूँ, मैं राज़ी नहीं हूँ। आप लोगों में एक तीसरा आदमी भी है।

मोरो ने कहा—मैं आप से सारी घटना को सोचने-विचारने के लिए अनुरोध करता हूँ। पहले तो देखिए, मैंने एक बार भी आपसे इस टापू में आने के लिए नहीं कहा। इसके सिवा अगर आपके साथ हमें कुछ ऐसा व्यवहार करना होता तो कल रात को ही आप को जब सोने की दवा दी गई थी, तभी हम कर सकते थे। और देखिए, अब तो आप का आतंक दूर हो गया है, अब तो थोड़ा विचार आप निश्चय ही कर सकेंगे—मांटगोमरी को आप जैसे चरित्र का सन्देह कर रहे हैं, वह क्या सचमुच वैसे ही नीच हैं? हम लोग आप के ही भले के लिए अब तक आपका पीछा कर रहे थे। कारण, इस टापू में ऐसे अनेक प्राणी हैं, जो हम मनुष्यों के शत्रु होते हैं। और भी एक बात है। आप

तो डूब मरने को हो तैयार हैं, तो फिर हम क्यों आप को गोली मार-कर मारने की चेष्टा करेंगे ?

मैंने कहा—जब मैं झोपड़ी में था, तब आपने इन प्राणियों को मुझे पकड़ने के लिए क्यों मेरे पीछे लगा दिया था ?

मोरो—यह इस लिए किया था, जिस में हम आप को पकड़ सकें, निश्चित विपत्ति से आपकी रक्षा कर सकें। आप देख रहे हैं, उसके बाद से हमने आप का बिल्कुल पीछा नहीं किया।

मैंने सोचकर देखा, हाँ, यह हो भी सकता है, संभव है। इसके बाद एक बात याद आ गई। मैंने पूछा—लेकिन चबूतरे के भीतर जो मैंने देखा था...

मोरो ने कहा—वह तो कोई मनुष्य नहीं, पूमा (सिंह की उपजाति) है।

मांटगोमरी ने कहा—आपने यह अत्यन्त मूर्ख का-सा काम किया है मि० प्रेन्डिक। पानी से निकलकर ये दोनो रिवाल्वर लेकर आगे आइए, उसके बाद जो कहना हो, कहिए। वर्तमान अवस्था में अगर हम आपका कुछ नहीं कर सकते, तो आप रिवाल्वर लेकर जब आगे आवेंगे, तब निश्चय ही हम इससे अधिक कुछ नहीं कर सकेंगे।

स्वीकार करता हूँ कि तब तक—तब तक क्यों, हमेशा ही मैंने मोरो पर कभी विश्वास नहीं किया, केवल डरता ही रहा हूँ। लेकिन मांटगोमरी को जैसे मैं कुछ समझ पाया। कुछ देर सोचकर मैं बोला—अच्छा तो जाइए, सिर पर दोनो हाथ उठाकर दूर चले जाइए।

"नहीं, यह हम नहीं कर सकते। यह असम्मानजक है, ख़ासकर इन लोगों के आगे !"—एक प्रकार की अंगभंगी करके मांटगोमरी ने कहा।

मैंने कहा—तो चाहे जिस तरह से जाइए, जाइए। लेकिन उस

वृक्षों तक आप लोगों को जाना होगा।

"आप व्यर्थ का झंझट कर रहे हैं ?"—मांटगोमरी ने कहा।

छः सात विचित्र प्रकार के प्राणी खड़े थे, उनकी छाया भी पृथ्वी पर पड़ रही थी ; किन्तु तो भी वे मुझे अत्यन्त अपार्थिव (अर्थात् इस लोक के नहीं, भूत-प्रेत-से) लग रहे थे। मोरो और मांटगोमरी उनके पास तक चले गये। उन्हें लक्ष्य करके मांटगोमरी ने सड़ाक् से चाबुक फटकारा। वे फौरन् पेड़-पौधों की आड़ में जा छिपे। मांटगोमरी और मोरो जब काफ़ी दूर चले गये, तब मैं जल के भीतर से निकला और जाकर दोनो रिवाल्वर उठा लिये। परीक्षा करके उन्हें देखा। धूर्तता के लिए थोड़ा-सा मौक़ा भी जिसमें ये लोग न पावें, इस मतलब से एक लावे के छोटे से टीले को लक्ष्य करके मैंने एक गोली भी छोड़कर देख ली। टीले को चूर-चूर करके मेरी गोली समुद्र के पानी में घुस गई।

तो भी ज़रा हिचकिचाहट के साथ मैंने कहा—अच्छा, मैं राजी हूँ। देखा ही जाय, क्या होता है। दोनो रिवाल्वर दोनों हाथों में लेकर मैं आगे की ओर बढ़ा।

"अच्छी बात है।" डॉ० मोरो ने सहज भाव से कहा—"व्यर्थ के आतंक से भागकर आपने मेरा सारा दिन ही नष्ट कर दिया।"

उनके इस उलाहने में घृणा का जो सुर सुन पड़ा, उससे मैं बहुत ही संकुचित और लज्जित-सा हो गया। वे दोनों जने चुपचाप मेरे आगे-आगे चलने लगे।

पशु-मानव उस समय भी झाड़ियों के भीतर से अवाक् विस्मय के साथ मेरी ओर ताक रहे थे। यथासंभव गांभीर्य को बनाये रखकर मैं उनको नाँघकर आगे बढ़ गया। उनमें से एक मेरे पीछे चलने को उद्यत हुआ ; लेकिन मांटगोमरी के चाबुक फटकारते ही फ़ौरन् हट गया। बाकी सब चुपचाप ताकने लगे। जान पड़ा, वे सोचने की चेष्टा कर रहे

हैं। शायद किसी समय वे पशु ही थे ; लेकिन इसके पहले मैंने किसी पशु को इस तरह चिन्तनशक्ति का प्रयोग करने की चेष्टा करते नहीं देखा था।

१४

डॉ० मोरो का विश्लेषण

भोजन समाप्त होने के बाद डॉ० मोरो ने कहा—अब मैं तुमको सब समझाकर बतलाऊँगा मि० प्रेन्डिक ! मैं यह स्वीकार करने के लिए बाध्य हूँ कि इसके पहले आप जैसा ज़िद्दी अतिथि नहीं देखा। मगर याद रखिये, यही आखिरी मर्तबा है। आइन्दा अगर और कभी आप आत्म-हत्या करने की धमकी देंगे, तो मैं फिर आपकी रक्षा करने के लिए दौड़ा नहीं जाऊँगा। इसमें अगर मुझे कुछ हानि उठानी पड़े, तो भी नहीं।

मेरी कोठरी की डेक-चेयर पर बैठकर दोनों उँगलियों के बीच अधजली चुरुट दबाये मोरो कह चले। ऊपर टँगे हुए लैंप से प्रकाश आकर उनके सिर के सफ़ेद बालों पर पड़ रहा था। बाहर जगमगाते हुए तारों की ओर उनकी नज़र जमी हुई थी। उनसे यथासंभव फ़ासले पर मैं हाथ में रिवाल्वर लिये बैठा था। टेबिल हम दोनो के बीच में था। मांटगोमरी वहाँ नहीं थे। इतनी छोटी जगह में उन दोनो के साथ

बैठे रहना मैं पसंद भी न करता।

मोरो ने कहा—तो अब आप स्वीकार करते हैं कि आपने जिस कटे-फटे (व्यवच्छिन्न) जीव को देखा था, वह असल में मनुष्य नहीं, पूमा था?

इसके पहले डॉ० मोरो मुझे भीतर की कोठरी का डरावना दृश्य दिखा लाये थे, जिसमें मुझे विश्वास होजाय कि जिसके शरीर पर उन्होंने शस्त्र का प्रयोग किया है, वह मनुष्य नहीं है। उनकी बात के जवाब में मैंने कहा—हाँ, वह पूमा ही है। वह अब भी जीता अवश्य है, किन्तु काटकूट कर आपने उसकी कैसी वीभत्स दशा कर दी है! ईश्वर के निकट प्रार्थना करता हूँ कि किसी जीवित प्राणी की ऐसी दुर्दशा मुझे फिर कभी देखने को न मिले। ऐसा नीच...

मोरो ने कहा—यह बात रहने दीजिए। छोटे बच्चे की तरह विभीपिका की बात अब मुझसे न कहिएगा। मांटगोमरी भी पहले ऐसी ही बातें करते थे, देखकर भड़कते थे।—आप स्वीकार करते हैं कि वह पूमा है? अब चुप होकर सुनिए। शरीर के बारे में मैं आपके सामने एक भाषण करूँगा।

यों कहकर उन्होंने भाषण देना शुरू किया। उनके स्वर में बेहद खीझ प्रकट हो रही थी। कुछ देर तक बोलते-बोलते जैसे वह कुछ उत्साहित हो उठे। सुन्दर सबल मुद्रा से वह अपने विचार और काम करने का ढंग मुझे समझाने लगे। मैं अपनी और उनकी अवस्था के बारे में सोचकर लज्जा से लाल हो उठा। समझ गया, इस टापू में जितने प्राणी हैं, उनमें कोई मनुष्य नहीं है, किसी भी समय मनुष्य नहीं था। वे सब पशु हैं—जीव-व्यवच्छेद-सिद्धान्त की विजय-पताका उड़ाते हुए वे लगभग मनुष्य के पर्याय में आ पहुँचे हैं।

मोरो ने कहा—आप नहीं जानते, निपुण जीव-व्यवच्छेद करने-

वाला वैज्ञानिक डॉक्टर सजीव प्राणी को चीर-फाड़कर कैसा-कैसा असाध्य साधन कर सकता है। मुझे तो यह सोचकर आश्चर्य होता है कि मुझ से पहले किसी ने यह चेष्टा क्यों नहीं की ? आज जो मैं कर रहा हूँ, उधर किसी का ध्यान क्यों नहीं गया ! यह बात नहीं है कि इस सम्बन्ध में छोटी-मोटी चेष्टाएँ न हुई हों—जैसे किसी अंग को काटना, जीभ को काटना या उखाड़ना। आप शायद जानते हैं, अस्त्र-चिकित्सा की सहायता से ऐंचातानी आँख भी, थोड़ी-बहुत तो ज़रूर ही, यहाँ तक कि पूरी तौर से भी अच्छी की जा सकती है। उखाड़कर भी बहुत-से छोटे-मोटे परिवर्तन संभव हुए हैं। जैसे रंग बदलना, इंद्रिय का नियन्त्रण, स्नेहद्रव्य-संपर्कीयकला (Tissue) निकालकर परिवर्तन करना आदि। आपने निश्चय ही ये सब बातें सुनी होंगी।

मैंने कहा—सुनीं क्यों नहीं ! लेकिन आपके ये कुत्सित भद्दे आकार के प्राणी...

मोरो ने कहा— उनके बारे में मैं ठीक समय पर बतलाऊँगा, ज़रा धीरज धरे रहिए। अभी तो कहना शुरू किया है। यह सब तो मामूल अदल-बदल का काम है। अस्त्र-चिकित्सा की सहायता से और भी अच्छे अनेक काम किये जा सकते हैं। नाक बैठ जाने पर उसे ठीक करने के लिए साधारणतः जो एक साधारण आपरेशन किया जाता है, उसके बारे में भी शायद आपने सुना होगा। माथे पर का थोड़ा-सा चमड़ा काटकर घाव पर लगा दिया जाता है और वह वहाँ ठीक से बैठ जाता है। यह तो हुआ एक ही प्राणी का एक जगह का चमड़ा या मांस दूसरी जगह लगा देना। अन्य प्राणी की देह से तुरन्त काटा हुआ अंग भी काम में लाया जा सकता है—जैसे मान लीजिए दाँत। घाव अच्छा करने के लिए चमड़ा ही क्यों, हड्डी का भी इस तरह उपयोग किया जा सकता है। अन्य प्राणी के शरीर से खाल या तुरन्त मरे हुए जीव की देह से

हड्डी का टुकड़ा लेकर सर्जन उसे घाव की जगह पर लगा देता है अल्जीरिया के ज्वेव लोगों का गैंडे और चूहे का व्यापार देखिए न। साधारण चूहे की पूँछ को काटकर नाकपर जमाकर उन्हें दैत्य बना दिया जाता है।

मैंने कहा—दैत्य बना दिया जाता है। तो आप क्या यह करना चाहते हैं—

मोरो बीच ही में बोल उठे—हाँ, जिन सब प्राणियों को आप यहाँ देखते हैं, इनको काटकूटकर नई आकृति दे दी गई है। मेरे सारे जीवन की साधना यही काम रहा है। बहुत वर्षों तक इस सम्बन्ध की पुस्तकें मैंने पढ़ी हैं, कुछ-कुछ ज्ञान भी प्राप्त किया है। देखता हूँ, आप सुनकर काँप उठे हैं; लेकिन मैं आप से कोई नई बात नहीं कह रहा हूँ। ये सब सर्जरी (अस्त्रोपचार-विद्या) की बहुत ही साधारण बातें हैं; लेकिन मज़ा यह है कि इतने दिन तक साहस करके किसी ने इसमें हाथ नहीं डाला। केवल किसी प्राणी की बाहरी सूरत ही नहीं बदली जा सकती, उसके शारीरिक गठन-सौष्ठव तक को मैं नया स्थायी रूप दे सकता हूँ। जीवित अथवा मृत पदार्थ को लेकर वैक्सिनेशन अथवा वीर्य-निवेशन की अन्यान्य पद्धतियाँ, जो आजकल नित्य-नैमित्तिक साधारण बात बन गई हैं, वे भी उदाहरण-स्वरूप दिखाई जा सकती हैं।

कुछ रुककर मोरो ने कहा—रक्त को एक देह से दूसरी देह में पहुँचाना भी बहुत कुछ इसी तरह की बात है। और उसी से मेरी इस गवेषणा का आरंभ हुआ है। इन सब बातों को तो आज-कल सभी जानते हैं। मध्ययुग के चिकित्सक शायद और भी बहुत व्यापक भाव से बौने, लँगड़े फ़क़ीरों अथवा दानवों की सृष्टि कर सकते थे! लेकिन उनके कामों को आज-कल बहुत-से लोग नहीं जानते। दो-एक अनपढ़

डाक्टरों अथवा जादू का तमाशा दिखानेवालों में उनकी कार्य-कुशलता का क्षीण परिचय प्राप्त होता है। विक्टर ह्यूगो ने भी एक जगह उनका उल्लेख किया है।

वे दम लेकर फिर बोले—अब शायद मेरी बात आपकी समझ में कुछ-कुछ आ रही है। अब आप स्वीकार करेंगे कि एक प्राणी की कला (Tissue) लेकर उसे उसी देह में दूसरी जगह अथवा दूसरे शरीर में भी बिठा दिया जाता है और इसके फलस्वरूप सूक्ष्म-से-सूक्ष्म विषय तक में सम्पूर्ण परिवर्तन करना संभव है। अथ च वर्त्तमान युग के किसी भी गवेषणा करनेवाले वैज्ञानिक ने विज्ञान की इस असाधारण शाखा को गवेषणा को चरम विषय-वस्तु समझकर बाकायदा नहीं अपनाया। मैंने ही पहलेपहल साहस करके इस काम में हाथ डाला है। अस्त्र-चिकित्सा के अन्तिम अवलंबन के हिसाब से अवश्य दो-एक क्षेत्रों में कुछ काम हुआ है। जो कई एक उदाहरण शायद आपको याद आ रहे होंगे, वे सभी या अधिकांश बिलकुल ही अकस्मात् दैवसंयोग से घटित हुए हैं। कोई अत्याचारी, कोई पापी, कोई घोड़े या कुत्ते पालनेवाला अथवा कोई अर्द्धशिक्षित स्वार्थपर व्यक्ति—ये ही कदाचित् उनके लिए कृतित्व का दावा कर सकते हैं! किन्तु वीजवारक शस्त्रोपचार-विद्या और जीवकोष की वृद्धि के सम्बन्ध में यथार्थ विज्ञान-सम्मत ज्ञान लेकर मैंने ही सब से पहले इस विषय की खोज शुरू की है। फिर भी बहुत लोग शायद यही समझेंगे कि इस विषय में पहले भी गुप्त रूप से गवेषणा हुई है। जैसे मान लीजिए, श्याम देश के वे जुड़वाँ बालक।... और जाँच के क्षेत्र में भी कभी-कभी ऐसा हुआ है; लेकिन इस में सन्देह नहीं कि सुनिपुण कौशल से यंत्रणा देना ही अवश्य उन लोगों का प्रधान उद्देश्य था। किन्तु उन जाँच करनेवालों में से कम से कम दो-एक आदमियों में ही सही, विज्ञान-सम्मत अनुसंधान करने की इच्छा थी।

मैंने कहा—लेकिन ये प्राणी तो बातचीत करते हैं !

मोरो ने कहा--बातचीत तो करेंगे ही। जीव-व्यवच्छेद की संभावना तो केवल देह के ऊपर ही सीमित नहीं है। एक सुअर को भी शिक्षा देना संभव है। मानसिक गठन शारीरिक गठन से भी अधिकतर परिवर्तन शील है। 'संवेशन' अत्यन्त उन्नतिशील विज्ञान है—बहुत पुराना अभ्यास है। यहाँ तक कि उसमें बद्धमूल स्थित धारणा तक के परिवर्तन की संभावना का संकेत छिपा हुआ है। हम लोग जिसे नैतिक शिक्षा कहते हैं, वह भी और कुछ नहीं, बहुत कुछ इसी प्रकार के कृत्रिम उपाय से मानसिक परिवर्तन करने की प्रचेष्टा है। शिक्षा के फलस्वरूप कलहप्रिय प्रवृत्ति को बहुत बड़े आत्म-त्याग में बदला जा सकता है, निरुद्ध यौन-वृत्ति तक को धर्मप्राणता के स्तर पर ऊपर उठाया जा सकता है। मनुष्य और वानर के बीच प्रधान अन्तर वाक्-यंत्र है। जो कुछ सोचा जाता है, उसे वाक्य के रूप में बदलने के लिए जिस प्रक्रिया का प्रयोजन है, उसका वानर में अत्यन्त अभाव है।

मैं मोरो के साथ इस विषय में एकमत नहीं हो सका ; किन्तु कुछ अवज्ञा के साथ ही उन्होंने मेरी आपत्ति पर ध्यान नहीं दिया।

मैंने पूछा—अच्छा, आप मनुष्य की आकृति को ही आदर्श मानकर क्यों ग्रहण करते हैं ?

मुझे जान पड़ा था (सच तो यह है कि अब भी जान पड़ता है), इसके भीतर डॉ० मोरो की कोई बुरी नियत छिपी थी। उन्होंने स्वीकार किया कि बिलकुल दैवसंयोग ही यह था कि उन्होंने यह आदर्श ग्रहण किया।

उन्होंने कहा--भेड़े को लामा अथवा लामा को भेड़ा बना देने का काम भी मैं कर सकता था ; किन्तु मनुष्य की आकृति में ऐसा कुछ

है, जो अन्य किसी प्राणी की गठन की अपेक्षा हमारे सौन्दर्य-बोध को अधिक जगाता है। लेकिन फिर भी मैंने अपनी कृति को सम्पूर्ण रूप से मनुष्य की सृष्टि करने में ही बाँध रक्खा हो, यह बात नहीं है। दो एक बार—

लगभग एक मिनिट चुप रहने के बाद वह फिर बोले--इतने साल! किस तरह बीत गये! उस पर आपको बचाने में मैंने एक दिन नष्ट कर दिया, और अब आपको समझाने में और एक घण्टा नष्ट हो रहा है।

मैंने कहा—लेकिन एक बात मेरी समझ में अभी तक नहीं आ रही है। पशुओं को जो आप इतनी यंत्रणा दे रहे हैं, इसकी कैफियत आप क्या देंगे? जीव-व्यवच्छेद का एकमात्र उद्देश्य तो समझता हूँ, किसी काम में—

मोरो ने कहा—ठीक यही बात है। लेकिन बात क्या है, जानते हैं? मेरी प्रकृति कुछ दूसरी तरह की है। हम दोनों का देखने का ढंग भी भिन्न है। आप हैं जड़वादी।

"मैं बिल्कुल ही जड़वादी नहीं हूँ"—चीखकर मैंने इन्कार किया।

मोरो समझाने के स्वर में बोले—मेरी नज़र में भाई, मेरी नज़र में। अच्छा, यंत्रणा को लेकर ही हम दोनों में मतभेद है? यंत्रणा देख-कर या सुनकर आप विचलित होते हैं। यंत्रणा या कष्ट पाकर यदि आप छटपटाएँ, यंत्रणा के ऊपर ही निर्भर करके यदि आप पुण्य-पाप का विचार करें, तो मैं कहूँगा कि आप भी पशु के सिवा और कुछ नहीं हैं। अंतर केवल यही है कि पशु की अनुभव करने की वृत्ति जितनी अस्तव्यस्त है, आपकी कल्पना-शक्ति ठीक उतनी ही गड़बड़ नहीं है। यह यंत्रणा...

इस फ़िज़ूल बहस में मैंने खीझ प्रकट की।

मोरो बोले— ओह, यह तो बहुत साधारण बात है! विज्ञान की अपरिमेय संभावना के प्रति जिसकी दृष्टि सजग है, वह सहज में ही समझ सकेगा कि यह अनुभूति कुछ भी नहीं है। विशाल विश्व-ब्रह्माण्ड में यह हमारी पृथ्वी तो एक कण के बराबर भी नहीं है। सबसे निकट के नक्षत्र में पहुँचने के बहुत पहले ही यह हमारी दृष्टि से ओझल हो जायगी। हमारे इस क्षुद्र ग्रह (पृथ्वी) के बाहर और कहीं भी यंत्रणा-बोध का अस्तित्व मात्र शायद नहीं है...और इस पृथ्वी पर ही देखिये न, जीवित प्राणियों में ही कितना यन्त्रणा-बोध है?

यह कहकर अपनी मोटी जाँघ के ऊपर एक जगह छाँटकर डॉ० मोरो ने पेंसिल बनाने की छुरी भोंककर निकाल ली। फिर बोले— ऐसी घटना पहले भी आपने निश्चय देखी है। इसमें उतनी भी व्यथा नहीं मालूम होती, जितनी एक पिन के भुँकने से होती है। लेकिन जानते हैं, इससे क्या प्रमाणित होता है? यंत्रणा-बोध मांसपेशी में बँधा नहीं रहता। कारण, वहाँ उसका कोई प्रयोजन नहीं है। हमारी खाल में, जान पड़ता है, वेदना की कोई अनुभूति ही नहीं है। केवल जाँघके ऊपर दो-एक जगह साधारण कष्ट का अनुभव है। यह यंत्रणा-बोध बहुत कुछ हमारे चिकित्सक का काम करता है। सावधान कर देना अथवा किसी ओर कोई प्रेरणा देना, यही उसका काम है। जैसे हमारी देह के अनेक स्थानों में, वैसे ही हमारी देह की अनेक स्नायुओं में भी इस अनुभूति का अस्तित्व नहीं है—यहाँ तक कि संवेदन स्नायुओं में भी नहीं। हमारी आँखों की किसी स्नायु में वेदना-बोध के लिए तनिक भी स्थान नहीं है। वहाँ चोट लगने पर हम उसका अनुभव नहीं कर सकते। बहुत अधिक हुआ तो आँखों से धुँधला दिखाई पड़ने लगता है—जैसे श्रवणेन्द्रिय में कोई ख़राबी होने पर कानों में

केवल साँय-साँय का शब्द सुनाई देता है। इसके बाद पेड़-पौधों को लीजिए। उनमें भी इस अनुभूति का अस्तित्व नहीं है। छोटे-छोटे अनेक ऐसे प्राणी हैं—दो-एक मछलियों के नाम भी गिनाये जा सकते हैं—जिनमें यन्त्रणा की अनुभूति बिल्कुल नहीं है। मनुष्य को ही लीजिए। जितनी ही उसकी बुद्धि-वृत्ति की उन्नति होगी, उतना ही फिर उसे अपनी विपत्ति के सम्बन्ध में पग-पग पर सजग नहीं होना पड़ेगा। क्रम-विकास का चक्कर कालक्रम से लुप्त नहीं हो गया, ऐसी किसी अप्रयोजनीय वस्तु के अस्तित्व की बात मैंने तो सुनी नहीं! आप क्या कहते हैं? यंत्रणा-बोध भी क्या ठीक वैसी ही एक बिल्कुल अप्रयोजनीय अनुभूति नहीं है?

कुछ रुककर वह फिर कहने लगे—और देखिये, हर एक सुस्थ मस्तिष्कवाले व्यक्ति को तरह मैं भी धर्मभीरु हूँ। मेरी भी धर्म में निष्ठा है। जगत् की सृष्टि करनेवाले की कार्य-प्रणाली को मैंने शायद आपसे अधिक मुस्तैदी के साथ प्रत्यक्ष देखा है—उनके काम का कुछ अंश अपने हाथ में लेकर मैंने जीवन के बीते हुए दिन बिता दिये हैं। और आप शायद जीवन के इतने वर्षों तक तितलियाँ जमा करने में ही व्यस्त रहे हैं। मैंने जान लिया है, यंत्रणा या आनन्द की अनुभूति के साथ स्वर्ग या नरक का कोई सम्बन्ध नहीं है। आनंद! यंत्रणा! फूः! ......मनुष्य ने जो आज भी आनंद और वेदना के भाग को कसकर पकड़ रक्खा है, इसीसे उसका पशु होना प्रमाणित होता है—पशुत्व से ही मनुष्य प्रकट होना सिद्ध होता है। यंत्रणा! यंत्रणा और आनन्द! जितने दिनों तक हम इस धूल में लोटते रहेंगे, उतने ही दिनों तक इनका अस्तित्व रहेगा।

कुछ दम लेकर डॉक्टर मोरो फिर कहने लगे—मेरी गवेषणा जिस ओर मुझे ले गई है, उसी ओर मैं चला हूँ। एकमात्र इसी तरह

से गवेषणा चिरकाल से चली आ रही है। एक प्रश्न मन में पैदा हुआ। उसके उत्तर को सोचते-सोचते मन में एक प्रश्न और उठ खड़ा हुआ। यह क्या संभव है ? वह क्या है ? एक खोज करनेवाले के निकट इसका क्यमूलाय है, इसकी धारणा भी आप नहीं कर सकेंगे। जिज्ञासा का मोह नशे की तरह सवार हो जाता है। ज्ञान की प्यास के इस अद्भुत अनिर्वचनीय आनन्द की बात आप की धारणा के भी बाहर है। गवेषणा की वस्तु उस समय कोई प्राणी या एक ही सृष्टिकर्त्ता का उत्पन्न किया हुआ जीव नहीं जान पड़ता—केवल यही जान पड़ता है कि यह मेरी गवेषणा की चीज़ है। याद आता है, सहानुभूति का यह कष्ट सुदूर अतीत में मुझे भी हुआ करता था...जीवित प्राणी की देह में कितनी नमनीयता या लोच है, केवल यही उस समय मेरी एकमात्र जिज्ञासा थी।

मैंने कहा—काम लेकिन बहुत ही निन्दित है......

डॉ० मोरो बीच ही में कह उठे—इसके नैतिक पहलू को लेकर मैंने कभी माथापच्ची नहीं की। मैं प्रकृति का छात्र हूँ, इसी से प्रकृति ही की तरह निर्मम मुझे होना पड़ा है। मैं एकाग्र चित से अपनी साधना में आगे बढ़ता जा रहा हूँ, और किसी बात पर ध्यान देने का समय मुझे नहीं मिला। इसके फलस्वरूप मैंने जो पाया है, वह आप देख चुके—उसी झोपड़ी में वे रहते हैं। लगभग ग्यारह वर्ष हुए, हम लोग इस टापू में आये हैं—मांटगोमरी, मैं और छः कनाका। यह निर्जन हरा-भरा छोटा-सा टापू है, इसके चारों ओर निस्तब्ध समुद है। जब मैं यहाँ आया था, उस दिन का वह दृश्य मुझे स्पष्ट याद आ रहा है। देखकर जान पड़ा, यह स्थान बहुत दिनों से मेरी ही राह देख रहा था।

क्षण-भर मेरी ओर देखते रहकर मोरो ने कहा—माल-असबाब यहाँ उतारा गया। रहने का स्थान भी तैयार हुआ। उन कनाकाओं ने

कंदरा के पास अपने लायक कई झोपड़ियाँ तैयार कर लीं। मैं साथ में जिन प्राणियों को लाया था, उन्हीं को लेकर मेरा काम शुरू हुआ। पहलेपहल कई एक अप्रीतिकर घटनाएँ घटीं। एक भेड़े को लेकर मैंने परीक्षा शुरू की। लेकिन सहसा मेरा हाथ बहक गया और छुरी के आघात से वह भेड़ा बेचारा मर गया। फिर एक और भेड़ा लिया परीक्षा समाप्त होने पर देखा गया, उसमें भय और वेदना साक्षात् मूर्तिमान् हो उठी है। घाव सूखने के लिए बैन्डेज़ बाँधकर मैंने उसे छोड़ दिया। देखने में वह अच्छा-खासा मनुष्य ही सा हुआ; लेकिन उसके पास जाकर मुझे विशेष सन्तोष नहीं हुआ। उसने मुझे ठीक उसी रूप में याद रक्खा था, इसी से मुझे देखते ही वह भौंचक्का होकर भागने की कोशिश करता था। उसकी बुद्धि और समझ भी एक भेड़े की सी रह गई। मैं जितना उसे देखता था, उतना ही वह कुत्सित जान पड़ता था। अन्त को उसे गोली मारकर मैंने सारी यंत्रणा से छुटकारा दे दिया। ये सब भय-विह्वल, यंत्रणा—कातर प्राणी मनुष्य बनने लायक नहीं हैं।

कुछ रुककर फिर कहने लगे—इसके बाद एक गुरिल्ले के ऊपर मेरी परीक्षा शुरू हुई। अत्यन्त सावधानी से, असीम धैर्य के साथ, बाधा पर बाधा नाँघकर, मैं उसपर छुरी का प्रयोग करने लगा। वही मेरा बनाया पहला मनुष्य हुआ। दिन-रात पूरे एक सप्ताह तक मेरा यह मनुष्य गढ़ने का काम चलता रहा। सबसे अधिक प्रयोजन हुआ उसके मस्तिष्क को बदलने का। बहुत कुछ वर्जन, बहुत कुछ संयोजन (जोड़ना) और बहुत कुछ निष्कासन (निकालना) करना पड़ा। अन्त को वह अधिकांश में नीग्रो जाति के मनुष्य की तरह लगता था। सब अंगों में बैंडेज बाँधकर इस तरह उसे बाँधा गया कि वह किसी तरह हिलने-डुलने न पावे। उसके जीवन के सम्बन्ध में सम्पूर्ण निश्चिन्त होकर मैं अपने रहने की कोठरी में लौट आया। पूमा का आर्त्तनाद सुनकर

आप जैसे विचलित हुए थे, बहुत कुछ वैसी अवस्था ही उस दिन गुरिल्ला का मनुष्य का-सा रोना और चिल्लाना सुनकर मांटगोमरी की हुई थी। इसका कारण यही था कि तुम्हारी ही तरह उनसे भी मैंने सब बातें खोलकर नहीं कही थीं।

उन कनाकाओं ने भी शायद कुछ इसी तरह का अनुमान कर लिया था। तभी से वे मुझे देखकर भय-विह्वल हो जाते थे। किसी तरह समझा बुझाकर मांटगोमरी को तो मैंने शान्त कर लिया, मगर उन कनाकाओं को शान्त करना कठिन हो गया। वे किसी तरह इस टापू में रहने के लिए राज़ी नहीं हुए। उन्हें वश करने में बहुत कष्ट उठाना पड़ा, हालाँकि अन्त तक मैं उन्हें पकड़कर रख नहीं सका और अपनी नाव भी खोनी पड़ी।

बहुत दिन—लगभग तीन-चार महीने तक उस गुरिल्ला को मैंने मनुष्योचित शिक्षा दी। अँगरेज़ी भाषा का उसे साधारण बात-चीत करने भर का ज्ञान हो गया। उसे मैंने गिनती भी सिखाई। यहाँ तक कि वह पहली किताब के अक्षर तक पढ़ने लगा। लेकिन इसमें बहुत समय लग गया। फिर भी मैं हताश नहीं हुआ। कारण अनेक मनुष्य मैंने ऐसे देखे हैं; जिनकी बुद्धि उससे भी कम और कच्ची होती है। मनुष्य होने के पहले वह क्या था, इस बारे में उसकी कोई धारणा नहीं रही। सब कुछ उसने एक बच्चे की तरह नये सिरे से सीखा। इसके बाद क्रमशः उसके सब घाव सूखने लगे। किन्तु उस समय तक उसकी व्यथा या जड़ता दूर नहीं हुई थी। थोड़ा-थोड़ा बातें भी वह कर सकता था। तब कानाकाओं से उसका परिचय मैंने करा दिया। पहले उसे देखकर कनाका लोग बहुत ही डर गये। इससे मुझे बड़ी खीझ हुई। कारण, वह प्राणी मेरे लिए एक गर्व की चीज़ था। लेकिन वह बेचारा इतना सीधा था और देखने में उसकी शक्ल इतनी बुरी थी कि कानाकाओं का

भय कुछ दिन में दूर हो गया। बहुत चटपट वह सीखने लगा। वह बहुत अच्छी नक़ल कर सकता था। अपने लिए उसने एक घर बना लिया। वह कनाकाओं के घर से भी सुन्दर था। कनाकाओं के साथ बहुत तेज़ी से उसकी शिक्षा होने लगी। उन कनाकाओं में एक बहुत कुछ मिशनरी जैसा था। उसी ने उस गुरिल्ला-मनुष्य को पढ़ना सिखाया। उसकी शिक्षा से नीति के सम्बन्ध में भी उस गुरिल्ला मनुष्य की साधारणतः एक धारणा बन गई; लेकिन उसका आचरण पूर्ण रूप से मेरी आशा के अनुरूप नहीं था।

कुछ रुककर मोरो फिर कहने लगे—इसके बाद कुछ दिन मैंने विश्राम किया। इच्छा हुई, सारा हाल लिखकर इँग्लैंड भेज दूँ। शरीर-तत्त्व के पंडित जाग उठें। एक दिन देखा, वह गुरिल्ला-मनुष्य एक वृक्ष के ऊपर चढ़ा हुआ, किचर-मिचर करके दो कनाकाओं से न जाने क्या कह रहा है। दोनों कनाका उसे खिझा रहे थे। मैंने जाकर उन्हें धमकाकर कहा कि मनुष्य को कभी ऐसा काम नहीं करना चाहिए। देखा, वह लज्जित हुआ। मैंने निश्चय किया कि और भी ऊँचे स्तर के प्राणियों की सृष्टि करके उसके बाद उन्हें इँग्लैंण्ड ले जाऊँगा। लेकिन न जाने क्या गड़बड़ होती है कि उनमें मनुष्यत्व अधिक दिन नहीं टिकता, पशुभाव ही फिर धीरे-धीरे प्रबल हो उठता है। लेकिन मैंने निश्चय कर लिया है, कि इस काम को नहीं छोड़ूँगा। और भी अच्छे मनुष्य तैयार करूँगा। इस त्रुटि को भी मैं दूर कर लूँगा। यह पूमा—

कुछ रुककर, प्रसंग बदलकर उन्होंने कहना शुरू किया—जाने दो, यह बातचीत फिर होगी। हाँ, तो वे सब कनाका अब मर चुके हैं। एक लंच से गिरकर मर गया और एक के एड़ी में घाव हो गया था। उसमें उसने किसी ज़हरीली बेल का रस लगा लिया, जिससे उसकी जान चली गई। तीन जने मेरी नाव लेकर भाग गये और मुझे

पूर्ण रूप से आशा है कि वे डूबकर मर गये। और छठा जो बचा था, मार डाला गया। ख़ैर, मैंने उनकी कमी पूरी कर ली है। आप की तरह मांटगोमरी भी पहले डर गये थे, उसके बाद—

मैं बीच ही में बोल उठा—उस छठे कनाका ने क्या किया था? उसे क्यों मार डाला गया?

मोरो ने कहा—जानते हैं, क्या बात हुई? अनेक प्राणियों को मनुष्य बनाने के बाद मैंने एक जीव तैयार किया था...

इतना कहकर वह कुछ इधर-उधर करने लगे।

मैंने कहा—आप रुक क्यों गये?

उन्होंने कहा—वह मार डाला गया।

मैंने कहा—मैं समझा नहीं। आप क्या कहना चाहते हैं......

उन्होंने कहा—हाँ। उसी जीव ने कनाका को मार डाला। केवल कनाका को ही नहीं, उसने जिसे पकड़ा, उसे मार डाला। दो दिन तक हम लोगों ने उसका पीछा किया। उसके बाद, मेरा काम समाप्त होने के पहले ही वह न जाने कैसी अंगभंगी करके भाग गया। तब तक वह अधूरा ही था—उसके अंग-प्रत्यंग ठीक तरह से लगाये नहीं गये थे। कैसा वीभत्स था, उसका मुख! उसमें असंभव अलौकिक शक्ति थी। बेचारा तकलीफ से पागल-सा हो उठा था। कैसे अद्भुत ढंग से लड़-खड़ाता वह चलता था। कई दिन तो उसने जंगल में छिपकर काटे। उसने जिसे पाया, उसी का अनिष्ट किया। इसके बाद हम उसे टापू के उत्तरी भाग में हाँक कर ले गये। थोड़ा-थोड़ा करके उसको घेर लिया गया। मांटगोमरी भी मेरे साथ आये थे। कनाका की एक दुनाली बंदूक थी; लेकिन उसका शव खींचकर निकाला गया तो देखा गया कि बन्दूक की एक नली मुड़कर टेढ़ी होकर बिलकुल बेकार हो गई है—उसमें कई एक जगह दाँतों के गहरे निशान भी बन गये हैं, जैसे किसी ने चबा-

डाला है ! मांटगोमरी की गोली से अन्त को उस अद्‌भुत जीव की मृत्यु हो गई । अब तुम समझ गये होगे, वह मेरा बनाया हुआ अद्‌भुत जीव वही कनाका था । तभी से मैं प्राणियों को मनुष्य की आकृति ही देता आ रहा हूँ । दो-एक बार इसका व्यतिक्रम भी अवश्य हुआ है ।

इतना कहकर डॉ० मोरो कुछ देर तक चुप रहे । मैं चुपचाप विस्मय से उनके मुँह की ओर ताकता रहा ।

मोरो ने फिर कहना शुरू किया—बीस साल से मैं यह खोज कर रहा हूँ—नौ साल इँगलेंड में और ग्याहर साल यहाँ । इतने दिनों से काम कर रहा हूँ, लेकिन ठीक अपने मन के माफ़िक़ फल किसी तरह नहीं पाता । कुछ-न-कुछ त्रुटि रह ही जाती है । नतीजा यह कि फिर नये सिरे से मुझे काम करना पड़ता है । अक्सर अपनी क्षमता से भी बढ़ जाता हूँ ; पर कभी अपनी क्षमता के माफ़िक़ काम नहीं होता । मनुष्य की आकृति तो प्रायः सहज में ही ला सकता हूँ, कोई विशेष असुविधा नहीं होती। असुविधा जो कुछ है, वह उसके दोनों हाथों को ही लेकर होती है । हाथों में वेदना की अनुभूति अत्यन्त अधिक होती है, इसीलिए हाथों के व्यवच्छेद का काम मैं निश्चिन्त एकाग्र मन से नहीं कर पाता । लेकिन यह भी उतना कठिन नहीं । उस जीव के मस्तिष्क (ब्रेन) को बदलना ही असल में कठिन काम है । सबसे अधिक सावधानता की आवश्यकता इसी काम में है । मैंने अब तक जितने मनुष्याकृति जीव तैयार किये हैं, उनमें से अधिकांश में ही बुद्धि की वृत्ति बहुत ही कम थी । लेकिन बुद्धि से भी अधिक कच्चा अर्थात् अपरिणत उनका अन्तर्वेग होता है । इसी जगह पर मेरी क्षमता एक हद में बँधी है । मनुष्यत्व के विरोधी या उसमें रुकावट डालनेवाले कुछ आवेग, आकांक्षाएँ या वासनाएँ उनमें छिपी रहती हैं । वे एकाएक वहाँ से जोर बाँधकर प्रकट हो पड़ती हैं । तब वे क्रोध, घृणा और भय के मारे आपे से बाहर हो जाते हैं ।

मोरो ने ज़रा रुककर फिर कहना शुरू किया—ये सब प्राणी निश्चय ही आपको अत्यन्त अद्भुत लगते हैं। किसी प्राणी के ऊपर व्यवच्छेद का काम समाप्त हो जाने के बाद वह देखने में ठीक मनुष्य के समान ही होता है। किन्तु मैंने लक्ष्य करके देखा है, कि क्रमशः उसका वह भाव और स्वभाव मिटने लगता है; एक-एक करके पशुत्व के सब लक्षण उसमें लौट आते हैं। लेकिन मैं इस त्रुटि को भी अवश्य सुधार लूँगा। प्रत्येक बार मन में आशा होती है कि अब की जिस मनुष्य को तैयार करूँगा, उसमें कोई कमी नहीं रहेगी— पशुत्व का कोई लक्षण नहीं रह जायगा। वह ठीक मेरे मन के माफ़िक होगा, उसमें मनुष्य की बुद्धि-वृत्ति भी रहेगी। इसमें समय लगेगा—शायद दस साल लग जायँ। मगर दस साल का समय मनुष्य की लंबी आयु में कितना-सा है! मनुष्य को वर्तमान परिणत अवस्था प्राप्त करने में तो कितने ही लाख वर्ष लगे होंगे।

कुछ देर तक गम्भीर, आत्मस्थ होकर डॉ॰ मोरो जैसे कुछ सोचते रहे। उसके बाद फिर बोले—मेरा काम भी अब निर्दोष होता आ रहा है। यह पूमा......

फिर रुककर बड़ी देर तक चुप रहने के बाद उन्होंने कहा—लेकिन मेरे पास से चले जाने के बाद फिर वे धीरे-धीरे पशु बन जाते हैं।

इसके बाद बड़ी देर तक हम दोनो चुप रहे। मैंने पूछा—आप का काम जब पूरा हो जाता है, तब जान पड़ता है, आप उन्हें उसी कुटिया में भेज देते हैं?

मोरो ने कहा—वे खुद चले जाते हैं। जब मैं देखता हूँ कि उनमें पशुत्व प्रबल हो उठा है, तब उन्हें मैं छोड़ देता हूँ। मुझसे और मेरे इस घर से वे डरते हैं। वे मनुष्य का मूर्त्तिमान् व्यंग्य हैं।

मांटगोमरी उनके मामले में हाथ डालते हैं। वह सब जानते हैं। उनमें से दो-एक को उन्होंने अपने काम-काज में भी लगा लिया है। मांटगोमरी उन लोगों को एक तरह से पसन्द ही करते हैं (हालाँकि वह इस बात को स्वीकार करने में शरमाते हैं); लेकिन मैं उन जीवों को देखकर तनिक भी उत्साहित नहीं होता, बल्कि अपनी असफलता के लिए लज्जित होता हूँ। जिस कनाका ने उनकी शिक्षा का भार ग्रहण किया था, जान पड़ता है, उसी के निर्देश के अनुसार वे रहते हैं, काम करते हैं।...उनका एक आईन भी है! वे अपनी गुफा तैयार करते हैं, फल-मूल खाते हैं, यहाँ तक कि आपस में व्याह भी कर लेते हैं। लेकिन मैं उनके भीतर का सब हाल जानता हूँ। उनकी अन्तरात्मा तक स्पष्ट देख पाता हूँ। वे साधारण मरने-मारनेवाले पशु हैं—क्रोध के अत्यन्त वशवर्त्ती। जीना और वासना को चरितार्थ करना, यही दो बातें उनकी एकान्त कामना की वस्तु हैं। मेरी विफलता जैसे उनमें साकार हो उठती है। इस पूमा के ऊपर मुझे कुछ भरोसा है। इसके मस्तक और मस्तिष्क (ब्रेन) के ऊपर मुझे प्राणपण से परिश्रम करना पड़ा है।

इसके अनन्तर बहुत देर तक चुप रहने के बाद डॉ० मोरो उठ खड़े हुए और बोले—क्यों मि० प्रेन्डिक, अब भी क्या मुझ से डरते हैं?

मैंने उनकी ओर देखा। देख पड़े केवल उनके सफेद बाल, शुभ्र कान्ति और शान्त, स्थिर दृष्टि। आत्मस्थ, प्रशान्त और सुडौल अंग-सौष्ठव ने उनमें जो गंभीरता ला दी है, उसे सौंदर्य का ही दूसरा नाम कहा जा सकता है। अन्यथा वह एक आराम-पसंद साधारण वृद्ध भले आदमी के समगोत्री ही जान पड़ते। मैं काँप उठा। उनके प्रश्न के उत्तर में केवल दोनों रिवाल्वर उठाकर उन्हें लौटा दिये।

"इन्हें अपने ही पास रहने दें," जम्हाई लेते-लेते डॉ० मोरो ने कहा। इसी सिलसिले में बोले—"इन दो दिनों में आप को बड़ा कष्ट

मिला है। इस समय आपको अच्छी तरह नींद भर सोने की ज़रूरत है। ख़ैर, अच्छा ही हुआ, मामला साफ़ हो गया। अच्छा, अब चलता हूँ।"

जरा इधर-उधर करके भीतरवाले दरवाजे से वह अपनी कोठरी में चले गये। साथ-ही-साथ मैंने बाहर के दरवाजे में चाभी लगा दी।

कुछ देर निर्विकार भाव से बैठा रहा। देह थकी हुई थी। अनुभूति तक क्लान्त (बेदम) हो रही थी। इतनी क्लान्त कि पूर्वापर सारी बातें सोचने की क्षमता तक नहीं बाकी थी।

काले रंग की खिड़की, जैसे आँखें निकाले एकटक मेरी ओर घूर रही थी। किसी तरह रोशनी बुझाकर अपनी टूट की खाट पर लेट गया, साथ-ही-साथ बेख़बर सो गया।

१५

पशु-मनुष्य की बातें

दूसरे दिन सवेरे आँख खुली। जागने के साथ-ही-साथ डॉ० मोरो का कल का भाषण अक्षर-अक्षर स्मरण हो आया। शय्या से उठकर दरवाजे की जाँच की, तो ताला ठीक बन्द पाया। इस के बाद खिड़की के सीखचों को खींचकर देखा और यह जानकर कि कोई बलवान् प्राणी भी उन्हें आसानी से निकाल नहीं सकता, उधर से निश्चिन्त हो गया। जब से मुझे मालूम हुआ कि ये देखने में मनुष्य-जैसे प्राणी असल में मनुष्याकार दानवों के सिवा और कुछ नहीं हैं, तभी से इनके सम्बन्ध में न जाने कैसी एक अस्पष्ट अनिष्ट की धारणा मेरे मन में जम गई, जिसकी तुलना में सुनिर्दिष्ट भय भी सौगुना अच्छा। इसी समय बाहर के दरवाजे को किसी ने हाथ से खटखटाया। साथ-ही-साथ म्लिङ् के कण्ठ का स्वर सुनाई दिया। चट से एक रिवाल्वर जेब में डालकर उस पर हाथ रक्खे हुए धीरे-धीरे जाकर मैंने दरवाज़ा खोल दिया।

म्लिङ् ने खींच-खींचकर कहा—गुड—मार्निङ्ग—सर !

और दिनों की तरह फल-मूल तो थे ही, उनके साथ आज नाश्ते में वह थोड़ा-सा अधपका खरगोश का मांस भी लाया था।

उसके पीछे-ही-पीछे मांटगोमरी भी दाख़िल हुए। मेरे हाथ पर नज़र पड़ते ही वह मुस्किराये।

पूमा को उस दिन विश्राम करने दिया गया था। उसके घाव सुखाना था। लेकिन तो भी डॉ० मोरो हम लोगों के साथ भोजन में शामिल नहीं हुए। वे अत्यन्त निर्जनता-प्रिय हैं।

टापू के इन मनुष्यों के जीवन-वृत्त के सम्बन्ध में ठीक धारणा करने के उद्देश्य से मैं मांटगोमरी के साथ उनके बारे में आलोचना करने लगा। पहले ही मैंने पूछा—अच्छा, जो एक-एक करके अनेक दानव आप लोगों ने तैयार किये हैं, ये आपस में अथवा आपके और डॉ० मोरो के ऊपर कभी हमला तो नहीं करते? किस तरह आप लोगों ने इन्हें बहला रक्खा है?

मांटगोमरी ने कहा—इन लोगों की बुद्धि-वृत्ति अब भी एक सीमा में बँधी हुई है; उसके बाहर ये कुछ सोच ही नहीं सकते। हालाँकि उत्तरोत्तर परवर्ती जीव अधिक उन्नत बुद्धि का परिचय दे रहे हैं और उनका पशुत्व भी क्रमशः अपने को प्रकट करने का प्रयत्न कर रहा है, लेकिन डॉ० मोरो ने कुछ बँधी हुई धारणाएँ उनके मन में जमा दी हैं; उनकी कल्पनाशक्ति वहीं तक सीमाबद्ध है। उनको सम्मोहित कर दिया गया है। उनको सिखाया गया है कि कुछ चीज़ें एकदम असंभव हैं और कुछ काम करना बिल्कुल ही उचित नहीं है। ये सब धारणाएँ उनके मन में पूर्णतया गहरी उतर गई हैं। इसके बाहर कुछ किया जा सकता है, यह उनकी कल्पना में ही नहीं आ सकता। लेकिन देखा यह जाता है कि जिन-जिन बातों का अभ्यास उनमें जन्मजात या स्वभाव-सिद्ध है, और हम मनुष्यों के सुख, स्वच्छन्दता अथवा निरापद होने के

प्रतिकूल हैं, उन सब बातों के अभ्यास को दूर करने में हम लोगों को ठीक उतनी सफलता नहीं मिली। उनके लिए कुछ आईन बना दिये गये हैं। मैंने उन्हें वह आईन दोहराते सुना है। वह आईन उनकी अस्थिमज्जागत विद्रोहपरायण पशुवृत्ति के प्रतिकूल पड़ता है। इसीलिए उस आईन के बारे में उनके मनमें एक दुविधा, एक द्वन्द्व जाग उठता है। वे जल्दी-जल्दी और बार-बार उसकी आवृत्ति करते हैं और लगभग साथ-ही-साथ चुरा-छिपाकर उसको तोड़ते भी हैं। हम लोग सदा इस ओर सतर्क दृष्टि रखते हैं कि ये लोग रक्त का स्वाद न पाने पावें। ख़ासकर रात को ही पशुत्व प्रबल होकर उनमें दिखाई देता है। तब ऐड्वंचर का नशा-सा उन पर सवार हो जाता है। उस समय आईन का बन्धन उन्हें बाँधकर नहीं रख सकता। यह वृत्ति मादा पशु-मानवों में ही अपेक्षाकृत प्रबल पाई जाती है। रात के अँधेरे में ऐसे बहुत से काम वे कर बैठते हैं, जिनकी दिन के प्रकाश में कल्पना करना भी उनके लिए असंभव है।

इस टापू और उसमें रहनेवालों के बारे में मांटगोमरी से जो कुछ सुना, उसका अब मैं अपनी भाषा में ही वर्णन करता हूँ। पहले दिन रात को चीता-मनुष्य ने क्यों मेरा पीछा किया था, यह इतनी देर में मेरी समझ में आ गया। मगर हाँ, इन कई दिनों के बीच, जब से मैं यहाँ आया, उन्होंने बहुत अधिक आईन के ख़िलाफ़ आचरण नहीं किया। जो कुछ किया भी है, वह दिन के प्रकाश में नहीं। दिन को वे आईन के सूत्रों को रटते और उनका यथेष्ट आदर करते हैं।

हमारा यह टापू नीचा और बहुत छोटा है; सब मिलाकर सात-आठ वर्ग-मील होगा *। इसके तीन ओर प्रबाल पर्वत की श्रेणी (कतार)

---

* आजकल जिसे नोबल्स टापू कहते हैं, उसके साथ यह वर्णन अक्षर-अक्षर मिल जाता है।

हैं। ज्वालामुखी के उत्पात से ही इस टापू का जन्म हुआ है। उत्तर ओर कई एक धुआँ निकलने के गढ़े या बड़े छिद्र हैं, और गर्म पानी का एक झरना है। ये दोनों चीज़ें इसके जन्म की कहानी के प्रमाण-स्वरूप अब भी यहाँ मौजूद हैं। अब भी यहाँ रह-रहकर भूचाल का अनुभव होता है और भाप के जमा होने पर धुएँ की कुंडली बीच-बीच में लहरा उठती है। लेकिन बस यहीं तक। यहाँ पशु-मानुष सब मिलाकर साठ से अधिक हैं। इनके सिवा अनेक खूनी जानवर भी हैं, जिन्हें मनुष्य की आकृति नहीं दी गई।

सब मिलाकर एक सौ बीस प्राणियों को मनुष्य की आकृति दी जा चुकी है। लेकिन उनमें से अधिकांश मर गये हैं, और बहुतों को लाचार होकर मार डालना पड़ा है; क्योंकि वे हानि पहुँचाने लगे थे। उनके बाल-बच्चे वग़ैरह भी हुए थे, लेकिन अधिकतर वे भी नहीं बचे। जो कई एक जीवित रह गये, उनमें मनुष्य की-सी कोई वृत्ति नहीं देखी गई।

यहाँ नरों की अपेक्षा मादा जीवों की संख्या कम है। बहु-विवाह निषिद्ध कर दिया जाने पर भी सर्वदा उसे मानकर चलना ये नहीं चाहते। इनमें कई एक बातें ध्यान देने योग्य हैं। सब से अधिक पहले इस बात पर नज़र पड़ती है कि इनके पैर शरीर की तुलना में बहुत ही भद्दे लगनेवाले अत्यन्त छोटे-छोटे हैं। किन्तु सौन्दर्य के सम्बन्ध में मनुष्यों की धारणा अपेक्षाकृत भिन्न-भिन्न प्रकार की है! इन विचित्र आकार के प्राणियों को देखते-देखते मैं इतना अभ्यस्त हो गया हूँ कि अपनी लम्बी टाँगें और जाँघें मुझे ही बहुत भद्दी और बेमेल जान पड़ने लगी हैं। उन प्राणियों का मस्तक आगे की ओर झुका हुआ है और उनकी रीढ़ की हड्डी भी असली मनुष्य की तरह सीधी नहीं होती। जिस सीधी रीढ़ ने मनुष्य की देह में गठन-सौन्दर्य

ला दिया है, वह वानर-मनुष्य तक के शरीर में नहीं है। इसके बाद ही उनके मुख पर ध्यान जाता है। प्रायः सभी की जबड़े की हड्डियाँ ऊँची हैं; कानों की बनावट बेतुकी है; नाक बहुत बड़ी है; बाल मोटे-मोटे और खड़े-खड़े हैं; उनकी दृष्टि या बैठक बिलकुल ही अस्वाभाविक है। उनमें कोई मनुष्य की तरह हँस नहीं सकता। केवल वह वानर-मनुष्य किचकिच करके हँसने की-सी चेष्टा करता जान पड़ता है। स्थूल रूप से इन सब बातों के सिवा उनमें कोई आकृतिगत विशेष समानता भी नहीं है। प्रत्येक प्राणी में उसके पहले के पशु-जीवन की कुछ-कुछ विशेषता रह गई है, जिसके फलस्वरूप उनमें किसी के चेहरे से किसी का चेहरा नहीं मिलता। यह सच है कि उनकी पहले की पशु-आकृति विकृत हो गई है, लेकिन एकदम गायब नहीं हुई। उन्हें देखते ही यह समझ में आ जाता है कि उनमें पहले कौन चीता था, कौन शूकर था, कौन साँड था, या और कोई जानवर था। उनकी आवाज़ में भी कुछ अन्तर है। प्रायः उनके हाथ गढ़ने में त्रुटि रह जाती है। यद्यपि उनमें से दो-एक प्राणियों के हाथों की मानव-सुलभ गढ़न देखकर मुझे विस्मय हुआ है, लेकिन उन सभी के हाथों की उँगलियाँ ठीक नहीं बनीं; उनमें ऐब रह गया है। उनके हाथों में प्रायः पाँच उँगलियाँ नहीं रहतीं। उनके नाखून भी बेतुके ढंग के होते हैं।

उनमें सबसे बढ़कर शक्तिशाली चीता-मानव और अन्य एक प्राणी है, जो हायना और शूकर के मेल से तैयार किया गया है। लेकिन जो तीन साँड-मानव लंच खेकर हम लोगों को जहाज से इस टापू में लाये थे, वे इन दोनों से लम्बे आकार के हैं। इनके बाद है वह सफेद रोएँवाला प्राणी और एक सैटर, जो वानर और बकरे के मेल से तैयार किया गया है। और तीन शूकर-मानव हैं, एक मादा शूकर है और एक घोड़ी और गैंडे के मेल से बना प्राणी है; और

भी अनेक मादा प्राणी हैं ; किन्तु उनके स्वरूप का निर्णय नहीं किया जा सकता। अनेक भेड़िया-मनुष्य हैं ; एक साँड़-भालू है और एक सेन्ट बर्नार्ड जाति का कुत्ता-मनुष्य भी है। वानर-मनुष्य का वर्णन पहले ही किया जा चुका है। और एक बूढ़ी लोमड़ी-भालू है। जैसी उसकी सूरत भद्दी भयावनी है, वैसी ही उसके सारे शरीर से दुर्गन्ध आती है। देखते ही घिन मालूम होती है। लेकिन सुना है, वह आईन की विशेष भक्त है! और भी अनेक छोटे-छोटे प्राणी हैं। सब देखने में अद्‌भुत हैं ; जैसे वह स्लाथ, जिसका जिक्र पहले हो चुका है।

पहलेपहल उन्हें देखकर बड़ा डर लगता था। जान पड़ता था, अब भी वे पहले के भयानक पशु ही हैं। लेकिन क्रमशः अनजाने ही वह भाव मन से दूर होने लगा। मांटगोमरी तो उन्हें प्यार भी पूरी तौर से करते थे। इतने दिन एकसाथ रहने के फल-स्वरूप यह छूत मुझे भी लग गई थी। इतने दिन एकसाथ उठने-बैठने के कारण अब मांटगोमरी को ये जीव अस्वाभाविक नहीं लगते, उन्हें अपना लंदन का जीवन अब जैसे एक गौरवमय असंभव बात-सी ही जान पड़ता है। अफ्रीका का एक प्राणियों को बेचने का रोज़गार करनेवाला आदमी डॉ० मोरो का एजेन्ट है। साल में दो-एक बार मांटगोमरी को अफ्रीका जाना पड़ता है। उस गाँव में, जहाँ वह एजेन्ट रहता है, मांट-गोमरी ने जिन स्पेन के वर्णसंकर जाति के लोगों को देखा है, उनमें उन्होंने मनुष्यत्व का अच्छा नमूना नहीं पाया। पशु-मनुष्यों को पहले देखकर मुझे जैसे ये अद्‌भुत जान पड़े थे, जहाज के स्वाभाविक मनुष्य भी मांटगोमरी को वैसे ही लगे थे। विश्री लम्बे-लम्बे पैर, चौड़ा माथा। जान पड़ा था, ये सन्देहपरायण, अत्यन्त निष्ठुर हैं। उनमें ममता का लेश भी नहीं है। कहना न होगा, मांटगोमरी को वे मनुष्य अच्छे नहीं लगे। मैं जो उन्हें अच्छा लगा, इसका कारण शायद यह हो कि

उन्होंने मेरे प्राण बचाये थे।

म्लिङ् और पशु-मानवों के साथ नहीं रहता था। चबूतरे के भीतर ही, पीछे की ओर एक रहने की जगह उसके लिए बना दी गई थी। वहीं वह रहता था। यह बात नहीं कि उसमें बुद्धि या सूझबूझ अधिक थी; वानर-मनुष्य उससे अधिक चालाक चतुर था। लेकिन वह खूब शान्त प्रकृति का था और सब पशु-मानवों में वही सबसे अधिक देखने में मनुष्य-जैसा लगता था। उसने रसोई बनाना सीख लिया था। छोटे-मोटे घर-गिरस्ती के काम भी वह कर सकता था। म्लिङ् चतुर कारीगर मोरो का एक जटिल उपहार था। भालू के साथ कुत्ते और साँड का जोड़ा लगाकर निरन्तर बहुत परिश्रम करने के बाद उसकी सृष्टि की जा सकी थी। वह मांटगोमरी का अत्यन्त अनुगत था। हर घड़ी उनके पीछे-पीछे घूमते फिरने में ही उसे आनन्द मिलता था। मांटगोमरी भी बीच-बीच में उसकी पीठ थपथपाकर उसे दुलराते थे हँसी के सुर में कितने ही मजेदार नाम लेकर उसे पुकारते थे। इससे; वह बहुत ही प्रसन्न होता था! बीच-बीच में, खासकर नशे के दौरान में, मांटगोमरी उसके प्रति बुरा व्यवहार भी कर बैठते थे; लेकिन वह इसका बुरा न मानता था।

क्रमशः मैं भी पशु-मानवों के साथ रहने में अभ्यस्त हो गया। जो निरन्तर असंगति और कदर्यता उनमें भरी हुई थी, वह देखते-देखते मेरी दृष्टि में स्वाभाविक बन गई। जान पड़ता है, यह नियम सभी बातों में लागू होता है। पारिपार्श्विक (आस-पास) की हवा कुछ समय बीतने पर, सभी बातों में सभी के आकर लग जाती है। मांट-गोमरी या मोरो कोई भी जिसे स्वाभाविक मनुष्य कहा जा सकता है वह नहीं हैं। आस-पास इन अद्भुत पशु-मनुष्यों को देखकर साधारण, मनुष्य के सम्बन्ध में मेरी भी धारणा पलटने लगी। विचित्र किंभूत-

किमाकार साँड़-मनुष्यों को देखकर मैं अपने मन से प्रश्न करता था कि साधारण श्रमिक के साथ इनका भेद किस बात में है ? बहुत सोचकर भी इस प्रश्न का ठीक उत्तर मैं नहीं पाता था। मादा लोमड़ी-भालू का चेहरा अथवा आचरण देखकर जान पड़ता था, मैंने किसी गली-कूचे में इसे जैसे पहले कभी देखा है।

किन्तु तो भी बीच-बीच में इन प्राणियों का पशुत्व मेरे सामने खुल जाता था। कोई कदर्य कुबड़ा पशु-मनुष्य गुफा के द्वार पर बैठा जम्हाई ले रहा है, दोनों हाथ दोनों ओर फैला दिये हैं, उसके कैंची की तरह धारदार दाँत दिखाई पड़ रहे हैं। अथवा किसी तंग पगडंडी पर बैठा हुआ, सफेद पोशाक पहने, कोई छोटा-सा मादा पशु कठोर दृष्टि से ताक रहा है। एकाएक उसकी आँखों की लम्बी पुतलियाँ देख पड़ीं। नीचे की ओर नज़र पड़ते ही टेढ़े-टेढ़े बेतुके नुकीले नाखूनों से पोशाक का अगला हिस्सा थामे रहने की उसकी अद्भुत अंगभंगी देख पड़ी। मालूम नहीं क्यों, पहलेपहल जान पड़ता था, ये मादा पशु जैसे अपनी बदसूरती अथवा कदर्यता के बारे में सजग हैं। बाहरी वस्त्रों को सँवारने या ठीक रखने के सम्बन्ध में उनका यत्न जैसे साधारण मनुष्य से भी अधिक है।

१६

रक्त का स्वाद

मेरी नौसिखिया लेखनी मुझे कहानी के मूल-सूत्र से बहुत दूर ले आई है। उस दिन सबेरे का नाश्ता करने के बाद मांटगोमरी के साथ धुआँ निकलने के रास्ते और गर्म झरने के उद्गम-स्थान का पता लगाने के लिए मैं निकल पड़ा। जाते समय चाबुक और रिवाल्वर साथ लेना नहीं भूला। कुछ दूर जाते-जाते एकाएक एक घने पत्तों-वाले छोटे पौधों के झुरमुट की आड़ से किसी खरगोश का आर्तनाद सुन पड़ा। रुककर, कान लगाकर सुनने की चेष्टा की; किन्तु फिर वह शब्द नही सुन पड़ा। फिर आगे बढ़ा। राह में चलते-चलते घटनाओं को भूल गया। कई एक छोटे-छोटे जानवर हमारे सामने से उछलते-उछलते उसी झुरमुट के भीतर चले गये। उनका रंग ललाई लिये था और पिछले पैर लम्बे-लम्बे थे। उनके प्रति मेरी दृष्टि आकर्षित करते हुए मांट-गोमरी बोले—पशु-मानवों के बच्चों से ये प्राणी तैयार किये गये हैं। मैंने सोचा था, इनका मांस खाने के काम आवेगा; लेकिन ऐसा न

हो सका। खरगोशों की तरह ये भी अपने बच्चों को खा जाते हैं।

इन जानवरों में से दो-एक पहले ही मैं देख चुका था। एक बार चीता-मनुष्य के भय से जब मैं भागा था तब, और दुबारा जब कल मोरो ने मेरा पीछा किया था। उछलते-उछलते एकाएक उनमें से एक, एक गढ़े के भीतर गिर गया। ऊपर निकलने के पहले ही हमने जाकर उसे पकड़ लिया। बिलाव की तरह वह फुफकारने, नकोटे मारने और पैर फेंकने लगा। दो-एक बार उसने काटने की चेष्टा भी की। लेकिन उसके दाँत नरम थे, जिससे वह हमारा कुछ नहीं कर सका।

मांटगोमरी ने कहा—ये बहुत साफ़-सुथरे रहते हैं। घास या पत्तों को भी नहीं नोचते। मैंने सोचा, तब तो खरगोश की जगह इन्हीं को भले आदमियों के बागों में जगह मिलनी चाहिए।

कुछ और आगे जाते ही देखा, एक बड़े-से पेड़ की छाल में नाख़ून का गहरा निशान है। मांटगोमरी ने वह मुझे दिखाकर कहा—देखिये, ये लोग आईन को कितना मानते हैं।—वाह, आईन के ऊपर भारी भक्ति देख पड़ती है!

इसके बाद ही सैटर और वानर-मनुष्य के साथ हमारी भेंट हुई। जान पड़ता है, सैटर डॉ० मोरो की माइथालोजी (Mythology) का स्मृति-चिह्न है! उसके मुख की अभिव्यक्ति कुछ-कुछ भेड़े की-सी है। हिब्रू जाति के एक श्रेणी के मनुष्यों का मुख जैसा होता है, उससे मिलता-जुलता है। गले का स्वर कर्कश और तीक्ष्ण है। किसी फल का छिलका चबा रहा था। दोनो प्राणियों ने मांटगोमरी को सैलूट करके कहा—स्वागतम् द्वितीय चाबुकधारी।

मांटगोमरी ने कहा—अब तीसरे भी एक और आ गये हैं। उनके भी हाथ में चाबुक है। इसलिए सावधान!

वानर-मनुष्य ने कहा—उसे क्या तैयार नहीं किया गया? उसने

जो कहा था, उसे तैयार किया गया है ?

सैटर ने कौतूहल की दृष्टि से मेरी ओर देखा। बोला—तृतीय चाबुकधारी तो रोते-रोते समुद्र के जल में उतर गया था। उसका मुख पतला और सफ़ेद है।

मांटगोमरी ने कहा—उनके पास एक लम्बा पतला चाबुक है।

सैटर ने कहा—कल उसके ख़ून निकला था, वह रोता था। आपके कभी ख़ून नहीं निकलता, आप कभी रोते नहीं। प्रभु (मोरो) के भी कभी ख़ून नहीं निकलता, वह भी कभी नहीं रोते।

खीझकर मांटगोमरी कह उठे—दूर हो बदमाश। सावधान नहीं रहेगा तो अब की तेरे भी ख़ून निकलेगा, तुझे भी रोना पड़ेगा।

इस पर वानर-मनुष्य कह उठा—उसके पाँच उँगलियाँ हैं। वह मेरे ही जैसा पाँच-मनुष्य है।

मांटगोमरी ने इस पर कोई ध्यान न देकर मुझसे कहा—चलिए मि० प्रेनडिक, चला जाय।

सैटर और वानर-मानव हम लोगों को लक्ष्य करके आपस में कुछ बातें करने लगे। सैटर ने कहा—वह बात नहीं कर सकता। मनुष्य बात कर सकता है।

वानर-मनुष्य ने कहा—कल उसने बात की थी। मुझ से पूछा था—क्या खायगा ? वह नहीं जानता कि क्या खाया जाता है।

अस्पष्ट स्वर में वे और भी कुछ बातें करते रहे, इसके बाद सैटर ने जैसे हँसने की चेष्टा की।

लौटने के बाद उस दिन हमने देखा, राह में एक मरा हुआ खरगोश पड़ा है। बेचारे को किसी प्राणी ने टुकड़े-टुकड़े करके नोच डाला है। उसके अंजर-पंजर इधर-उधर पड़े हैं। उसकी रीढ़ तक चबा डाली गई है। मांटगोमरी ठिठककर खड़े हो गये।

उसका एक टुकड़ा उठाकर उसकी परीक्षा करते-करते मांटगोमरी कह उठे—ग़ज़ब हो गया ! कैसा अनर्थ है !

मैंने कहा—किसी मांसाहारी प्राणी का पहले का अभ्यास फिर लौट आया है। देखिये, इसकी रीढ़ में उसके गहरे दाँतों के निशान बने हैं।

विवर्ण मुख से एकटक उधर ताकते रहकर मांटगोमरी ने धीरे-धीरे कहा—ना, यह तो बहुत ही ख़राब बात है।

मैंने कहा—पहलेपहल जिस दिन मैं इस टापू में आया था, उस दिन भी मैंने इसी तरह का एक दृश्य देखा था।

मांटगोमरी ने चौंककर पूछा—ऍं ! क्या देखा था ?

मैंने कहा—एक मरा हुआ खरगोश। उसका सिर मरोड़कर तोड़ डाला गया था।

मांटगोमरी ने पूछा—आप जिस दिन आये थे, उस दिन ?

मैंने कहा—हाँ, उस दिन संध्या के समय, चबूतरे के पीछे जो पौधों का झुरमुट है, वहीं देखा था।

मांटगोमरी उठ खड़े हुए।

मैंने कहा— उस दिन यह काम किसने किया था, इस बारे में मैंने एक धारणा भी बना ली है। उस खरगोश को देखने के पहले मैंने देखा, एक दानव-सा प्राणी नदी में पानी पी रहा था।

मांटगोमरी ने पूछा—मुँह डालकर पी रहा था ?

मैंने कहा—हाँ।

मांटगोमरी ने कहा—वाह, "पानी मुँह डालकर पीना नहीं—यही तो आईन है।" ख़ूब, आईन के ऊपर इन लोगों की बड़ी श्रद्धा देख पड़ती है ! ख़ासकर जब डॉ० मोरो इन लोगों के पास नहीं रहते।

मैंने कहा—और उसी प्राणी ने फिर उस दिन मेरा पीछा किया।

मांटगोमरी ने आश्चर्य के साथ कहा—ऐं! तब तो सब बात मेरी समझ में आ गई। किसी प्राणी को इस तरह मार डालने के बाद ही ये लोग उसका खून पी लेते हैं। उसके बाद उन्हें जोर की प्यास लगती है, और वे पानी पीने के लिए दौड़ते हैं। खून की चाट—आप समझते ही होंगे, कैसी भयानक होती है? अच्छा, उस प्राणी को आप फिर देखें तो पहचान लेंगे क्या?

इतना कहकर उन्होंने एक बार चारों ओर नज़र दौड़ाई। इधर-उधर घना छायावाले घने-घने झाड़ी-झुरमुट थे। उन झाड़ियों की आड़ में छिपकर शिकार की ताक लगाने की अच्छी सुविधा थी।

"खून की चाट"—मांटगोमरी फिर कह उठे। रिवाल्वर निकालकर देखा, उसमें सब गोलियाँ भरी हैं या नहीं; इसके बाद उसे फिर जेब में रख लिया।

मैंने उनके पूर्वोक्त प्रश्न के उत्तर में कहा—हाँ, जान पड़ता है, उसे देखकर पहचान लूँगा। मैंने उसके एक पत्थर जोर से खींच मारा था, इसलिए निश्चय ही उसके माथे पर घाव का चिह्न होगा।

मांटगोमरी ने कहा—लेकिन हमें यह प्रमाणित करना होगा कि उसी ने इस खरगोश को मारा है।—न, उन्हें इस टापू में न लाया जाता तो अच्छा होता।

वहीं खड़े-खड़े मांटगोमरी तन्मय होकर खरगोश के ध्वंसावशिष्ट शरीर को ताकते रहे। मैं कुछ आगे बढ़ गया और उन्हें पुकारा—चले आइए!

मांटगोमरी को जैसे इतनी देर में होश आया। धीरे-धीरे

आगे बढ़ने लगे। पास आकर बहुत धीमे स्वर में बोले—उन सब में तो यह धारणा दृढ़ रहनी चाहिए कि किसी जीवित प्राणी का रक्त या मांस उन्हें नहीं खाना-पीना चाहिए। लेकिन अगर उनमें से कोई दैवसंयोग से रक्त का स्वाद पा ही गया है तो......

कहते-कहते वह रुक गये। हम लोग और भी कुछ आगे बढ़ गये। हम दोनों चुप थे। कुछ देर बाद मांटगोमरी ही बोले—क्या हुआ, कैसे हुआ, यह ठीक-ठीक मेरी समझ में नहीं आ रहा है। उस दिन मैंने एक बड़ी वेवकूफी का काम कर डाला। म्लिङ् को दिखा दिया कि किस तरह खरगोश की खाल उतारी जाती है और उसका मांस पकाया जाता है। बड़ी भूल हो गई। मैंने उस दिन देखा, तो वह अपना हाथ चाट रहा था।।......लेकिन तब मैंने यहाँ तक नहीं सोचा था।

जरा रुककर वह कहने लगे—इसका कुछ उपाय करना ही होगा। अभी जाकर मोरो को सब बतलाना होगा।

हम लोग लौट आये। यही एक चिन्ता राह भर मांटगोमरी पर सवार रही। सब कुछ सुनकर डॉ० मोरो मांटगोमरी से भी अधिक घबराये, चिंतित हो उठे। उन लोगों की घबराहट देखकर मैं चिन्तित हो उठा।

मोरो ने कहा—जिसमें फिर कोई ऐसा काम न करे, इसके लिए हमें फौरन् कुछ करना होगा। इसमें मुझे तनिक भी सन्देह नहीं कि यह उस चीता-मनुष्य ही का काम है। लेकिन इसे प्रमाणित कैसे करूँगा? मि० मांटगोमरी, अगर तुम अपने मांस खाने के शौक को कुछ दिनों के लिए भी छोड़ सकते, तो शायद आज यह गड़बड़ न होती। कौन जाने, इसी घटना के फल-स्वरूप शायद किसी दिन हम लोगों को भारी मुसीबत में पड़ना पड़े।

मांटगोमरी ने कहा—बेशक, बड़ी बेवकूफी मुझ से हुई! लेकिन

अब तो उसके लिए अफसोस करने से कोई फायदा नहीं। इसके सिवा आपने ही तो उस दिन कहा था कि अब हम लोग मांस खाना शुरू कर सकते हैं।

मोरो ने कहा—खैर, जो हुआ सो हुआ ; हम लोगों को आज ही उन लोगों की बस्ती में जाना होगा। मि० मांटगोमरी, हमारे चले जाने पर म्लिङ् यहाँ सब सँभाले तो रह सकेगा ?

मांटगोमरी ने कहा—क्या जानें, म्लिङ् के बारे में इतना ज़ोर देकर मैं कुछ नहीं कह सकता। अभी तक मैं उसे अच्छी तरह समझ नहीं पाया हूँ।

उसी दिन तीसरे पहर मोरो, मांटगोमरी, मैं और म्लिङ्, सब उन पशु मनुष्यों की बस्ती की ओर चल पड़े। हम तीनों आदमी सशस्त्र थे ; और म्लिङ् अपनी लकड़ी काटने की कुल्हाड़ी और कुछ रस्सी अपने हाथों में लिये था।

मोरो ने एक बिगुल कंधे में लटका लिया था। मांटगोमरी ने मुझसे कहा—अब आप सब प्राणियों को एक जगह जमा होते देखेंगे। यह परेड एक देखने की चीज़ होगी।

मोरो ने राह भर एक भी बात नहीं की ; असीम गंभीर बने हुए राह में चलने लगे। गुहा-पथ को नाँघकर हम आगे बढ़ने लगे। नीचे गरम पानी का झरना बह रहा था। बेंत के जंगल की टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी को नाँघकर एक लम्बी-चौड़ी गोल जगह पर हम लोग जा पहुँचे। गंधक-जैसा एक हल्दी के रंग का पदार्थ वहाँ चारों ओर फैला हुआ था। झाड़-झंखाड़ से भरे हुए किनारे से समुद्र दिखाई देता था। इसके बाद एक गोल स्टेज (रंगभूमि) के-से आकार की एक जगह पर आकर हम लोग थम गये। तप रहे तीसरे पहर के सिमटे हुए सन्नाटे को छिन्न-भिन्न करके मोरो का बिगुल जोर से बज उठा। हाँ, मोरो के

फुप्फुस में बेशक ज़ोर है ! बिगुल की आवाज़ ध्वनित-प्रतिध्वनित होते-होते ऊँची-से-ऊँची हो उठी ।

"आह" कहकर, चैन की साँस लेकर मोरो ने बिगुल फिर कंधे पर लटका लिया ।

साथ-ही-साथ पीले बेंत-वन के भीतर खसखसाहट होने लगी । दूर के घने हरियाले जंगल से अनेक प्राणियों के गले का स्वर भी सुन पड़ा । तीन-चार जगह से कुरूप पशु-मनुष्य एक-एक करके निकलने और उस स्थान पर जमा होने लगे ।

पेड़-पत्तों की आड़ से गर्म तपी हुई धूल के ऊपर दौड़ते हुए वे सब आकर उपस्थित हुए । मुझे बहुत ही डर मालूम होने लगा । लेकिन मोरो और मांटगोमरी वैसे ही स्थिर खड़े रहे । लाचार होकर मुझे भी उनके साथ वैसे ही खड़े रहना पड़ा । सब प्राणियों के आगे सैटर था । उसकी छाया पृथ्वी पर ठीक पड़ रही थी , लेकिन तो भी वह मुझे जैसे इस पृथ्वी का जीव नहीं जान पड़ता था । वह पैरों के खुरों से धूल उड़ाने लगा । इसके बाद झाड़ी के भीतर से घास चबाते-चबाते एक बड़ा तगड़ा-सा प्राणी निकल आया—वह बहुत कुछ घोड़े और गैंडे का सम्मिश्रण जान पड़ा । इसके बाद आया एक मादा सुअर और एक-दो मादा भेड़िये । इसके बाद आई डायन-सी एक मादा, जिसको मोरो ने लोमड़ी और भालू के मेल से तैयार किया था । उसकी आँखें लाल-लाल और मुँह का रंग भी लाल था । उसके पीछे-पीछे बाकी और सब प्राणी भी दौड़ते-उछलते आकर उपस्थित हुए । पास आकर सभी ने सिर नवाकर मोरो के प्रति सम्मान प्रकट किया । फिर अपनी अपनी आवाज़ में सुर करके अपने आईन के अन्तिम अंश की आवृत्ति करने लगे—

"आघात करता है जो हाथ—वह भी 'उन' का है ।"

"आराम करता है जो हाथ—वह भी 'उन' का है।"

आईन की आवृत्ति करते-करते वे सब आगे बढ़ रहे थे। अंत को हम लोगों से लगभग तीस गज़ के फासले पर रुक गये। इसके बाद घुटने टेककर और कोहनियों के बल अद्भुत अंगभंगी से बैठकर धूल उठा-उठाकर अपने सिरों पर बिखेरने लगे। इस विचित्र दृश्य की आप कल्पना कीजिए! नीली पोशाक पहने हम तीन आदमी खड़े हैं। साथ में म्लिङ् है। जल रहे नीले आकाश के नीचे बड़ा-सा साफ मैदान है। पीली धूल के ऊपर धूप आकर पड़ रही है। हमारे चारों ओर गोल घेरे में बैठे हुए ये विकल अंगवाले प्राणी, अद्भुत मुद्रा से आईन का पाठ कर रहे हैं। उनमें से कई एक मनुष्य-जैसे देख पड़ने पर भी, उनकी यह अद्भुत अंगभंगी बिलकुल अमानुषिक प्रतीत होती है। जान पड़ता है, वे इस पृथ्वी के नहीं, स्वप्न-लोक के विचित्र प्राणी हैं। हमारे सामने एक ओर बेंत का वन है और दूसरी ओर ताड़ के पेड़ों की कतार। उस कतार के बीच से प्रशान्त महासागर की अस्पष्ट सीमा-रेखा देख पड़ती है।

"बासठ, तिरसट"—मोरो गिनने लगे। बोले—"और चार जने कहाँ हैं?"

मैं कह उठा—चीता-मानव तो देख नहीं पड़ता।

बिगुल निकालकर मोरो ने फिर ज़ोर से बजाया। अव्यक्त यंत्रणा के भय से कातर होकर सभी प्राणी धूल में लोट गये। इसके बाद बेंत की झाड़ी की आड़ से चुपके-चुपके चीता-मनुष्य निकल आया। मैंने देखा, उसके माथे पर मेरे पत्थर की चोट का चिह्न बना हुआ है। सबके अन्त में वानर-मनुष्य आकर उपस्थित हुआ। गरम धूल में अब तक लोटने-पोटने के फल-स्वरूप वे सब क्लान्त हो पड़े थे। वानर-मनुष्य के आते ही सब प्राणियों ने आग उगलती हुई दृष्टि से उसकी

ओर ताका।

वज्रगंभीर स्वर में मोरो कह उठे—रुको!

साथ-ही-साथ सब प्राणी स्तोत्र पढ़ना बन्द करके बैठ गये।

मोरो ने पूछा—आईन-रक्षक कहाँ है?

सफेद रोएँवाले आईन-रक्षक ने आगे आकर ज़मीन तक झुककर प्रणाम किया।

मोरो ने कहा—आईन कह जाओ।

साथ-ही-साथ सभी एक साथ घुटने टेककर बैठ गये, और हिल-हिलकर सुर से आईन का पाठ करने लगे। इसी के साथ रह-रहकर पंजों से धूल लेकर सिर पर बिखेरने लगे। सब एक सुर से कहने लगे—

"मुँह डालकर पानी पीना नहीं—यही तो आईन है—हम मनुष्य हैं।"

"मछली-मांस खाना नहीं—यही तो आईन है—हम मनुष्य हैं।"

मोरो "ठहरो!" कहकर गरज उठे।

मुझे जान पड़ा, सभी यह जानते हैं कि क्या घटना हुई है और उनको कैसा भयानक दण्ड मिलनेवाला है। एक-एक करके मैंने सब के मुँह देखे। उनकी जलती हुई आँखों में आतंक की छाया देख पड़ी। वे सभी वार-बार पलकें खोलते-मूँदते हुए एक अद्भुत कनखियों की नज़र से एक दूसरे की ओर देखने लगे। यह सोचकर मुझे आश्चर्य होता है कि मैंने पहले इन अद्भुत प्राणियों को कैसे मनुष्य समझ लिया था!

मोरो ने गरजकर कहा—आईन तोड़ा गया है!

सफेद रोएँवाला आकृतिहीन प्राणी बोल उठा—कोई नहीं बचेगा!

एक स्वर से सब चीख़ उठे—कोई नहीं बचेगा!

मोरो चिल्ला उठे—वह अपराधी कौन है?

सब के मुखों की ओर ताकते-ताकते मोरो ने चाबुक फटकारा

सड़क से । जान पड़ा, हायना-सुअर और चीता-मनुष्य के मुख पर कुछ विषाद की छाप देख पड़ी । मोरो थम गये, इसके बाद तीव्र दृष्टि से उन्होंने चीता-मनुष्य की ओर देखा । भय से सिमटकर सिटपिटाता हुआ वह प्राणी किसी तरह मोरो के आगे बढ़ आया—उसके चेहरे के भाव से मर्मभेदी यंत्रणा की याद प्रकट हो रही थी । बादल की तरह गरजकर मोरो कह उठे—वह अपराधी कौन है ?

आईन-रक्षक ने कहा—जो आईन को नहीं मानता, वह शैतान है !

मोरो ने मर्मभेदी दृष्टि से चीता-मनुष्य के चेहरे पर आँखें गड़ा दीं । फिर कहा—जो आईन तोड़ता है......

उनके स्वर में जैसे आनन्द उछल पड़ा ।

" वह यन्त्रणा के घर में फिर पहुँचाया जाता है । प्रभू, वह फिर यन्त्रणा के घर में पहुँचाया जाता है!"—सभी एक स्वर से कह उठे ।

वानर-मानुष भी किचिर-मिचिर करके कह उठा—वह फिर यंत्रणा के घर में पहुँचाया जाता है ; फिर यन्त्रणा के घर में पहुँयाचा जाता है !

जान पड़ा, यह दण्ड की व्यवस्था खूब उसके मन के माफ़िक हुई ।

चीता-मनुष्य की ओर ताककर मोरो ने कहा—सुना, सुना तुमने ?

मोरो की क्रूर दृष्टि फिरते ही चीता-मनुष्य एक दम सीधा होकर खड़ा होगया । मोरो ने फिर जैसे ही उसकी ओर ताका, वैसे ही जलती हुई नजर से दाँत निकालकर वह मोरो के ऊपर टूट पड़ा । कितना क्रोध के मारे आपे से बाहर होने पर, कितना आतंक के वशवर्ती होने पर, उसके लिए यह कल्पनातीत दुःसाहस का काम करना संभव था, यह शब्दों से नहीं समझाया जा सकता । कोई खूनी जानवर

जब घिर जाता है, बचने की कोई सूरत नहीं देखता, तभी वह सशस्त्र शिकारी पर—अपने साक्षात् काल पर—ऐसा आक्रमण करने का साहस करता है, जान पर खेल जाता है।

विस्मय से अवाक् होकर सभी उठ खड़े हुए। मैंने रिवाल्वर निकाल लिया। सिर उठाकर देखा, मोरो चीता मनुष्य की चपेट खाकर जमीन पर गिर पड़े हैं। पशु-मनुष्यों का वह कैसा वीभत्स चीत्कार था! हर एक इधर-उधर दौड़ रहा था। तो क्या सबने एक साथ विद्रोह की घोषणा कर दी? ज्वलंत दृष्टि से मेरी ओर ताककर चीता-मनुष्य उसी दम भाग खड़ा हुआ। म्लिङ् उसके पीछे-पीछे दौड़ा। हायना-सुअर के मुँह की ओर मैंने ताका। उद्दीपना और उत्तेजना के मारे उसकी दोनों पीली-पीली आँखें अंगारे की तरह चमक रही थीं। उसने इस तरह मेरी ओर ताका कि जान पड़ा, किसी भी क्षण वह मुझ पर आक्रमण कर सकता है! उसके पीछे से सैटर ने भी मेरी ओर आग उगलनेवाली नजर डाली। एकाएक मोरो की पिस्तौल गरज उठी। लाल आग की रेखा के साथ गोली निकल गई। साथ-ही-साथ पशु-मनुष्यों के दल उसी रेखा को लक्ष्य करके दौड़ने लगे। अभिभूत की तरह मैं भी सबके साथ चीता-मनुष्य के पीछे दौड़ने लगा।

यहीं तक मैं स्पष्ट करके कह सकता हूँ। चीता। मनुष्य के मोरो पर आक्रमण करने के बाद से ही मेरे होश-हवास जाते रहे, दिमाग ने जवाब दे दिया। सबके आगे म्लिङ् दौड़ रहा था, उसके पीछे मादा भेड़िया-मनुष्य लपलपाती हुई जीभ निकाले लंबे-लंबे डग भरते हुए दौड़ते जारहे थे। उत्तेजना के मारे सभी चीख रहे थे। उनके पीछे अनेक पशु-मनुष्यों के साथ डॉ० मोरो तेजी से चल रहे थे। उनकी हैट कहीं गिर गई थी, सिर के सफेद बाल अस्तव्यस्त हो रहे थे। हाथ में तना हुआ रिवाल्वर था। हायना-सुअर मेरे पास-पास चल रहा था

और रह-रहकर कनखियों से मेरी ओर देखता जाता था।

चीता-मानुष घनी बेंतों की झाड़ी को तोड़कर प्राणों के भय से बेतहाशा भाग रहा था। उसके पीछे ही म्लिङ् था। चीता-मनुष्य जैसे ही बेंतों की झाड़ी को नाँघ गया, वैसे ही बेंत की एक डाल छिटक कर जोर से म्लिङ् के मुख पर लगी। इतनी देर में हम सब भी उसी झाड़ी के पास पहुँच गये। एकाएक एक पगडंडी देख पड़ी। समझा, इसी राह से चीता-मनुष्य गया है। लगभग दो फर्लांग तक उसका पीछा करने के बाद एक बहुत ही घनी झाड़ी हमारा रास्ता रोककर खड़ी हो गई। उसके भीतर बड़ी मुश्किल से रास्ता करके हम लोग आगे बढ़ने लगे। काँटेदार डालियों की चोट से मुँह लहूलुहान होगया। पैरों में, गले में, जंगली लताएँ लिपटकर आगे बढ़ने में बाधा डाल रही थीं।

मेरी ओर ताककर भेड़िये ने कहा—कोई नहीं बचेगा!

शिकार पाने के आनन्द से उसका चेहरा दमक रहा था।

पथरीली राह से होकर फिर हम लोग पीछा करने लगे। कुछ दूर आगे जाते ही फिर चीता-मनुष्य दिखाई दिया। सचमुच वह चारों पैरों से भाग रहा था। भागते-भागते मुड़मुड़कर हम लोगों को देखता जाता था। उस समय भी चीता-मनुष्य के शरीर पर मनुष्य की पोशाक थी, मुख की आकृति भी मनुष्य की थी; किन्तु पूरे तौर से पशु की तरह वह भाग रहा था। जिस तरह गर्दन डालकर वह भाग रहा था, उस तरह शिकारी के पीछा करने पर पशु भागता है। एक पीले फूलवाले कँटीले पौधों के झुरमुट को एक ही छलांग में पार होकर चीता-मानव हम लोगों की नजरों से गायब हो गया।

इतनी देर दौड़ने के बाद हमारी चाल कुछ धीमी हो गई थी। तय पाया कि अब लाइन बाँधकर उसका पीछा करना होगा। हायना-

सुअर उस समय भी मेरे साथ लसा हुआ था; रह रहकर मेरी ओर ताकता और मुँह सिकोड़कर हँसता था।

पहाड़ के किनारे आकर चीता-मनुष्य की समझ में आया कि वह अन्तरीप (Cape) की ओर जा रहा है, जहाँ से उस दिन उसने मेरा पीछा किया था। उधर फँस जाने का ख़याल आते ही उसने वह रास्ता छोड़कर ऊँची घास के जंगल में प्रवेश किया, जहाँ वह छिप सकता था। लेकिन मांटगोमरी ने उसका रास्ता बदलना देख लिया था; अतएव उधर भी तेज़ी के साथ उस पर धावा बोल दिया गया।

हाँफते-हाँफते, पत्थरों की ठोकरें खाते-खाते, काँटों से क्षत-विक्षत होकर, लताओं और डालों की बाधाओं को हटाते, हम अपराधी चीता-मनुष्य का पीछा करने लगे। हायना-सुअर विकट हँसी हँसता हुआ मेरे पास-पास दौड़ता चला जा रहा था। सिर चक्कर खा रहा था, हृदय की धड़कन तेज़-से-तेज़ होती चली जा रही थी, परिश्रम से बुरा हाल हो रहा था—अधमरा हो चुका था, लेकिन तो भी अपने दल के पीछे रहकर हायना-सुअर के चंगुल में पड़ने की हिम्मत नहीं पड़ रही थी।

अन्त को मेरे पैरों ने जवाब दे दिया, चाल सुस्त पड़ गई। मगर दल के और लोग भी ठहर गये; क्योंकि एक जगह पर चीता-मनुष्य कब्जे में आ गया था—उसके भाग निकलने की राह नहीं रह गई थी। मोरो ने हम लोगों को एक अर्धचन्द्राकार पंक्ति में खड़ा कर दिया। उनके हाथ में तना हुआ चाबुक था। हल्ला मचाते-मचाते थोड़ा-थोड़ा हम लोग चीता-मनुष्य की ओर आगे बढ़ने लगे। चुपचाप एक झाड़ी के भीतर घुसकर चोता-मनुष्य कुछ पत्तों और डालों की आड़ में गायब हो गया। उस दिन रात को जिस झाड़ी से मैं उसके डर के मारे भाग आया था, यह वही झाड़ी थी।

हम लोग झाड़ी के पास जब आगे बढ़ने लगे, तब डॉ० मोरो

ने चिल्लाकर कहा—सावधान, सब लोग होशियार रहो !

पीछे से मांटगोमरी की आवाज़ सुन पड़ी—ध्यान से देखते रहो, मौक़ा पाकर एकाएक हमला न कर दे।

मैं उस समय झाड़ी के ऊपर की ढालू जगह में था। मांटगोमरी और मोरो नीचे समुद्र के किनारे-किनारे होकर आगे बढ़ने लगे। घने, एक में गुथे हुए पेड़-पत्तों को नाँघकर धीरे-धीरे हम लोग चलने लगे। चीता-मनुष्य चुपचाप हमारे पास पहुँचने की राह देखने लगा।

दाहिनी ओर लगभग बीस गज़ के फासले से वानर-मनुष्य का स्वर सुन पड़ा—लौट जायगा, लौट जायगा, फिर यन्त्रणा-घर में लौट जायगा।

यह सुनकर मेरे मन में चीता-मनुष्य पर दया उत्पन्न हुई। मेरे मन में उसने जो भय का संचार किया था, उसके लिए मैंने उसे मन-ही-मन क्षमा कर दिया।

घोड़ा-गैंडा अपने भारी डग रखता और घने जंगल को पैरों से रौंदता चल रहा था। सहसा झुटपुटे अँधियारे में घने, हरे पेड़-पत्तों की आड़ में वह चीता-मनुष्य दिखाई पड़ा। बहुत ही सिकुड़कर गुंडली मारे बैठा था। मैं थमककर खड़ा हो गया। चीता-मानुष ने घूमकर कन्धे के ऊपर से मुझ पर दृष्टि डाली।

उसकी यह पशु-सुलभ अंगभंगी, आँखों की जलती हुई नज़र और अद्‌भुत विह्वल भाव देखकर, न जाने क्यों, मुझे वह एक मनुष्य ही जान पड़ा। अभी इसे यंत्रणा-घर (जहाँ डॉ० मोरो प्राणियों के अङ्गों को चीरते-फाड़ते थे) में ले जाया जायगा और वहीं असह्य यंत्रणा इसे भोगनी पड़ेगी। चट से रिवाल्वर जेब से निकालकर मैंने उसकी दोनों आँखों के बीच निशाना साधकर गोली दाग दी।

साथ-ही-साथ हायना-सुअर उसके ऊपर फाँद पड़ा और

उसकी गर्दन में दाँत गड़ा दिये। एक-एक करके और सब पशु भी उसकी ओर झपटे।

पेड़-पत्तों की आड़ से मोरो चिल्ला उठे—"मारिएगा नहीं उसे मि० प्रेन्डिक, मारिएगा नहीं—"

इसके बाद ही डॉ० मोरो उसके पास दौड़ गये और चाबुक की छड़ी के आघात से हायना-सुअर को चीते के ऊपर से हटा दिया। इसके बाद मांटगोमरी की सहायता से चीता-मनुष्य के पास से सब प्राणियों को—विशेष करके म्लिङ् को वहाँ से हटाने लगे। उस समय भी चीता-मनुष्य के शरीर में कुछ-कुछ प्राण थे, वह ज़रा-ज़रा हिलडुल रहा था। आईन-रक्षक सूँघते-सूँघते मेरे पास आया। और सब भी उसे अच्छी तरह देखने के लिए मुझे ठेलकर आगे बढ़ने की कोशिश करने लगे।

मोरो ने खीझे हुए स्वर में कहा—छी छी, क्या कर डाला मि० प्रेन्डिक? उसकी मुझे ज़रूरत थी।

"सचमुच मैं इसके लिए बहुत दुःखित हूँ। झोंक में आकर मैं क्या कर बैठा!"—यह मैंने मुँह से कहा ज़रूर, लेकिन सच तो यह है कि इसके लिए मुझे तनिक भी दुःख नहीं था।

परिश्रम और उत्तेजना के कारण मैं अपने को बहुत अस्वस्थ अनुभव कर रहा था। पशु-मनुष्यों की भीड़ को नाँघकर एक ऊँची जगह की ओर चला। मोरो की आज्ञा के अनुसार सादी पोशाक पहने हुए साँड़-मनुष्य मृत चीता-मनुष्य की लाश को खींचते हुए समुद्र के किनारे-किनारे चले।

इतनी देर पर जैसे निश्चिन्त होकर एकान्त में रहने का मौक़ा मिला। जान पड़ा, पशु-मनुष्यों का कौतूहल जैसे कुछ शान्त हो गया। फोंस-फोंस शब्द करते हुए धीरे-धीरे वे उन साँड़-मनुष्यों के पीछे-पीछे

चलने लगे। इस तरह सभी समुद्र के पास जा पहुँचे। सन्ध्या के झुटपुटे में वे साँड़-मनुष्य काले-काले दैत्य से दिखाई देने लगे। अन-मने भाव से ताकते-ताकते न जाने क्यों, जान पड़ा, जैसे इस टापू का सब कुछ बेमतलब है। उसका कुछ भी अर्थ नहीं है।

मैं जिस जगह खड़ा हूँ, उसके नीचे समुद्र क किनारे वानर-मनुष्य, हायना-सुअर इत्यादि कई एक पशु-मनुष्य मांटगोमरी और मोरो के आस-पास खड़े हैं। अब तक उनमें उत्तेजना प्रबल है। सभी यह प्रकट करने में लगे हैं कि आईन के ऊपर उनकी कैसी अविचलित श्रद्धा है। लेकिन मेरा दृढ़ विश्वास हैं कि हायना-सुअर भी इस अपराध में शामिल है। इन पशु-मानवों को देखते-देखते न जाने क्यों मुझे जान पड़ा, इन सब के भद्दे आकार के कुरूप प्राणियों में थोड़ी-बहुत मानव-जीवन की सभी सामग्री मौजूद है। वही प्रवृत्ति, वही युक्ति और वही परिणति ; अन्तर केवल यही है कि इन के भीतर मनुष्य-जीवन की जटिलता ने नहीं प्रवेश किया। बीच में पड़कर केवल बेचारे चीता-मनुष्य की जान गई।

ये सब बेचारे! अफ़सोस! मोरो की निष्ठुरता मेरे सामने एक नये परिप्रेक्षित (Perspeccive) में खुल गई। आपरेशन के समय की यंत्रणा को बाहर प्रकट होते देखकर ही मैं काँप उठा था। लेकिन उस समय मैं यह नहीं सोच पाया था कि ऑपरेशन के बाद भी इन्हें यंत्रणा सहनी पड़ती है। अब जान पड़ता है कि ऑपरेशन के बाद इन्हें जो यंत्रणा सहनी पड़ती है, उसकी तुलना में ऑपरेशन की तकलीफ तो कुछ भी नहीं है।

इन प्राणियों के बारे में सोचने पर सचमुच दुःख होता है। मनुष्य की आकृति पाने के पहले ये सब निश्चिन्त मन से इच्छानुसार चलते-फिरते थे। अपने आस-पास की वस्तुओं के साथ खप खप जाते थे ; इन की प्रकृति बाहरी प्रकृति से मिलकर चल सकती थी। वे पशु हैं, पशुओं का जीवन सुख से बिताते थे ; देखने में कहीं असंगति नहीं जान पड़ती थी।

लेकिन अब इनकी यह कैसी अवस्था है ! मनुष्य की आकृति पाकर, नकली मनुष्य बनकर, पग-पग पर छोटे-छोटे विधि-निषेध की धमकी से सहमे रहकर उन के दिन कटते हैं । हरघड़ी उन्हें डर सवार रहता है कि कहीं आईन तोड़ने का अपराध न हो जाय ! आईन! उन्हें अस्वाभाविक रूप से चलना-फिरना उठना-बैठना भी पड़ता है। उनका यह हास्यकर मनुष्य का अभिनय यंत्रणा से शुरू होता है । इसके बाद भय के मारे तटस्थ होकर उन्हें सारा जीवन बिताना पड़ता है । लेकिन यह आतंक किस लिए ? इसकी क्या सार्थकता है !

यहीं पर मोरो को अमानुषिक निष्ठुरता मुझे पीड़ा पहुँचाती है। अगर कोई निर्दिष्ट उद्देश्य लेकर वह यह काम शुरू करते, तो कुछ मेरी समझ में आता। शारीरिक यंत्रणा देने के मामले में मुझे भी विशेष आपत्ति नहीं है । यहाँ तक कि अगर वह इन पशुओं पर घृणा होने के कारण यह काम करते, तो भी शायद मैं उन्हें क्षमा कर सकता। लेकिन उन में यह जो दायित्व का बोध नहीं है, यह जो चरम उदासीनता या लापर्वाही है, यही मुझे सब से अधिक पीड़ित करती है। उन्हें उद्देश्य-विहीन गवेषणा की प्रवृत्त ही—जिसे एक नशा ही कहना चाहिए इस निष्ठुर मार्ग में लिये जा रही है।उनके तैयार किये हुए जीव, हो सकता है, बहुत वर्षों तक जीवित रहेंगे; उन्हें पग-पग पर बाधा मिलेगी, ठोकरें खानी पड़ेंगी, वे भूले-भटकेंगे; असह्य यन्त्रणा में ही अन्त को उनकी मृत्यु होगी। दुर्दशा में ही उनका सारा जीवन बीतेगा। पहले की पशुवृत्ति अब भी उनको आपस में हिंसा के लिए उभारती है, कलह की सृष्टि करती है । आईन का बन्धन ही उन की अस्वाभाविक हिंसा-प्रवृत्ति को किसी तरह दबाये रखता है, नहीं तो शायद किसी दिन एक क्षण भर के युद्ध में ही उनके इस अस्वाभाविक जीवन का अंत हो जाता।

इतने दिनों में इन पशु-मनुष्यों से डरता आया हूँ ; लेकिन धीरे-धीरे

मेरा वह भय थोड़ा-थोड़ा करके दूर हो गया है। बल्कि मैं धीरे-धीरे मोरो से अब डरने लगा हूँ। इसी तरह दिन बीतने लगे। मन में शान्ति नहीं है। ठीक भय हो, यह बात नहीं है। जैसे एक तरह से निर्जीव-सा होकर जीवन बिताने लगा हूँ। एक अनिर्वचनीय भाव मेरे मन में गहरा अंकित हो गया है। पशु-मनुष्यों की दुर्दशा देखते-देखते जान पड़ने लगा है कि पृथ्वी पर सभी कुछ अर्थहीन है, सभी मिथ्या है।

भाग्य, अंधा भाग्य, एक विराट् निर्मम मशीन की तरह सभी के भविष्य को तोड़-फोड़कर चूर-चूर किये दे रहा है। गवेषणा में पागल डॉ० मोरो, शराब के नशे में मस्त मांटगोमरी और निरुत्साह मैं, पशु-मनुष्यों की स्वाभाविक पशु-वृत्ति और आईन का बन्धन, सभी कुछ भाग्य की मशीन के चिरन्तन, जटिल चक्कर के घूमने से निर्मम भाव से छिन्न-भिन्न हुआ जा रहा है।... उस समय शायद सहसा मेरा यह मनोभाव उदय नहीं हुआ था। सारे क़िस्से को अब लिखने बैठा हूँ और अब जैसे ये सब विचार आते हैं और मैं सब कुछ जैसे स्पष्ट देख पा रहा हूँ।

१७

दुर्घटना

मुझे इस टापू में आये अभी छः हफ़्ते भी नहीं हुए; किन्तु इसी बीच डॉ॰ मोरो की खोज के ऊपर मुझे आन्तरिक खीझ हो गई है। ईश्वर की जिस प्रतिकृति से मनुष्य की सृष्टि हुई है, उसका यह वीभत्स हास्यकर अनुकरण मुझ से अब बरदाश्त नहीं होता। अब मैं केवल यही सोचता रहता हूँ कि किस तरह इस मनहूस टापू से फिर स्वाभाविक मनुष्यों के देश में लौट सकता हूँ। जिन आत्मीय-स्वजनों और बन्धु-बान्धवों को छोड़ आया हूँ, उनको याद आई। वे देखने में कैसे सुन्दर और अपूर्व हैं, कैसे बढ़िया हैं! मांटगोमरी के साथ मेरा सौहार्द, इतने दिनों में तनिक भी नहीं बढ़ा। चाहे मनुष्य-जगत् से बहुत समय तक दूर रहने के कारण हो और चाहे शराब की लत होने के कारण हो, अथवा पशु-मनुष्यों के प्रति उनके मोह के कारण हो, मांटगोमरी मुझे अच्छे नहीं लगते थे। पशु-मनुष्यों के निकट रहना भी मुझे पसंद नहीं था; इसी कारण उनके पास अगर मांटगोमरी को जाना पड़ता था तो वह अकेले ही जाते थे — मैं

उनके साथ नहीं जाता था।

आज-कल मैं अपना अधिकांश समय समुद्र के किनारे ही बिताता हूँ। अगर कभी भूले से भी कोई जहाज़ इधर से जाता दिखाई दे जाय, यही आशा मुझे समुद्र के किनारे ले जाती थी। इसी तरह अनेक दिन बीत गये; किन्तु जहाज के उधर आने के कोई लक्षण नहीं देख पड़े। इसी बीच एक ऐसी दुर्घटना हो गई, जिस के विषमय विषम फल से हम लोगों का भाग्य-चक्र एक सम्पूर्ण नई राह में घूम गया।

मुझे इस टापू में आये लगभग सात-आठ सप्ताह हुए हैं। उस दिन सबेरे के कोई सात बजे होंगे। तीन पशु-मानव बाहर से चबूतरे के घेरे के भीतर जलाने का ईंधन ले आ रहे थे। उस ईंधन गिराने के शब्द से तड़के ही मैं जाग पड़ा। वैसे ही भोर हुआ था। हाथ-मुँह धोने के बाद प्रातःकाल का नाश्ता करके मैं धीरे-धीरे घेरे के भीतर आने के द्वार पर जा खड़ा हुआ। झर-झर करके सबेरे की सुहावनी हवा चल रही थी। एक सिगरेट सुलगाकर मैं उसके कश खींचने लगा। इसी समय डॉ० मोरो ने आकर चबूतरे के भीतर प्रवेश किया। मुझे देखकर अभिनन्दन जताकर—गुडमार्निंग करके—वह भीतर चले गये।

शब्द सुनकर मैंने समझा, लेबोरेटरी की कोठरी का ताला खोलकर वह भीतर गये। कुछ देर बाद फिर पूमा की विकट क्रोधभरी चीख़ सुन पड़ी। मैं समझ गया, फिर उसे यन्त्रणा दी जाने लगी है। लेकिन इस टापू की सभी बातों पर मेरे मन में ऐसी खीझ पैदा हो गई थी कि इस से भी अब मैं पहले की तरह उत्तेजित नहीं होता था।

इस के बाद नहीं मालूम क्या हुआ, जिसे आज तक मैं ठीक ठीक समझ नहीं पाया। पीछे से एक कर्कश चीख़ सुन पड़ी और उसके बाद ही किसी के गिरने का धमाका हुआ। पीछे मुड़ते ही देखा, एक भयानक विकट मूर्त्ति मेरी ओर बेतहाशा दौड़ती हुई आ रही है। वह मुख मनुष्य

का नहीं था। किसी पशु का भी वैसा मुख नहीं हो सकता। भद्दा कुरूप, हल्दी-जैसा पीला रंग। मुख भर में घाव-ही-घाव थे, जिन से खून निकल रहा था। सब अंगों में बैंडेज बँधे थे। आँखों में पलकों का नाम-निशान नहीं था—जैसे दो अंगारे जल रहे हों! अपने को उसकी झपेट से बचाने के लिए मैंने एक हाथ आगे बढ़ा दिया; किन्तु प्रचण्ड धक्के से मुझे ढकेलकर बहुत दूर फेंकता हुआ वह दैत्य उछलता-कूदता मेरे पास से चला गया। असह्य यन्त्रणा से मैं छटपटाने लगा। अब समझ में आया, जिस हाथ से मैंने उसका प्रचण्ड आघात रोकने की चेष्टा की थी, वह टूट गया था। लुढ़कता-जुढ़कता मैं समुद्र की ओर जाने लगा। सँभलकर उठ बैठने की चेष्टा की, लेकिन टूटे हाथ ने जोर नहीं खाया। इसी समय डॉ० मोरो आकर उपस्थित हुए। उनके माथे से रक्त बह रहा था—सारे मुख की आकृति वीभत्स हो रही थी। हाथ में रिवाल्वर ताने मोरो एक बार मुझ पर नज़र डालकर सीधे पूमा के पीछे दौड़ते चले गये।

दूसरे हाथ का सहारा लेकर मैं किसी तरह उठ बैठा। देखा, वह घायल प्राणी बड़े-बड़े पैरों के डग रखता, उछलता हुआ समुद्र के किनारे-किनारे भागा जा रहा है। उसके पीछे साँस रोके डॉ० मोरो तेज़ी से दौड़े जा रहे हैं। पूमा ने मुड़कर देखा और मोरो को देखते ही पूरे वेग से झाड़ी की ओर भागा। हर डग पर वह मोरो को पीछे छोड़ता जा रहा था। मोरो ने दो बार गोली छोड़ी, लेकिन दोनों बार निशाना चूक गया। इतनी देर में पूमा झाड़ी के भीतर घुस गया। कुछ देर बाद दोनों मूर्त्तियाँ—मोरो और पूमा—हरी झाड़ी की आड़ में गायब हो गईं।

बड़े कष्ट से किसी तरह मैं उठकर खड़ा हुआ। घूमते ही देखा, रिवाल्वर हाथ में लिये मांटगोमरी बाहर जा रहे हैं।

पहले मांटगोमरी यह नहीं समझ पाये कि मैं चोट खा गया हूँ। मुझे देखते ही कह उठे—ग़ज़ब हो गया! जानते हैं मि० प्रेन्डिक्, पूमा

जंजीर तोड़कर भाग गया ! आपने पूमा या मोरो को तो नहीं देखा ?

इतनी देर में उनकी नज़र मेरे हाथ पर गई। मैं अपना टूटा हाथ दूसरे हाथ में थामे था। मांटगोमरी ने पूछा—यह क्या ? आप को क्या हुआ ?

मैंने कहा—मैं दरवाज़े के पास खड़ा था।

" आपकी कमीज़ में खून लगा है " — कहकर उन्होंने मेरी आस्तीन ऊपर समेट दी। रिवाल्वर को जेब में रखकर उन्होंने निपुण हाथ से मेरे हाथ में बैंडेज बाँधकर उसे कपड़े से मेरे कंधे पर झुला दिया। फिर बोले—आप का हाथ टूट गया है। बताइए, यह कैसे हुआ ?

संक्षेप में सारा हाल उन्हें सुना दिया।

उन्होंने कहा— डर की कोई बात नहीं है, कुछ दिनों में ही आपका हाथ ठीक हो जायगा। हड्डी टूटी नहीं, जगह से हट गई है।

कहकर वह चबूतरे के भीतर का दरवाज़ा बंद कर बाहर निकल गये।

अब मैं अपने हाथ की पीड़ा से बेचैन हो उठा। लेकिन वैसे ही अपने मन में कहा—यह कौन ऐसी बड़ी बात है ? निरन्तर होनेवाली दुर्घटनाओं में से यह भी एक है। धीरज छोड़ने से काम न चलेगा।

डेक-चेयर पर बैठकर इस मनहूस टापू को कोसने लगा।

हाथ की पीड़ा क्रमशः असह्य हो उठी। कुछ देर बाद मांट-गोमरी लौट आये। उनके चेहरे पर निराशा की छाप थी। बोले—डॉ॰ मोरो का तो यहाँ कहीं पता नहीं लगता। मैं भी जाता हूँ, शायद उनको सहायता की ज़रूरत हो। ......ओह, कैसी असाधारण शक्ति है इस पूमा में ! दीवार से जंजीर को एक दम उखाड़ ले गया।

कहकर वह खिड़की के पास गये, इसके बाद दरवाज़े के पास तक जाकर फिर लौट आये। बोले—यह रिवाल्वर अपने पास रखिए।

यह मेरे पास फ़ाल्तू है। न जाने क्यों, मुझे आसार बिल्कुल ही बुरे नज़र आ रहे हैं।

यों कहकर उन्होंने रिवाल्वर मुझे दे दिया और आप मोरो की सहायता के लिए चल दिये। उनकी घबराहट का स्पर्श वहाँ के वातावरण में जैसे बस गया। मैं भी बहुत देर वहाँ बैठा नहीं रहा। रिवाल्वर दूसरे हाथ में लेकर घेरे के दर्वाज़े के पास जा खड़ा हुआ।

प्रातःकाल होने पर भी सन्नाटा छाया हुआ है। हवा भी जैसे थम गई है। तरंगहीन प्रशांत समुद्र भी जैसे सोया हुआ है। आकाश में मेघ नहीं हैं, समुद्र के किनारे कोई प्राणी नहीं है। सन्नाटा छाया है। चारों ओर की यह निर्जनता और सन्नाटा, जैसे मेरे मन पर लाखों मन का बोझ डालकर उसका गला घोटने लगा।

चबूतरे के एक कोने पर जाकर मैंने उस हरी झाड़ी की ओर ताका, जिसकी आड़ में मोरो और मांटगोमरी जाकर गायब हुए थे। वे कब लौटेंगे? कैसी हालत से लौटेंगे?

बहुत दूर पर, समुद्र के जल के पास, एक पशु-मनुष्य दिखाई दिया। पैरों से पानी उछालता हुआ दौड़ा चला जा रहा था। मैं वहाँ से घेरे की दीवार के भीतर जाने के द्वार पर गया। वहाँ से फिर चबूतरे के कोने पर लौट गया। पहरेदार की तरह कुछ देर तक इसी तरह टहलता रहा। बहुत दूर से एक बार मांटगोमरी का चिल्लाना सुनाई दिया—"मोरो! तुम कहाँ हो?" मैं ठिठककर खड़ा हो गया।

हाथ का दर्द जैसे कुछ कम हो गया है, लेकिन जलन बहुत अधिक हो रही है। कुछ बुखार-सा मालूम हो रहा है। ...क्रमशः मेरे शरीर की परछाँहीं सिमटकर छोटी होती जा रही है—दिन चढ़ आने से सूर्य देवता सिर के ऊपर आ रहे हैं। दूर पर जो प्राणी दिखाई दे

रहा था, वह धीरे-धीरे आँखों से ओझल हो गया।

तो क्या मोरो और मांटगोमरी अब नहीं लौटेंगे?—यह ख़याल एकाएक मेरे मन में उठा।

तीन समुद्री चिड़ियों ने पानी में बहते आ रहे किसी जानवर की लाश पर छीनाझपटी शुरू कर दी।

इसके बाद चबूतरे के पीछे बहुत दूर पर पिस्तौल की आवाज़ सुनाई पड़ी। फिर बड़ी देर तक सन्नाटा रहा। उस सन्नाटे को चीरती हुई फिर पिस्तौल गरज उठी। इसके बाद ही एक भयानक चीख़ कानों में पड़ी। अब की यह चीख़ कुछ पास ही थी। और भी कुछ समय बीता। मैं किसी अमंगल की कल्पना से आतङ्क-ग्रस्त हो उठा। इसी समय बहुत ही निकट पिस्तौल की आवाज़ हुई।

उस शब्द को लक्ष्य करके आगे बढ़ा। देखा, मांटगोमरी आ रहे हैं। उनका चेहरा और आँखें लाल हो रही हैं। बाल अस्त-व्यस्त हैं। घुटनों के पास पैंट फट गया है। चेहरे पर असीम विस्मय की छाप है। उनके पीछे म्लिङ् है। उसके जबड़े के चारों ओर किसी चीज़ का—शायद ख़ून का—गोल-गोल सन्देहजनक दाग़ लगा हुआ है!

"वह लौट आये?" साँस रोके हुए मांटगोमरी ने मुझ से प्रश्न किया।

मैंने कहा—कौन? डॉ० मोरो? कहाँ, वह तो नहीं आये!

बेहद हाँफते हुए मांटगोमरी ने कहा—ग़ज़ब हो गया! चलिए, भीतर चलें!... पागल हो उठे हैं—पागलों की तरह ये सब इधर-उधर दौड़ रहे हैं। क्या हुआ, यह कुछ समझ में नहीं आ रहा है।... ज़रा दम ले लेने दीजिए, सब कहता हूँ।

लँगड़ाते-लँगड़ाते आकर मांटगोमरी मेरी डेक-चेअर पर धम से बैठ गये। दरवाज़े के बाहर मुँह डालकर कुत्ते की तरह बैठकर

म्लिङ् हाँफने लगा। कुछ देर तक मांटगोमरी शून्य दृष्टि से सामने की ओर ताकते रहे। फिर धीरे-धीरे कहना शुरू किया—

"वे लोग जिस राह से गये थे, उसी राह से कई मिनट तक मैं भी चलता रहा। झाड़-झंखाड़ और बड़ी-बड़ी झाड़ियों को तोड़ते-फोड़ते और रौंदते-कुचलते वे लोग गये थे, इसलिए उनके जाने की राह को सहज ही में मैंने पहचान लिया। पूमा के शरीर पर जो बैंडेज बँधे थे, उनके टुकड़े भी इधर-उधर झाड़ियों में अटककर रह गये थे; पेड़ों के पत्तों पर भी इधर-उधर खून के दाग़ लग गये थे। वह रक्त पूमा के शरीर के घावों का था। इसी बीच नदी को मँझाते हुए पार करके, उस किनारे जाकर मैंने देखा, वहाँ की पथरीली मिट्टी में पूमा या मोरो किसी का कोई भी चिह्न नहीं नज़र आया। कुछ देर तक पश्चिम की ओर जाकर मैंने मोरो की खोज की—फिर उनका नाम लेकर ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगा। म्लिङ् को इसका कुछ हाल मालूम नहीं था—वह जंगल में ईंधन की लकड़ी काट रहा था। मेरी पुकार सुनकर वह मेरे पास आया। दोनों जने एक साथ मोरो को पुकारते हुए आगे बढ़े। इसी समय दो पशु-मनुष्य कहीं से चारों पैरों से चलकर आगे आ गये। उन्होंने ऐसा अद्‌भुत-भाव प्रकट किया कि मुझे बड़ी आशंका हुई। मैंने उनको आवाज़ दी; किन्तु अपराधी की तरह वे भाग गये। इसके बाद कुछ देर इधर-उधर घूम-फिरकर मैंने ठीक किया कि उनकी झोपड़ी में जाकर मोरो का पता लगाऊँगा। लेकिन वहाँ जाने पर भी कोई नहीं देख पड़ा।

"हर बड़ी आशंका और आतंक मेरे मन में बढ़ने लगा। तब मैं इधर लौट पड़ा। कुछ दूर आने पर दो शूकर-मनुष्य मुझे देख पड़े; उनके मुँह में खून लगा था! अत्यन्त उत्तेजित भाव से वे दोनों दौड़ते जा रहे थे। एकाएक मुझे देखते ही विकट मुँह बनाकर वे ठिठककर

खड़े हो गये। मैं डरा। मेरे चाबुक फटकारते ही दोनों एक साथ मेरी ओर झपट पड़े। कोई पशु-मनुष्य आज तक ऐसा साहस नहीं कर सका था। तुरन्त ही मैंने गोली मारकर एक का सिर तोड़ दिया। म्लिङ् ने दूसरे की गर्दन पर टूटकर उसमें अपने पैने दाँत गड़ा दिये, जिससे वह लाचार हो गया। इसके बाद उसे भी मैंने गोली मार दी। यह सब देखकर म्लिङ् सहम गया था, मेरे साथ आने को राजी न होता था। बहुत समझाने-बुझाने पर राज़ी हुआ।

"इसके बाद हम लोग तेज़ी से घर की ओर लौटने लगे। म्लिङ् ने एक झाड़ी के भीतर घुसकर, पीछा करके एक छोटे-से अद्भुत पशु-मनुष्य को उसके बाहर निकाला। उस प्राणी के शरीर में भी खून के दाग थे। एक पैर में चोट लग जाने के कारण बेचारा लँगड़ाकर दौड़ रहा था। कुछ दूर जाकर वह जान पर खेल गया और घूमकर खड़ा हो गया। उसे भी मैंने गोली मार दी।"

मैंने पूछा—इसका क्या मतलब ?

हताशा-व्यंजक अंगभंगी करके मांटगोमरी ने फिर ब्रांडी पीने में मन लगाया।

१८

मोरो का पता लग गया

मॉंटगोमरी को ब्रांडी का तीसरा पेग पीते देखकर मैं उन्हें रोके बिना नहीं रह सका। दो पेग पीकर उनकी चेतना प्रायः लुप्त हो चली थी। मैंने उनसे कहा—निश्चय ही डॉ० मोरो बड़ी आफ़त में फँस गये हैं, नहीं तो क्या वह अब तक लौट न आते? हमें अभी यह पता लगाना चाहिए कि मामला क्या है।

दो-एक बार साधारण आपत्ति करने के बाद मांटगोमरी चलने को राजी हो गये।

उस सन्नाटे की तपी हुई दोपहरी में मोरो का पता लगाने के लिए अपनी यात्रा, आज भी मुझे स्पष्ट याद है—ख़याल आते ही वह दृश्य आँखों के आगे आ जाता है। सब से आगे म्लिङ् था। उसकी पीठ पर साँड़ का-सा कूबड़ था। इधर-उधर तेज़ी से नज़र दौड़ाने के कारण उसका अद्भुत काला सिर बार-बार हिल रहा था। लेकिन उसके पास कोई हथियार नहीं था; शूकर-मनुष्यों से लड़ने के समय उसके हाथ की

कुल्हाड़ी कहीं गिर गई थी। लड़ने का प्रयोजन होने पर इस समय उसके हथियार केवल उसके दाँत थे। उसके पीछे जेब में हाथ डाले मांटगोमरी थे—थकी हुई देह को घसीटते-से किसी तरह चल रहे थे। ब्रांडी का पेग न पीने देने के कारण वह मुझ पर नाराज़ थे। उनके पीछे मैं चल रहा था। टूटा हुआ बायाँ हाथ गले से लटकाये और दाहने हाथ से रिवाल्वर ताने हुए मैं चल रहा था।

घने पत्तों से ढका हुआ सँकरा जंगली मार्ग हमारे आगे था। उसी राह को पकड़कर उत्तर-पश्चिम दिशा को लक्ष्य करके हम लोग चलने लगे। एकाएक म्लिङ् ठिठका और अकड़ कर खड़ा हो गया। सतर्क दृष्टि से वह चारों ओर ताकने लगा। साथ-ही-साथ हम लोग भी खड़े हो गये। कई एक प्राणी जैसे बातें करते हुए हम लोगों की ओर बढ़ रहे थे।

उनमें से एक ने काँपते हुए गद्गद स्वर में कहा—वह मर गये।

दूसरे ने कहा—ना, ना, वह मरे नहीं; वह मरे नहीं!

एक साथ ही अनेक स्वर सुन पड़े—हमने देखा है! हमने देखा है!

मांटगोमरी सहसा चीख़ उठे—ए! ए! सुनो सब, इधर आओ।

मांटगोमरी के इस व्यवहार से बहुत खीझकर मैंने रिवाल्वर तान लिया।

कुछ देर सन्नाटा छाया रहा। इसके बाद झाड़-झंखाड़ को रौंदते-तोड़ते हुए कई पशु-मनुष्य वहाँ आकर उपस्थित हुए। उत्तेजन से उनकी आँखें अंगारों की तरह दमक रही थीं—मुँह विकट बना हुआ था। उन्हें देखते ही म्लिङ् अद्भुत स्वर से गरज उठा। तीनों प्राणियों को देखते ही मैंने पहचान लिया। उनमें एक तो वानर-मनुष्य था और बाक़ी दो थे सादी पोशाक पहने प्राणी, जिन्हें लंच पर मैंने देखा

था। उनके साथ और भी दो विकृत आकार के प्राणी थे। वह आईन-रक्षक भी था। उसके सफेद बाल कनपटियों पर लटक रहे थे। वह आकृतिहीन प्राणी उज्ज्वल लाल-लाल दृष्टि उठाकर घने हरे पत्तों की झिरी से कौतुक के साथ हम लोगों की ओर ताक रहा था।

कुछ देर तक कोई कुछ नहीं बोला। इसके बाद खाँसकर, गला साफ़ करके मांटगोमरी ने पूछा—किसने कहा कि वह मर गये?

वानर-मनुष्य ने अपराधी की दृष्टि से आईन-रक्षक की ओर ताका। आईन-रक्षक ने कहा—वह मर गये। उन सबने देखा है।

उन लोगों के हावभाव को देखकर जान पड़ा कि वे मेरा या मांटगोमरी का कोई अनिष्ट नहीं करेंगे। जान पड़ा, वे जैसे आतंक के मारे विह्वल हो गये हैं।

मांटगोमरी ने पूछा—कहाँ हैं वह?

दूर उँगली का इशारा करके आईन-रक्षक ने कहा—उस तरफ़।

वानर-मनुष्य ने शंकित भाव से पूछा—अब भी क्या आईन बना हुआ है? अब भी क्या वही बात है कि यह न करेंगे—वह न करेंगे? वह क्या सचमुच मर गये हैं?

सादी पोशाक पहने एक प्राणी ने भी पूछा—अब भी क्या आईन बना हुआ है?

हमारी ओर ताककर आईन-रक्षक ने पूछा—अब भी क्या आईन बना हुआ है द्वितीय चाबुकधारी? वह तो मर गये।

भावलेश-हीन दृष्टि से मेरी ओर ताककर मांटगोमरी ने कहा—तो सचमुच मोरो मर गये?

अब तक मैं उनके पीछे खड़ा था। इतनी देर में अपनी वर्तमान परिस्थिति मेरी समझ में आ गई। मांटगोमरी के सामने आकर, आगे बढ़कर, चीख़कर मैं कह उठा—आईन की सन्तानो, वह

मरे नहीं हैं।

साथ-ही-साथ म्लिङ् ने तीक्ष्ण दृष्टि से मेरी ओर देखा। मैंने साहस करके दृढ़ता के साथ कहा—उन्होंने यह आकृति छोड़ दी है—यह देह छोड़ दी है। अब कुछ दिन तुम उन्हें देख न पाओगे। वह अब वहाँ हैं ... कहकर मैंने उँगली से आकाश की ओर इशारा किया। फिर कहा—वहाँ से वह तुम को, तुम्हारे सब कामों को ध्यान से देख रहे हैं। तुम उन्हें अवश्य नहीं देख पाते, मगर वह तुम लोगों को देख रहे हैं। आईन मानकर चलो।

सिर उठाकर मैंने उन लोगों की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखा। वे लोग जैसे संकुचित हो उठे।

घने सटे हुए पेड़-पत्तों के बीच से आकाश की ओर ताककर वानर-मनुष्य डरता हुआ कह उठा—वह महान् हैं, वह उत्तम हैं।

मैंने पूछा—और वह प्राणी, जिसके पीछे वह दौड़े गये थे, कहाँ है ?

आईन-रक्षक ने कहा—चीख़ते-चीख़ते, ज़ोर से रोते-रोते वह भाग रहा था। उसके सारे शरीर से रक्त बह रहा था। वह भी मर गया।

अब भी आईन-रक्षक मेरी ओर ताक रहा था।

मांटगोमरी ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा—अच्छा हुआ।

आईन-रक्षक ने कहना शुरू किया—द्वितीय चाबुकधारी...

मैंने कहा—क्या कहते हो, बोलो ?

उसने कहा—द्वितीय चाबुकधारी ने तो अभी कहा कि वह मर गये ?

मोरो की मृत्यु अस्वीकार करने का मेरा उद्देश्य क्या है, इतना समझने की शक्ति अभी मांटगोमरी में बाक़ी थी। उन्होंने धीरे-धीरे

कहा—वह मरे नहीं, कतई नहीं मरे। मैं जैसे जीता-जागता हूँ, वैसे ही वह भी जीवित हैं।

मैंने कहा—निश्चय ही किसी ने आईन को तोड़ा है—आईन को न मानकर उसके खिलाफ़ चला है। ऐसा करनेवाले सभी मरेंगे। उनमें से दो-एक पहले ही मर चुके हैं। —चलो, दिखाओ, कहाँ उनकी पुरानी देह पड़ी हुई है। वह देह उन्होंने त्याग दी है; क्योंकि उन्हें अब उस देह की ज़रूरत नहीं है।

"इधर—इधर आओ, समुद्र में उतरनेवाले मनुष्य।"—आईन-रक्षक मुझे लक्ष्य करके कह उठा।

उन दोनो प्राणियों के पीछे चलकर झाड़ियों और झाड़-झंखाड़ को तोड़ते-चीरते हुए हम लोग उत्तर-पश्चिम की ओर आगे बढ़े। इसी समय अचानक एक करुण चीख और उसके साथ ही डालियों और पत्तों की सरसराहट सुन पड़ी। साथ-ही-साथ छोटा-सा लाल रंग का एक प्राणी हमारे पास से कतराकर चला गया, और उस का पीछा करता हुआ एक दानव के आकार का बड़ा प्राणी आता देख पड़ा। उसके सारे शरीर में खून लगा था। दूर से हम लोगों को देखकर ही उस पशु-मनुष्य ने रुक जाने की चेष्टा की, किन्तु वेग को सँभाल न पाने के कारण एकदम हमारे पास आ पड़ा।

एक छलाँग मारकर आईन-रक्षक एक किनारे हट गया; किन्तु क्रुद्ध म्लिङ् उसके ऊपर टूट पड़ा। उसने एक झटके में म्लिङ् को दूर फेंक दिया। मांटगोमरी ने उस पर गोली चलाई और गोली के खाली जाने के साथ ही तेज़ी से पीछे हटने लगे। मैंने भी गोली दागी, लेकिन तो भी वह प्राणी थमा नहीं, लगभग मेरे ऊपर ही पहुँच गया। फिर मैंने गोली चलाई, एकदम उसके चेहरे को ताककर। गोली खाकर असह्य यंत्रणा होने पर भी वह मेरे ऊपर झपट पड़ा। मेरे पास से कतराकर

वह मांटगोमरी के लिपट गया और ज़ोर से उलटकर जमीन पर गिर पड़ा।

घूमकर मैंने देखा, म्लिङ्, वह मृत प्राणी, मांटगोमरी और मैं, इनके सिवा वहाँ और कोई नहीं है। सब भाग गये हैं। किसी तरह उठकर मांटगोमरी ने भय के मारे भूली हुई नज़र से उस मृत पशु की ओर देखा। बहुत कुछ आश्वस्त होकर वह किसी तरह उठ खड़े हुए। पीछे घूमकर मैंने देखा, घास और झाड़ों के जंगल की आड़ से दबकता हुआ आईन-रक्षक निकला आ रहा है। मृत प्राणी की ओर ताककर मैंने कहा—देख लिया? अब समझ रहे हो न कि आईन अभी तक बना हुआ है? आईन न मानने से यही दशा होती है।

मृत जीव की ओर ताककर गद्गद स्वर से आईन-रक्षक कह उठा—"वज्र जो मारता है—वह हाथ भी उनका है।"

बाक़ी कई पशु-मानव भी एक एक करके आने और परस्पर एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

टापू के पश्चिम भाग में उपस्थित होकर हम लोगों ने पूमा की लाश को खोज निकाला। गोली के लगने से उसके कंधे का हाड़ टूट गया था—उसका सारा शरीर कटा-फटा था। जान पड़ता था, जैसे किसी ने दाँतों से चबा-चबाकर उसे क्षत-विक्षत कर दिया है। वहाँ से लगभग बीस गज़ के फासले पर एक बेंत के झुरमुट की आड़ में मुँह के बल डॉ० मोरो का शव ज़मीन पर पड़ा था। उस स्थान पर धमाचौकड़ी के चिह्न अत्यन्त स्पष्ट थे। मोरो का एक हाथ कलाई के पास लगभग अलग ही हो गया था। सिर के सफेद बाल खून से भीगकर एक में चिपट गये थे। पूमा की जंजीर के प्रहार से उनका सिर फूट गया था। झाड़ी के पास इधर-उधर खून के दाग थे। मोरो के रिवाल्वर का कहीं पता नहीं चला।

धीरे-धीरे मांटगोमरी ने उन्हें उलटकर चित लिटा दिया।

सात पशु-मनुष्यों की सहायता से डॉ० मोरो की भारी लाश चबूतरे के भीतर लाई गई। रास्ते में दो-एक बार वाहकों को विश्राम करना पड़ा था। रात घनी होती जा रही थी। अज्ञात प्राणियों का गर्जन रह-रहकर सुन पड़ता था। छोटा स्लाथ आकर एक बार झाँक कर ही भाग गया। लौटते समय राह में किसी प्राणी ने हम पर आक्रमण नहीं किया।

चबूतरे के घेरे में घुसने की राह पर—द्वार पर—मोरो के शव को रखकर पशु-मनुष्य चले गये। म्लिङ् भी आज उनके साथ ही चला गया। मैंने फाटक भीतर से बन्द कर दिया। इसके बाद मोरो के निस्पन्द शरीर को मैं और मांटगोमरी, दोनों उठाकर भीतर ले गये और कुछ ईंधन के लिए काटकर लाई गई वृक्ष-शाखाओं पर उसे लिटा दिया।

इसके बाद लेबोरेटरी की कोठरी में जाकर, वहाँ जितने जीवित प्राणी मौजूद थे, सबको हम लोगों ने मार डाला। उनके जीवित रहते हम निश्चिन्त नहीं रह सकते थे। डॉ० मोरो के मर जाने पर अब उनकी कोई आवश्यकता भी नहीं रह गई थी।

१६

मांटगोमरी का परिणाम

संहार-लीला समाप्त करके हम लोग लेबोरेटरी से बाहर आये। इसके बाद हाथ-मुँह धोकर, भोजन करने के बाद, मैं अपनी छोटी-सी कोठरी में मांटगोमरी को साथ लेकर आया। अब हमें अपनी वर्तमान परिस्थिति के सम्बन्ध में विचार करके कोई निश्चय करने की ज़रूरत थी। उस समय लगभग आधी रात बीत चुकी थी। इतनी देर में ब्रांडी का नशा उतर जाने के कारण मांटगोमरी अपनी स्वाभाविक अवस्था में अवश्य आ गये थे; लेकिन उनका मन अब भी अस्वस्थ ही था। ठीक तरह से कुछ सोचने-विचारने के क़ाबिल अब भी नहीं हुए थे। मोरो के व्यक्तित्व ने उन्हें अद्‌भुत रूप से अपने नीचे दबा रक्खा था—मोरो का व्यक्तित्व उन पर छाया हुआ था। किसी दिन किसी प्रकार मोरो की मृत्यु भी हो सकती है, इसकी उन्हें कल्पना भी नहीं थी; यह बात उनकी धारणा के बाहर थी। इस टापू में दस साल तक एक ही ढर्रे का बँधा हुआ जीवन बिताने

के कारण जो अभ्यास उनके स्वभाव का अविच्छेद्य अङ्ग बन गये थे, उन सब के ऊपर जैसे आकस्मिक दुर्घटना ने फुलस्टाप लगा दिया। वह बातचीत न जाने कैसे अस्पष्ट भाव से करने लगे—मेरी बातों का जो उत्तर दिया, वह भी अस्तव्यस्त और उखड़ा-उखड़ा-सा था। बार-बार स्थूल और व्यर्थ की बातें ही लौट-फिरकर करने लगे।

मांटगोमरी ने कहा—हमारा यह जंगल का जीवन अत्यन्त जटिल है। यथार्थ जीवन जिसे कहते हैं, वह इतने दिनों में भी मेरा नहीं शुरू हुआ। नहीं जानता, अब कब शुरू होगा। जीवन के पहले के सोलह वर्ष नर्स और स्कूल-मास्टर के मनमाने व्यवहार के साथ बीते। और पाँच वर्ष मैंने लंदन में बिताये। प्राणपण से, जानलेवा परिश्रम करके औषध-विद्या सीखी। अच्छा भोजन नसीब नहीं हुआ, स्वास्थ्यदायक रहने का स्थान नहीं मिला। भले आदमियों की पोशाक नहीं प्राप्त हुई। इसके ऊपर कोढ़ में खाज यह हुई कि अनजान में ही एक अपराध कर बैठा, जिसके फल-स्वरूप आज मैं स्वदेश से—लंदन से—यहाँ निर्वासन का दण्ड भोग रहा हूँ। यहाँ रहते मुझे दस साल बीत गये हैं। आप बता सकते हैं मि० प्रेन्डिक्, क्यों मुझे यह दण्ड भोगना पड़ रहा है? मेरे जीवन का मूल्य क्या बिलकुल पानी के बुल-बुले के बराबर है?

इन सब प्रलापों का कोई उत्तर नहीं दिया जा सकता। मैंने कहा—अब हमको केवल यह चिन्ता होनी चाहिए कि किस तरह इस निर्जन टापू से निकला जाय।

मांटगोमरी ने निस्पृह भाव से कहा—इस टापू को छोड़कर क्या होगा? मैं कहाँ जाऊँगा? सभ्य जगत् में मेरा स्थान नहीं है। आपको भला क्या चिन्ता है? बेचारा मोरो! उसकी भी तो एक सद्गति करनी होगी? और इसके अलावा इन पशु-मनुष्यों में जो

अच्छे हैं, हमारे चले जाने पर उनकी क्या गति होगी ? उन्हें कौन देखेगा ?

मैंने कहा—यह सब कल सोचा जायगा। अच्छा, डॉ० मोरो के शव को जहाँ हम लिटा आये हैं, उन लकड़ियों में आग लगाकर अगर हम डॉ० मोरो तथा अन्य मृत प्राणियों को जला दें तो कैसा हो? लेकिन इसके बाद इन बचे हुए पशु-मनुष्यों को लेकर क्या किया जायगा ?

मांटगोमरी ने कहा—मैं क्या जानूँ ! इन पशु-मनुष्यों में से पहले जो शिकारी जानवर थे, उनमें कुछ ही दिनों के बाद अत्यन्त भयानक परिवर्तन हो जायगा। लेकिन हम लोग तब या अभी उन सभी को तो मार नहीं सकते । मार सकते हैं ? आपका मनुष्यत्व अवश्य आपको यही युक्ति सुझावेगा !...लेकिन इसके साथ ही यह भी निश्चित है कि वे सभी बदल जायँगे—फिर पहले की तरह पूरी तौर से पशु बन जायेंगे। फिर उन्हें काबू में रखना असंभव होगा।...

वह इसी तरह अटायँ-शटायँ बहुत कुछ बकने लगे। अब मैं अपने को किसी तरह रोक नहीं सका। मैंने जब अपनी खीझ प्रकट की, तब वह एक वाहियात कसम खाकर कह उठे—तुम यह समझ नहीं पाते कि तुम्हारी अपेक्षा मेरी अवस्था कितनी संगीन है।

कहकर वह ब्रांडी की बोतल लेने के लिए बढ़े। गिलास में ब्रांडी उँडेलते हुए वह बोले—तुम तो निर्विकार हो, दुनिया के रंग-ढंग और मौज-मजे पर तुम्हें विश्वास नहीं, तुम एक साधु पुरुष हो! अरे आओ, इस वक्त तो ज़रा ब्रांडी चख लो।

"मुझे माफ कीजिए"—कहकर मैं गंभीर होकर बैठा रहा। मोमबत्ती की पीली रोशनी में मैं उनकी ओर लक्ष्य करने लगा। इसी बीच ब्रांडी ने अपना प्रभाव दिखाना शुरू कर दिया था। वे अंटशंट

बकने लगे थे। मुझे बड़ी खीझ मालूम हुई, नफ़रत भी हुई। इसी बीच वह फिर डबडबाई हुई आँखों से मेरी ओर देखकर पशु-मनुष्यों की, विशेष रूप से म्लिङ् की वकालत भी करने लगे, जिसका मतलब यह था कि अकेले म्लिङ् के लिए ही उन्हें चिन्ता है। एकाएक कोई विचार जैसे उनके मन में आया।

"चूल्हे में जाय!" कहकर, ब्रांडी की बोतल उठाकर वह लड़खड़ाते हुए उठ खड़े हुए। न जाने क्यों, सहसा उनका इरादा मेरी समझ में आ गया। मैं उठकर, उनकी राह रोककर बोला—देखिए, इस पशु को ब्रांडी न दीजिएगा।

मांटगोमरी ने बिगड़कर कहा—पशु? पशु तो आप हैं! वह एक सच्चे क्रिश्चियन की तरह जरूर शराब पियेगा। कहे देता हूँ, हट जाइए।

मैंने अनुनय करके कहा—ईश्वर के लिए मान जाइए।

"हट...जाइए सामने से!"—गरजकर उन्होंने एकाएक पॉकेट से रिवॉल्वर निकाल लिया।

"अच्छा....अच्छा"—कहता हुआ मैं हट गया। मांटगोमरी के हाथ नीचे करते ही जी चाहा कि उनको झपटकर बेकाबू कर दूँ। लेकिन वैसे ही खयाल आया कि मेरा तो एक हाथ टूटा है। मैंने कहा—आप खुद भी तो पशुओं की सतह पर उतर आये हैं। जाइए, पशुओं के ही बीच जाइए।

एक झटके से दरवाजा खोलकर मांटगोमरी ने तिर्छी नजर से मेरी ओर देखा। मोमबत्ती का पीला प्रकाश और चन्द्रमा की फीकी ज्योति एक साथ उनके मुख पर पड़ी। मोटी भौहों के नीचे उनकी दोनों काली आँखों के गढ़े देख पड़ रहे थे।

"जैसा तुम्हारा दिमाग़ है महाशय, वैसे ही तुम उजबक हो।

सभी बातों में तुम डरा करते हो, सभी कामों में बुराई देखते हो। अरे हम तो मरने ही बैठे हैं। कल ही शायद देखोगे, मेरा गला काट डाला गया है। आज रात को मेरी छुट्टी है—मैं अच्छी तरह उस छुट्टी का मजा लूटूँगा।"—यह कहकर बाहर निकल गये। बाहर उनकी आवाज सुन पड़ी—"म्लिङ्, म्लिङ्, आ मेरे दोस्त, आ।"

धुँधली चाँदनी में तीन प्राणी समुद्र के किनारे से आगे बढ़े। जो पहले आया, वह सफेद पोशाक पहने था। उसके पीछे दो काली मूर्तियाँ थीं। मांटगोमरी की ओर देखकर वे रुक गये। कुछ क्षणों के बाद ही मैंने देखा, म्लिङ् भी आकर हाजिर हुआ।

"पियो, पियो, अरे पशुओ, तुम सब शराब पियो; पीकर इन्सान बनो।—नाः, देखता हूँ, मेरी ही बुद्धि की जय हुई! यह बुद्धि तो मोरो के दिमाग़ में भी नहीं आई थी। यही मेरी आखिरी कोशिश है—पियो, पियो, तुम सब पियो"—कहकर बोतल को हिलाते-हिलाते मांटगोमरी लंबे डग भरते हुए पश्चिम की ओर आगे बढ़े। उनके पीछे म्लिङ् और उसके पीछे बाकी प्राणी चले।

मैं फाटक के पास जाकर उन्हें देखने की चेष्टा करने लगा। मांटगोमरी जब रुककर खड़े हुए, तब तक वे सभी कुहरे से धुँधली अस्तप्राय चाँदनी में अस्पष्ट हो गये थे। मैंने देखा, मांटगोमरी ने म्लिङ् को एक डोज़ निर्जला ब्रांडी पीने को दी। इसके बाद अस्पष्ट प्रकाश में देखा, मांटगोमरी, म्लिङ् और अन्य तीनों प्राणी इकट्ठे बैठे हैं।

मांटगोमरी का चीख़ना सुनाई दिया—गाओ, गाओ, सभी एक साथ मिलकर गाओ। कहो—'प्रेन्डिक् नीचा देखे!'....हां, वाहवाह। फिर कहो—'प्रेन्डिक् नीचा देखें।'

पाँचो प्राणी मनमाने ढंग से चीख़कर मेरे बारे में अंटशंट गाते हुए वहाँ से उठकर समुद्र की ओर बढ़े।

दूर से मांटगोमरी की आवाज़ सुन पड़ी—दाहने चलो, दाहने।

दाहनी ओर घूमकर एक झाड़ी की आड़ में चीख़ते-चिल्लाते सब गायब हो गये। क्रमशः उनका वह चिल्लाना भी नहीं सुन पड़ा।

इतनी देर में रात्रि का वह नीरव सौंदर्य फिर लौट आया। एकदम साफ नीले आकाश में पूर्णिमा का उज्ज्वल चन्द्रमा पश्चिम आकाश में ढलने लगा।

दीवार की कसौटी के पत्थर जैसी काली परछाहीं मेरे सामने ख़ूब चौड़ी हो गई। पूर्व ओर स्थिर, धूसर, निविड़ रहस्य से भरा महासागर था। समुद्र और परछाहीं के बीच की जगह को धूसर वर्ण की बालू घेरे हुए थी। उस बालू में कुछ-कुछ ज्वालामुखी से निकले हुए लावा भी मिले हुए थे। मेरे पीछे लाल आभा फैलाकर मोमबत्ती की उज्ज्वल लौ जल रही थी।

मैंने दरवाज़ा बन्द करके ताला लगा दिया। कुछ ही दूर पर डॉ० मोरो का शव पड़ा हुआ है; और उसके पास ही स्टग-हाउंड, लामा तथा और भी कई एक अद्भुत जीव मरे पड़े हैं। वीभत्स मृत्यु के बाद भी मोरो के मुख-मण्डल का वह शान्त एकाग्रता का भाव वैसा ही बना हुआ है। मृत्यु से स्थिर उनकी आँखें जैसे अस्तप्राय पीतवर्ण चन्द्रमा की ओर एकटक ताक रही हैं। कई मिनट तक मैं उस फीकी चाँदनी की ओर शून्य दृष्टि से ताकता रहा। बैठे-बैठे सोचने लगा, अब मुझे क्या करना चाहिए?

मैंने तय कर लिया कि सवेरा होते ही कुछ ज़रूरी चीज़ें डोंगी पर रख लूँगा, उसके बाद इस सारे काठ-कबाड़ को एक जगह जमा करके एक चिता बनाऊँगा। उसमें मोरो का अन्तिम संस्कार करके दुबारा अकेले डोंगी पर बैठकर अपार सागर में यात्रा करूँगा। मांटगोमरी भी अब जैसे बहुत कुछ इन पशु-मनुष्यों ही के समान हो गये.

हैं। अब वह मनुष्य-समाज के काम के नहीं रहे।

इसी तरह की कितनी ही चिन्ताओं में मैं डूबा हुआ था। इसी समय मांटगोमरी की आवाज़ सुनकर मेरी चिंता का सूत्र टूट गया। एक साथ ही अनेक पशु-मनुष्यों की तरह-तरह की चीख़-पुकार सुन पड़ी। जैसे आनन्द के मारे अपने से बाहर होकर वे समुद्र की ओर जा रहे हैं। जान पड़ा, वे पानी के पास आकर ठहर गये। एकाएक एक ज़ोर की चीख़ उठकर रह गई। इसके बाद ही एक प्रचण्ड शब्द सुन पड़ा—जैसे कोई ज़ोर-ज़ोर लकड़ी चीर रहा है। लेकिन इससे भी मैं विचलित नहीं हुआ।

फिर एक असंबद्ध चीत्कार सुन पड़ा।

मैं फिर अपनी चिन्ता में डूब गया। जैसे एक लंगर की खूँटी-सी मैंने पहले यहाँ कहीं देखी थी। मोमबत्ती लेकर उसे ढूँढने लगा।

सहसा कई बिस्कुट के टीन देख पड़े। मैं उत्साहित हो उठा। एक टीन खोला तो उसमें लाल-लाल (रक्त-सा) कुछ देख पड़ा। साथ-ही-साथ मैंने मुँह फेर लिया।

पीछे की ओर छोटे-से आँगन में चाँदनी पड़ रही थी; कहीं चाँदनी की सफ़ेदी और कहीं अन्धकार की कालिमा थी। कुछ दूर पर, लकड़ियों के अस्तव्यस्त ढेर पर, मोरो का क्षत-विक्षत शरीर पड़ा हुआ था। उसके पास ही बाक़ी प्राणियों की लाशें एक-पर-एक इस तरह ढेर थीं कि जान पड़ता था, जैसे मरने के पहले क्षण तक उन्होंने छुटकारे के लिए प्राण-पण से चेष्टा की है। रात के अँधेरे में मोरो के काले पड़ गये घाव जैसे मुँह फाड़े काटे खा रहे थे। उनके शरीर का रक्त गिरकर बालू के ऊपर जमकर काला पड़ गया था।

एक लाल आभा कहीं से नाचती-नाचती वहाँ घुसकर पीछे की दीवार पर प्रतिफलित हुई। उस समय मैंने सोचा था, वह कुछ नहीं है,

मेरी ही मोमबत्ती हवा से काँप रही है, जिससे मुझे यह भ्रम हुआ है।

मैं फिर अपने काम में जुट गया। एक आदमी के लिए एक हाथ से जितना कर सकना संभव है, वह मैं करने लगा। यह-वह जो कुछ ज़रूरी जान पड़ा, वह इकट्ठा कर लिया। कल ही इस मनहूस टापू को खाली करके चला जाऊँगा। एक हाथ का काम होने के कारण इसमें बहुत-सा समय लग गया। कुछ देर बाद ही दिन ने अपने आने की सूचना दी।

पशु-मनुष्यों का गाना थम गया। जान पड़ा, जैसे किसी चीज़ के लिए वे परस्पर लड़-झगड़ रहे हैं। उसके बाद ही पशु-मनुष्यों में से किसी का गरजना सुन पड़ा--"लाओ, लाओ, और, और लाओ।" इसके बाद हल्का-सा छीना-झपटी का शब्द हुआ और फिर बिल्कुल ही दूसरी तरह की—मानव-कंठ की—एक विकट चीख सुन पड़ी। मैं कोठरी से झपटकर बाहर निकला और कान खड़े करके सुनने लगा। एकाएक तीक्ष्ण धारवाली छुरी की तरह उस सन्नाटे को चीरती हुई रिवाल्वर की गरजती हुई आवाज़ हुई।

साथ-ही-साथ मैं दौड़ पड़ा। लगभग उसके साथ-ही-साथ पीछे से कुछ पैकिंग बक्सों और शीशे के सामान के गिर पड़ने का शब्द हुआ। किंतु उस समय इन सब बातों पर ध्यान देने की फुर्सत मुझे न थी। ज़ोर से दर्वाज़ा खोलकर तीर की तरह मैं बाहर निकल गया।

समुद्र के किनारे नाव जहाँ बँधी रहती थी, उसके पास आग जल रही थी। आग की ऊँची लपटें प्रातःकाल के आकाश में फीकी लग रही थीं। उस आग के चारों ओर कुछ एक काली-काली मूर्तियाँ आपस में हाथापाई कर रही थीं। सहसा मांटगोमरी की आवाज़ सुन पड़ी—मेरा नाम लेकर पुकार रहे थे। आग की ओर मैं दौड़ा—हाथ में

तनी हुई पिस्तौल थी। एकाएक मांटगोमरी के हाथ की पिस्तौल छूटी और उससे लाल-लाल लकीर चमक उठी। मांटगोमरी ज़मीन पर गिर पड़े थे। सारी शक्ति एकत्र करके मैं चिल्ला उठा और रिवाल्वर से एक हवाई फ़ायर किया।

कोई जैसे कह उठा—"प्रभू आ गये!" साथ-ही-साथ वह हाथापाई थम गई। सब प्राणी इधर-उधर छिटक गये। सामने की आग 'दप्' करके एक बार जलकर बुझ गई। मुझे देखकर सब भागने लगे। अधीर उत्तेजना में मैंने उन भागनेवालों को लक्ष्य करके कई गोलियाँ दागीं। इसके बाद उन काली मूर्त्तियों की ओर घूमा।

मांटगोमरी चित पड़े हुए थे। सफ़ेद बालोंवाला आईन-रक्षक उनके ऊपर उनको छापे पड़ा हुआ था। मर जाने पर भी उसका पंजा मांटगोमरी के गले से छूटा नहीं था। पास ही मुँह के बल म्लिङ् पड़ा हुआ था। उसका शरीर भी हिलता-डुलता नहीं था। वह भी मर गया था। उसका मुँह खुला हुआ था; किसीने उसके शरीर को दाँतों से नोच डाला था। टूटी ब्रांडी की बोतल का ऊपरी हिस्सा उस समय भी उसकी मज़बूत मुट्ठी में दबा हुआ था। बाक़ी मूर्त्तियाँ आग के चारो ओर पड़ी हुई थीं। उनमें एक मर गया था और एक मृत्यु की यन्त्रणा से छटपटा रहा था। वह सिर उठाने की चेष्टा करता था; लेकिन उठा न सकता था। फिर निश्चेष्ट हो जाता था।

आईन-रक्षक के शव को मैंने मांटगोमरी के शरीर से छुड़ाकर अलग किया। मांटगोमरी का चेहरा और आँखें एकदम स्याह पड़ गई थीं। साँस लेने में भी उन्हें बड़ा कष्ट होता था। मैंने थोड़ा-सा समुद्र का पानी उनके मुँह पर छिड़क दिया। इसके बाद अपने कोट को लपेटकर तकिये की तरह उनके सिर के नीचे रख दिया। म्लिङ् मर गया। एक भेड़िया-मनुष्य की लाश के ऊपर एक जलती हुई लकड़ी पर पड़ा हुआ

था। उसकी दुर्दशा मुझ से नहीं देखी गई। उसके शरीर को ध्यान से देखने पर मुझे जान पड़ा कि उसमें अभी कुछ साँस बाकी है। मैंने एक गोली मारकर उसे असह्य यंत्रणा से छुटकारा दे दिया। और एक मरा हुआ प्राणी वहाँ पड़ा था। वह सादी पोशाक पहने एक सांड़-मनुष्य था। बाक़ी सब भाग गये थे।

मांटगोमरी के पास जाकर घुटने टेककर मैं बैठ गया। डाक्टरी का ज्ञान न होने के लिए मैं अपने को कोसने लगा।

आग लगभग बुझ चुकी थी। केवल दो-एक छोटे लकड़ी के टुकड़े धीरे-धीरे सुलग रहे थे। मेरे मन में एकाएक यह प्रश्न उठा कि इतनी लकड़ी मांटगोमरी ने कहाँ से पाई?

आकाश अब और भी साफ़ हो आया था। अस्त हो रहा चंद्रमा उज्ज्वल नीले आकाश में भाप लगने से मैले आईने के समान मलिन हो गया था। पूर्व दिशा के आकाश में अरुण की लाली छा गई थी।

इसी समय पीछे से जैसे लकड़ी के फटने का-सा शब्द सुन पड़ा। साथ-ही-साथ उधर से आई हुई हवा भी गर्म मालूम पड़ी।

आतंक से मैं चीख़ उठा। घूमकर देखा, चबूतरे के घेरे के भीतर से ढेरों धुँआ चक्कर मारता हुआ ऊपर उठ रहा था और उस धुँए के भीतर बीच-बीच में आग की लाल लपट दिखाई दे जाती थी। क्षण भर में वहाँ के छप्पर में आग लग गई, जिसके नीचे मेरी कोठरी थी। धीरे-धीरे आग सारे हाते में फैलने लगी।

सारी घटना मेरी समझ में आ गई। मांटगोमरी की सहायता के लिए जब मैं दौड़ा, तब मेरा धक्का लगने से मोमबत्ती उलट कर गिर पड़ी; उसी से यह आग लग गई।

मैंने समझ लिया कि अब यहाँ की कोई चीज़ बचाई न जा सकेगी। यह सोचते ही दिल बैठ गया। साथ-ही-साथ इस टापू से

अपने भागने की बात याद आ गई। यह ख़याल आते ही मैंने उधर देखा, जहाँ मोरो के यहाँ आने-जाने के लिए दो नावें बँधी रहती थीं। ओह, नावें कहाँ! बालू के ऊपर केवल दो कुल्हाड़ियाँ पड़ी थीं और चारों ओर लकड़ी की छोटी-छोटी चिपठियाँ और टुकड़े बिखरे पड़े थे। सवेरे के प्रकाश में काली-काली राख दिखाई दे रही थी और उस समय भी उससे धुँआ निकल रहा था। दोनों नावें चीर-फाड़कर जलाकर मांटगोमरी ने मुझ से बदला लिया है। यह काम उन्होंने इसलिए किया है कि मैं इस टापू से मनुष्यों के जगत् में न जा सकूँ।

मुझे इतना क्रोध आया कि मेरा सारा शरीर काँप उठा। जी चाहा कि मर रहे मांटगोमरी का सिर गोली मारकर चूर-चूर कर दूँ।

एकाएक जैसे मांटगोमरी का एक हाथ ज़रा हिला। इस करुण दृश्य को देखकर मेरा सारा क्रोध मिट गया। अस्फुट आर्तनाद करके मांटगोमरी ने पलभर के लिए आँखें खोलकर मेरी ओर देखा।

उनका सिर मैंने उठाकर सीधा किया। उन्होंने फिर आँखें खोलीं। चुप-चाप भोर के आकाश की ओर क्षणभर एकटक ताककर उन्होंने मेरी ओर आँखें फेरीं। उनकी दोनों आँखें मुँद आईं। बड़े कष्ट से उन्होंने कहा—"माफ़ कीजिएगा मुझे।" जान पड़ा, जैसे वह कुछ सोच रहे हैं। वह कहने लगे—"जाता हूँ, मनहूस पृथ्वी, जाता हूँ। ख़तम—सब ख़तम। यह संसार...कैसा जटिल है...ओह..."। उनके ये अंतिम शब्द सुननेवाला अकेला मैं ही वहाँ पर था। मांटगोमरी का सिर एक ओर लुढ़क गया। जान पड़ा, थोड़ा पानी मुँह में डाला जाय तो उन्हें राहत मिलेगी। लेकिन पानी वहाँ कहाँ! एक बर्तन भी नहीं, जिसमें पानी लाया जाय। एकाएक जैसे उनका सिर बहुत भारी हो गया। मेरी छाती के भीतर जैसे एक ठंडा स्रोत-सा बह गया।

मांटगोमरी के मुँह पर झुककर उनकी कमीज़ हटाकर छाती पर

मैंने हाथ रक्खा। धड़कन बन्द हो गई थी। उसी घड़ी सूर्य के प्रकाश की एक क्षीण उत्तप्त सफेद किरण उपसागर के भीतर से एक लकीर की तरह आकर समुद्र की छाती पर पड़ी और उसने उज्ज्वल चमक पैदा कर दी। उनका मौत से पीला पड़ा हुआ मुख-मण्डल रक्तिम आभा से उद्भासित हो उठा।

धीरे-धीरे उनका सिर उसी कोट के तकिये पर रखकर मैं उठ खड़ा हुआ। मेरे सामने सुनसान महासागर सूर्य की किरणों से झलमला रहा था। फिर वही भयावह सन्नाटा! मेरे पीछे टापू था—प्रभाती के आगमन में भी नीरव, निर्जन। पशु-मानवों का भी कहीं पता नहीं था, उनका शब्द भी नहीं सुन पड़ता था। चबूतरे के घेरे के भीतर जो कुछ था, सब जलकर खाक हो चुका था। अब भी बीच-बीच में जली हुई लकड़ियों के चिटकने का शब्द सुन पड़ रहा था। इकट्ठा हुआ धुआँ समुद्र के किनारे से दूर जाकर पेड़ों के ऊपर चक्कर खाता हुआ पशु-मनुष्यों की झोपड़ी की तरफ उड़ गया। मेरे पास दोनों नावों का जला हुआ राख का ढेर और पाँच लाशें!

इसके बाद झाड़ी की आड़ से ती नअद्भुत पशु-मनुष्य निकल आये। उनकी पीठ पर कूबड़ था, जैसा साँड़ों के होता है। सिर झुका हुआ था। दोनों हाथ विकृत थे। उनकी कौतूहली आँखों में शत्रु की दृष्टि थी। इधर-उधर सिर डुलाते हुए वे आगे बढ़े।

२०

पशु-मनुष्यों के साथ अकेले

अकेले ही मुझे उनका सामना करना पड़ा। अकेले कहना भी ठीक न होगा; क्योंकि मेरा बाँयाँ हाथ टूटा हुआ बेकार था। मेरी जेब में जो पिस्तौल थी, उसके भी दो चेंबर खाली थे। जिन कुल्हाड़ियों से दोनों नावें काटी गई थीं, वे इधर-उधर बिखरे हुए छोटी-छोटी लकड़ी के टुकड़ों के नीचे पड़ी हुई थीं। मेरे पीछे ज्वार का बढ़ता हुआ पानी उमड़ रहा था।

साहस पर भरोसा करने के सिवा और कोई उपाय नहीं था। तीनों दैत्याकार प्राणी धीरे-धीरे आगे बढ़ते आ रहे थे। पूर्ण स्थिर दृष्टि से मैंने उनकी ओर देखा। वे मेरी दृष्टि की उग्रता को नहीं सह सके। काले-काले मुख नीचे करके किनारे पड़ी हुई लाशों को सूँघते-सूँघते आगे बढ़ने लगे। भेड़िया-मनुष्य की लाश के नीचे से खून में सना हुआ चाबुक मैंने खींच लिया। चाबुक फटकारते ही वे थमकर मेरी ओर ताकने लगे। मैंने हुक्म दिया—प्रणाम करो—लेटकर प्रणाम करो।

वे इधर-उधर करने लगे। एक ने ज़रा घुटने झुकाये। फिर मैंने अपने हुक्म को ज़ोर से दुहराया। इसके बाद एक पग आगे बढ़ गया। किन्तु भय के मारे प्राण होंठों पर आ गये। धीरे-धीरे एक प्राणी घुटने टेककर बैठ गया— इसके बाद बाक़ी दोनो ने भी उसका अनुसरण किया।

उन की ओर सतर्क दृष्टि रखकर मैं उन लाशों की ओर आगे बढ़ा— जिस तरह कोई अभिनेता दर्शकों की ओर मुँह रखकर स्टेज से निकल जाता है।

मृत आईन-रक्षक की लाश पर पैर रखकर मैंने कहा—इन सबने आईन को नहीं माना था, इसीलिए ये मार डाले गये। आईन-रक्षक को, यहाँ तक कि द्वितीय चाबुकधारी को भी सज़ा से छुटकारा नहीं मिला। देखते हो, आईन कितना बड़ा है? उसकी शक्ति कितनी है? आओ देखो।

उन में से एक प्राणी ने आगे बढ़कर कहा—कोई नहीं बचेगा।

मैंने उसकी प्रतिध्वनि करते हुए कहा—कोई नहीं बचेगा। इसी से मैं जो हुक्म देता हूँ, उसे सुनो।

खड़े होकर प्रश्न की दृष्टि से वे परस्पर एक दूसरे का मुँह देखने लगे।

"वहाँ खड़े हो" कहकर मैंने दोनो कुल्हाड़ियाँ उठा लीं और उनका लोहे का हिस्सा हाथ में लटका लिया। मांटगोमरी का रिवाल्वर उठाकर देखा, उसके दो चैंबरों में गोलियाँ भरी थीं। उनकी जेब देखने पर और भी कुछ गोलियाँ मिल गईं।

चाबुक तानकर मांटगोमरी के शव की ओर इशारा करके मैंने कहा—इसे उठाकर समुद्र के पानी में फेंक आओ।

वे ज़रा आगे बढ़े। मांटगोमरी का भय तब भी उनके मन में

पूरी मात्रा में भरा हुआ था ; लेकिन उससे भी अधिक भय मेरे लाल चाबुक का था। कुछ देर तक वे दुविधा में इधर-उधर करते रहे। मेरे और दो बार चाबुक फटकारने के बाद बिल्कुल ही अनिच्छा रहने पर भी वे मांटगोमरी की लाश को उठाकर समुद्र की ओर बढ़े। धीरे-धीरे पानी में उतरने लगे।

मैंने कहा— जाओ, आगे बढ़ो— उसे और भी दूर ले जाओ।

छाती तक पानी में जाकर उन्होंने मेरी ओर देखा।

मैंने कहा— हाँ, अब छोड़ दो।

साथ-ही-साथ उन्होंने मांटगोमरी के शव को पानी में छोड़ दिया। 'छपाक्' शब्द के साथ ही मांटगोमरी का मृत शरीर पानी में ग़ायब हो गया। मेरे हृदय को जैसे किसीने मरोड़ दिया। भर्राई हुई आवाज़ में मैंने कहा— ठीक।

भय के मारे चटपट वे लोग उस जगह से चले आये। किनारे पर आकर उन्होंने एक बार डरते हुए पीछे की ओर देखा कि उनसे बदला लेने के लिए कहीं मांटगोमरी लौटे तो नहीं आ रहे हैं।

बाक़ी लाशों को दिखाकर मैंने कहा— अब इन्हें भी फेंक आओ।

मांटगोमरी को जिस जगह बहा आये थे, उधर वे अब की नहीं गये। बाक़ी कई लाशों को लगभग एक सौ गज़ दूर ले जाकर बहा आये।

म्लिङ् की लाश को लेकर वे पानी में बढ़े ; मैं उनकी ओर देखता रहा। इसी समय पीछे भारी पैरों की आहट सुनाई दी। मैंने घूमकर देखा, सिर्फ दस बारह गज़ के फ़ासले पर हायना-सुअर मौजूद है। सिर झुकाये आग बरसानेवाली दृष्टि से मुझे घूर रहा है। पूरे एक मिनट तक हम दोनो परस्पर एक दूसरे की तरफ़ एकटक ताकते रहे। इसके बाद मैंने चाबुक फेंककर फुर्ती के साथ पकेट से रिवाल्वर निकाल लिया। इस

दुष्ट को मैं मार डालना चाहता हूँ; क्योंकि इस टापू में अब यही मेरा सब से बड़ा शत्रु है। साधारण बहाना पाते ही गोली मार दूँगा। शायद यह अन्याय होगा, लेकिन मैं लाचार हूँ।

कुछ सेकिण्डों में ही मैंने अपने को तैयार कर लिया। चिल्लाकर मैंने कहा— प्रणाम कर— लेटकर प्रणाम कर!

चमकते हुए दाँत निकालकर हिंस्र-भाव से वह कह उठा—कौन हो तुम, जो तुम को मैं...

प्रायः उसके इन शब्दों के साथ-ही-साथ मेरा रिवाल्वर गरज उठा। किसी तरह निशाना साधकर मैंने रिवाल्वर का घोड़ा दबा दिया। साथ ही साथ विकट शब्द से गरजकर वह टेढ़ीमेढ़ी गति से भागने लगा। समझ गया, निशाना ठीक नहीं बैठा। दुबारा गोली मारने के पहले ही वह मार के बाहर जाकर आँखों से ओझल हो गया। कुछ देर तक उधर ताकते रहने के बाद फिर अपने अनुगत उन पशु-मानवों की ओर घूमा। उनको जो काम मैंने सौंपा था, वह समाप्त होते ही आग के पास, जहाँ वे लाशें अब तक पड़ी थीं, पैरों से बालू समेट-समेटकर वहाँ के सब खून के निशान मैंने ढक दिये।

फिर उन पशु-मानवों को जाने का इशारा करके मैं झाड़ी की ओर बढ़ा। कुल्हाड़ी के लोहे के साथ चाबुक को भी हाथ में लटकाकर रिवाल्वर को मजबूती से पकड़ लिया।

इस समय मुझे इस बात की जरूरत थी कि एकान्त में बैठकर अपनी वर्तमान अवस्था के बारे में विचार करूँ। पहली बात यह है कि टापू में ऐसी कोई जगह नहीं रही, जहाँ निश्चिन्त होकर विश्राम कर सकूँ या सो सकूँ। इस टापू में आने के बाद से ही मेरी शक्ति और साहस सौगुना बढ़ गया है। किन्तु फिर भी अधिक थक जाने पर अब भी मैं अपने को ठीक नहीं रख पाता। स्पष्ट समझ पा रहा हूँ

कि अब मेरे लिए एकमात्र उपाय यही है कि इन पशु-मानवों के साथ मिलकर उनका विश्वास-पात्र बन जाऊँ—साथ ही उन पर मेरा दबाव भी रहे। लेकिन मेरे मन का जोर घड़ी-घड़ी भर पर घटता जा रहा है। धीरे धीरे फिर समुद्र के किनारे जाकर, एक जगह ढूँढकर टापू की ओर मुँह करके बैठ गया, जिसमें अचानक कोई प्राणी मुझ पर आक्रमण न कर सके। मैं सोचने लगा—इस टापू से चले जाने का सुयोग कब मिलेगा? इस बन्धु-बान्धवहीन विपत्ति-पूर्ण देश में क्या मैं तब तक जीवित रह सकूँगा? और, इस टापू से किसी दिन चला ही जा सकूँगा, यह निश्चय या संपूर्ण आशा भी तो नहीं है। मैंने आदि से अन्त तक सारी घटना को सोचने की चेष्टा की; लेकिन भावावेश अधिक होने के कारण अच्छी तरह सिलसिलेवार नहीं सोच सका।

मांटगोमरी की निराशा के कारण पर विचार किया। उन्होंने कहा था कि ये सब पशु-मानव बदल जायँगे; फिर सभी वही पशु बन जायँगे। डा० मोरो ने भी कहा था कि पशुत्व के सब लक्षण एक-एक करके उनमें लौट आते हैं। इसके बाद उस हायना-सुअर के बारे में सोचा। उसे अगर नहीं मार सका तो उसी के हाथों में अवश्य मारा जाऊँगा। आईन-रक्षक अगर जीता होता तो भी एक बात थी। वे अब जान गये हैं कि चाबुकधारी की भी मृत्यु हो सकती है।

उस दूर की हरी घनी झाड़ी के भीतर से वे क्या मुझे ताक रहे हैं? क्या इसकी राह देख रहे हैं कि कब मैं उनकी पकड़ में आऊँगा। या वे मेरे विरुद्ध कोई षड्यंत्र रच रहे हैं? हायना-सुअर उनसे क्या कह रहा है? कौन कह सकता है, क्या हो रहा है? इसी तरह के अनेक प्रकार के असंलग्न भयावह प्रश्न मेरे दिमाग में चक्कर खा रहे हैं जिससे मैं अच्छी तरह कुछ सोच भी नहीं सकता।

एकाएक कुछ समुद्री चिड़ियों ने चिल्लाकर मेरे सोचने के सिलसिले को तोड़ दिया। आँख उठाकर उधर देखा—समुद्र की लहरों ने एक लाश को लाकर किनारे पर पहुँचा दिया है और उसी पर मँडलाती हुई चिड़ियाँ चीख रही हैं। वह लाश किसकी है, यह मैं जान गया, लेकिन उसके ऊपर मँडला रही चिड़ियों को हाँकने की हिम्मत नहीं हुई।

टापू के किनारे की ओर लक्ष्य रखकर किनारे-किनारे पशु-मानवों की झोंपड़ी की ओर बढ़ने लगा, जिसमें कोई पशु-मानव गाफ़िल पाकर आक्रमण करने का मौक़ा न पा सके। इस झोपड़ी में मैं एक दिन हो आया था, इसी से उधर की राह जानता था। चार फ़र्लांग तक इसी तरह चलने के बाद मैंने देखा, उन्हीं तीन प्राणियों में से एक झाड़ी के भीतर से मेरी ओर आगे बढ़ रहा है। एक के बाद एक कई दुर्घटनाएँ होने के फल-स्वरूप मेरे मन की अवस्था इस समय ऐसी हो गई थी कि तुरन्त रिवाल्वर निकाले बिना मैं न रह सका। कुछ हिचकता हुआ वह आगे बढ़ आया।

मैंने चिल्लाकर उससे कहा—चले जाओ! मेरे पास मत आओ।

वह बोला—क्या मैं ज़रा आपके पास नहीं आ सकता?

"नहीं, चले जाओ।" कहकर चाबुक दाँतों से पकड़कर एक पत्थर उठाने के लिए जैसे मैं नीचे झुका, वैसे ही वह भाग गया।

इसी तरह निर्जन राह होकर मैं झोपड़ी के पास पहुँच गया। पेड़-पत्तों की आड़ में छिपकर उन प्राणियों के हाव-भाव को ध्यान से देखने लगा कि डॉ० मोरो और मांटगोमरी की मृत्यु तथा यंत्रणागृह के विनाश को उन्होंने किस दृष्टि से देखा है, इन बातों का उन पर क्या प्रभाव पड़ा है। अब मेरी समझ में आ रहा है कि डरकर मैंने कैसी भयानक भूल की थी। सवेरे के समय मैंने जो साहस दिखाया था, उसे

बनाये रहकर ही उनके सामने जाना चाहिए था। अगर ऐसा करता, तो शायद मोरो के आसन पर बैठकर उन्हें अपने शासन में रख सकता था। किन्तु ऐसा न करने का फल अब यह हुआ कि मैं उनका दलपति या सरदार ही रह गया।

दोपहर के लगभग उन प्राणियों में से कुछ लोग गर्म बालू के ऊपर बैठकर धूप खाने लगे। भूख-प्यास की बेचैनी ने अन्त को मेरा भय दूर कर दिया। रिवाल्वर को ताने हुए मैं झाड़ी की आड़ से उन लोगों की ओर बढ़ा। एक मादा भेड़िया-मनुष्य ने मुँह घुमाकर मेरी ओर देखा; उसकी देखादेखी और सब ने भी। मुझे देखकर उठकर मेरे पास आने या मुझे प्रणाम करने का कोई इरादा उनका नहीं जान पड़ा। मेरा शरीर दुर्बल और एक हाथ बेकाम था, इसलिए मैंने भी इतने प्राणियों को धमकाकर नमस्कार कराने का साहस नहीं किया। ज़रा रुककर, फिर एक पग बढ़कर कहा—"मुझे भोजन चाहिए।" मेरा यह कथन सुनने में विनती-सा लगा।

एक साँड और सुअर के मेल से बने प्राणी ने जैसे ऊँघते-ऊँघते अपने लोगों की झोपड़ी की ओर इशारा करके कहा—वहाँ है।

उन लोगों को नाँघकर मैंने उस दुर्गंध से भरी झोपड़ी में प्रवेश किया। उसके भीतर उस समय कोई नहीं था; निश्चिन्त मन से बैठकर मैंने रक्खे हुए फल पेट भरकर खाये। तन्द्रा और थकान से आँखें बन्द हुई जा रही थीं। झोपड़ी में घुसने के बाद द्वार को कुछ अर्धशुष्क वृक्ष-शाखाओं और पत्तों से बन्द करके उधर ही मुँह करके मैं सजग नींद लेने लगा। मुझे यह भरोसा था कि इस बाधा को हटाकर अगर कोई प्राणी अचानक मुझ पर आक्रमण करने आवेगा तो मेरी नींद खुल जायगी।

२१

पशु-मनुष्यों में परिवर्तन

डॉ० मोरो के टापू में इस तरह मैं भी एक पशु-मानव-सा बन गया। जब आँखें खुलीं, उस समय चारों ओर अँधेरा छा गया था। बैंडेज के भीतर टूटे हुए हाथ में दर्द होने लगा। मैं उठ बैठा और यह याद करने की चेष्टा करने लगा कि मैं कहाँ हूँ। बाहर से कुछ कर्कश कंठों की बातचीत सुन पड़ी। सामने आँख उठाकर देखा, रुकावट के लिए मैंने प्रवेश-द्वार पर जो डालें और पत्ते इकट्ठे कर दिये थे, वे नदारत हैं—झोपड़ी के भीतर आने का मार्ग बिल्कुल खुला हुआ है। रिवाल्वर उस समय भी मेरे हाथ में ही था।

मुझे अपने पास ही किसी के साँस लेने का शब्द सुन पड़ा। जैसे कोई प्राणी कुंडली मारे पास पड़ा है। साँस रोके मैं उसे देखने लगा। बहुत धीरे-धीरे वह जीव हिलने लगा। कुछ ठंडी भीगी-सी चीज़ मेरे हाथ में लगी।

भय से मेरा सारा शरीर सिकुड़ गया, मैंने हाथ खींच लिया।

मेरे गले से एक चीख़ निकलते-निकलते गले के पास अटक गई। रिवाल्वर तानकर दबी आवाज़ में मैंने डाँट के साथ पूछा—यहाँ कौन है?

उत्तर मिला—मैं हूँ मालिक।

मैंने कहा—तू कौन है?

उसने कहा—वे कहते हैं, अब कोई मालिक नहीं है; लेकिन मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ। आपने जिन्हें मारा था, मैं उन्हें समुद्र में फेंक आया था। प्रभु, मैं आपका सेवक हूँ।

मैंने कहा—समुद्र के किनारे क्या तुम्हीं मुझे मिले थे?

उसने कहा—हाँ, स्वामी।

मुझे वह विश्वास के योग्य ही जान पड़ा; क्योंकि अगर ऐसा न होता तो जब मैं सो गया था, तभी वह मुझ पर हमला कर बैठता।

"अच्छी बात है" कहकर मैंने हाथ आगे बढ़ा दिया। उसने जीभ से हाथ चाटकर मुझे अपना चुंबन और भक्ति जताई। मैं उसके अपने पास आने का मतलब समझ गया। मुझ में फिर साहस लौट आया। मैंने पूछा—और सब कहाँ हैं?

वह कुत्ता-मनुष्य कह उठा—वे सब पागल हैं स्वामी, अब भी वे उधर बैठे हुए आपस में चर्चा कर रहे हैं कि हमारे प्रभु (डॉ० मोरो) तो मारे गये, द्वितीय चाबुकधारी (मांटगोमरी) भी नहीं हैं। तीसरा चाबुकधारी, जो समुद्र के पानी में उतर गया था, वह तो हम लोगों-जैसा ही है। अब हमारा कोई प्रभु नहीं है, चाबुक नहीं है, यंत्रणाघर भी नहीं है, सब खतम हो गया। आईन को हम लोग पसन्द करते हैं, आईन को मानेंगे भी। लेकिन यंत्रणाघर अब नहीं है, प्रभु कोई नहीं है, चाबुक भी नहीं है और यह कुछ भी अब न होगा। यही सब वे लोग कह रहे हैं। मगर मैं जानता हूँ स्वामी, मैं सब जानता हूँ।

अन्धकार में हाथ बढ़ाकर मैं कुत्ता-मनुष्य का सिर थपथपाकर

बोला—ठीक ठीक।

उसने कहा—अभी आप उन सब को मार डालेंगे।

मैंने कहा—हाँ, अभी! जल्दी ही उन सब को मार डालूँगा। केवल तुम जिन्हें कहोगे, उन्हें नहीं मारूँगा।

"प्रभु जिसे चाहते हैं, उसे मार डालते हैं"—यह बात उसने जिस तरह कही, उससे जान पड़ा कि मैंने उसके मन की ही बात कही है।

मैंने कहा—जब तक समय नहीं आता, तब तक इस तरह उन का पाप बढ़ने दो, वे बेवकूफ़ की तरह काम करते रहें। उन्हें यह न जानने देना कि मैं ही प्रभु हूँ।

उसने कहा—स्वामी जो कहते हैं, वह अच्छे के लिए ही है।

मैंने कहा—लेकिन एक जने ने बहुत पाप किया है। जब वह मुझे देख पड़ेगा, उसे मार डालूँगा। जैसे मैं तुम्हें उसे दिखा दूँ, तुम फ़ौरन् उसके ऊपर हमला कर देना। अब मैं जाता हूँ; देखूँ, जो लोग वहाँ जमा हैं, वे क्या कहते हैं।

झोपड़ी के प्रवेश-द्वार को अँधेरे से ढकता हुआ वह कुत्ता-मनुष्य बाहर निकल गया। मैं भी उसके पीछे-पीछे निकला। रात हो गई थी। झाड़ी से ढके उस गुफ़ा के मार्ग में इधर-उधर अन्धकार जमा हो गया था। दूर की जिस ढालू जगह पर अस्त हो चुके सूर्य की आभा झलक रही थी, वहाँ थोड़े से स्थान में आग जल रही थी। आग के पास इधर-उधर विकल अंगवाले पशु-मानवों के दल घूम-फिर रहे थे। और भी दूर पर काले-काले घने वृक्षों की कतार नजर आ रही थी। उन वृक्षों की ऊपर की डालों ने उस कालिमा के ऊपर और अधिक ठोस काली एक रेखा खींच दी थी। गुफा की राह को नाँघकर आगे बढ़ने पर तुरन्त निकला हुआ चन्द्रमा दिखाई दिया। बुझे हुए ज्वालामुखी से भाप का

एक टुकड़ा निकलकर ऊपर फैल गया।

मन का ज़ोर लौटाकर मैंने अपने साथी उस कुत्ता-मनुष्य से कहा—मेरे साथ-साथ आओ। उसी तंग पगडंडी से हम दोनो पास-पास चलने लगे। झोपड़ी के बाहर जो अस्पष्ट मूर्त्तियाँ हमारी ओर ताक रही थीं, उनको जैसे हमने कुछ समझा ही नहीं, ऐसा भाव हमने दिखाया।

आग के पास जो बैठे थे, उन्होंने प्रणाम करना तो दूर, मेरे प्रति बहुत कुछ अवज्ञा का ही भाव दिखाया—जैसे मैं कोई चीज ही नहीं हूँ। मैंने चारो ओर निगाह दौड़ाई; लेकिन हायना-सुअर मुझे नहीं देख पड़ा। यहाँ बीस के लगभग पशु-मानव जमा थे। कोई-कोई आपस में बातें कर रहा था, और कोई केवल आग की ओर ताकता हुआ बैठा था।

मेरे दाहनी ओर से वानर-मनुष्य कह उठा—मर गये, मर गये! प्रभु मर गये—यन्त्रणाघर, यन्त्रणाघर अब नहीं है।

मैंने तुरन्त जोरदार आवाज़ में सबको सुनाकर कहा—वह मरे नहीं है; अब भी वह हम लोगों की हरकतों को देख रहे हैं।

यह सुनते ही सब चौंक उठे। बीस जोड़ी आँखें मुझ पर जम गईं। मैंने कहा—यह सच है कि अब यंत्रणाघर नहीं है; लेकिन वह फिर होगा। प्रभु को तुम लोग नहीं देख पा रहे हो, लेकिन वह ऊपर से तुम सबको देख रहे हैं, तुम लोगों की सब बातें सुन रहे हैं।

कुत्ता-मनुष्य मेरा समर्थन करता हुआ कह उठा—ठीक-ठीक।

मैंने यह बात इतनी दृढ़ता से कही कि वे सब प्राणी सिहर उठे।

उनमें से किसी एक ने कहा—यह आदमी, जिसके हाथ में बैंडेज बँधा है, अद्भुत बात कह रहा है।

मैंने कहा—मैं ठीक कह रहा हूँ। प्रभु फिर लौट आवेंगे; यंत्रणाघर भी फिर लौट आवेगा। जो कोई आईन को तोड़ेगा, उसकी बड़ी दुर्गति होगी।

उन लोगों ने विस्मय की दृष्टि से एक दूसरे की ओर ताका। अन्यमनस्क भाव प्रकट करते हुए मैं उन्हें दिखा-दिखाकर ज़ोर ज़ोर कुल्हाड़ी ज़मीन पर मारने लगा। सूखी धरती में कुल्हाड़ी कितनी गहरी धँस रही है, इसे वे लोग सहमे हुए-से ध्यान से देखने लगे।

कुछ देर बाद सैटर ने कुछ सन्देह प्रकट किया। उसे समझाकर मैं बताने लगा तो और एक प्राणी ने एक आपत्ति प्रकट की। क्रमशः आग के चारो ओर खड़े और बैठे हुए उन प्राणियों में बहस होने लगी। मैंने लक्ष्य किया, घड़ी-घड़ी भर पर मेरी बात पर उनका विश्वास बढ़ता जा रहा है, और मेरे निरापद होने की संभावना मज़बूत होती जा रही है। मैं भी रंग-ढंग देखकर अब ख़ूब सहज भाव से ही उनके साथ बात-चीत करने लगा। लगभग घंटे भर तक बातचीत होने के बाद उनमें से अधिकांश ने मेरी बात मान ली। बाक़ी जो रहे, वे कुछ हिचिर-मिचिर करने लगे।

अपने परम शत्रु हायना-सुअर के प्रति मेरी खोजनेवाली नज़र सर्वदा—हर घड़ी—सजग थी। लेकिन उसका कहीं पता नहीं था। बीच बीच में अवश्य कुछ सन्देहजनक अवस्था देखते ही मैं चौंक उठता था; किन्तु कुछ क्षणों में ही मेरे मन में अपने ऊपर पूर्ण विश्वास लौट आया। धीरे-धीरे रात अधिक होगई। उस समय चन्द्रमा बीच आकाश में था। सब पशुमानव अपने अद्भुत दाँत निकालकर जम्हाते-जम्हाते एक-एक करके झोपड़ी के भीतर चले गये। उस निर्जन स्थान में अकेले रात बिताने का साहस मुझे नहीं हुआ; और सब प्राणियों के साथ मैंने भी उसी झोपड़ी के भीतर जाकर आश्रय लिया। सोचकर देखा, यहाँ

अकेले रहने की अपेक्षा इन सबके साथ रात बिताना एक तरह से निरापद है।

उसी दिन से मेरे टापू के प्रवास का दूसरा अध्याय शुरू हुआ। लंबे दस महीने इन पशु-मानवों के साथ मेरे बीते। उल्लेख के योग्य कोई ख़ास बात इस नीरस वैचित्र्यहीन दस महीने के जीवन में नहीं घटित हुई। बीच बीच में जो दो-एक छोटी-मोटी अप्रीतिकर घटनाएँ हुईं, उनका विशेष विवरण लिखकर मैं पाठकों का समय नष्ट नहीं करना चाहता। ऐसी अनेक अप्रीतिकर घटनाएँ याद आ रही हैं, जिनके बारे में सोचकर अब मुझे विस्मय होता है कि मैं कैसे इतने दिनों तक इन दानवों के बीच अपना प्रभुत्व बनाये रहा! अवश्य मैं यह नहीं दावा करता कि इन लोगों के साथ मेरा कभी झगड़ा नहीं हुआ—दो-एक जगह अपने शरीर में इन लोगों के दाँत के निशान भी मैं दिखा सकता हूँ; किन्तु अन्त को वे सदा मुझसे दबते ही रहे। मैं इन लोगों पर जो अपना प्रभुत्व जमाये रह सका, इसके दो कारण मुख्य थे। एक तो यह कि मैं निशाना ताककर पत्थर-ढीला चलाने में निपुण था; दूसरे कुल्हाड़ी का निर्मम प्रहार। उस कुत्ता-मनुष्य की प्रभुभक्ति ने, जो कि कुत्ते का एक विशेष गुण होता है, भी मेरी बड़ी सहायता की। मैंने देखा है, गहरी चोट पहुँचा सकना ही इन लोगों की दृष्टि में बड़प्पन का मापदण्ड (तराजू) है। शासन में रखने के लिए शायद कभी कभी मैं उनमें से किसी पर गुरुतर प्रहार कर बैठा हूँ; लेकिन मेरे सामने कभी किसी ने चूँ नहीं की। आड़ में, पीठ-पीछे, मेरे हथियार की मार के बाहर शायद वे अपना विरोध प्रकट करते रहे हों।

हायना-सुअर हमेशा मेरी निगाह से बचता रहा और मैं भी उसके डर से सदा सतर्क रहकर दिन बिताता रहा। मेरा परम विश्वस्त सेवक वह कुत्ता-मनुष्य उससे जैसे घृणा करता था, वैसे ही उससे

वह डरता भी था। मुझे जान पड़ता है, मेरी ओर उसके इस झुकाव और आकर्षण का प्रधान कारण उसका सुग्रर से डरना ही था।

कुछ दिन बाद ही मुझे मालूम होगया कि हायना-सुग्रर के मुँह को भी खून लग गया है और उसका परिणाम भी चीता-मनुष्य जैसा ही होगा। जंगल के भीतर ही कहीं उसने आश्रय ढूँढ़ लिया है और वहाँ वह अकेला ही रहता है। एक बार मैंने पशु-मनुष्यों को उसके खिलाफ़ बर्गलाकर उसके पीछे लगा देने की चेष्टा की थी; किन्तु किसी विशेष उद्देश्य से सबको संबद्ध करने भर का प्रभुत्व या आधिपत्य मेरा नहीं था, इससे मुझे इसमें सफलता नहीं मिली। मैंने कई बार एकाएक आक्रमण करने की चेष्टा की थी; लेकिन धूर्त हायना-सुग्रर ने एक बार भी मुझे ऐसा मौक़ा नहीं दिया। वह भी मुझ पर अचानक टूट पड़ने की घात लगाये रहता था; उसके भय से मैं भी सहमा-सहमा रहता था; सजग रहता था और वह कुत्ता-मनुष्य तो जहाँ तक होता था, मेरा साथ ही नहीं छोड़ता था।

पहले महीने भर के लगभग पशु-मनुष्यों ने अपनी बाद की अवस्था की तुलना में कुछ-कुछ साधारण मनुष्य का-सा ही व्यवहार किया। उस कुत्ता-मनुष्य के अलावा और भी दो-एक प्राणियों के साथ एक तरह से मेरी मित्रता रही। वे मेरे अनुगत साथी रहे। छोटा स्लाथ भी मेरे पास ही पास घूमा करता था। उसकी मुझपर बड़ी भक्ति थी। लेकिन वानर-मनुष्य मुझे बहुत दिक करता था। उसके हाथ में भी पाँच उँगलियाँ मेरी ही तरह थीं, इसलिए वह अपने को मेरे बराबर ही समझता था। हर घड़ी वह मेरे साथ बकबक किया करता था—जो जी चाहता था, वही अगड़म बगड़म बकता था। उसके स्वभाव में एक बड़े मजे की बात थी। वह खूब नई नई बातें गढ़ सकता था। जान पड़ता है, उसकी यह धारणा थी कि कोई अर्थहीन

नई बात कह सकना बड़ी बहादुरी या बड़प्पन का लक्षण है। रोजमर्रा के जीवन की बातचीत को वह 'छोटी चीज़' कहता था, और उसके साथ अन्तर दिखाने के लिए इन नये शब्दों के व्यवहार का नाम उसने रक्खा था 'बड़ी चीज़'। अगर कभी वह मेरी कोई बात नहीं समझ पाता था तो कहता था—"वाह, बड़ी अच्छी बात है! ज़रा फिर तो कहिए।" इसके बाद कई बार मेरे मुँह से वह शब्द सुन-सुनकर याद कर लेता था। फिर जब-तब जहाँ-तहाँ पशु-मनुष्यों के आगे वही शब्द या बात कहता फिरता था। गर्व से उसकी छाती फूल जाती थी। जिन सब सहज बातों का अर्थ उसकी समझ में आ जाता था, उनकी ओर उसका रुझान बिलकुल नहीं था। अतएव उसके लिए मुझे नित्य नई-नई बातें और नये-नये शब्द निकालने और गढ़ने पड़ते थे। इन पशु-मानवों में वही सब से अधिक निर्बोध था। मनुष्य में जो कुछ त्रुटियाँ या दोष हो सकते हैं, वे सब उसने सीख लिये थे; साथ ही वानर-सुलभ कोई बुरा अभ्यास उससे नहीं छूट सका था।

पहले कई सप्ताह इसी तरह कट गये; उन प्राणियों का मेरे प्रति व्यवहार साधारणतः अच्छा ही था। आईन को भी ये मानकर चलते थे। लेकिन एकाएक एक दिन मैंने देखा, एक ख़रगोश की लाश चीरी-फाड़ी हुई पड़ी है। मैं समझ गया, यह उसी हायना-सुअर की करतूत है। इस एक घटना के सिवा इन कई दिनों में इन प्राणियों ने कोई ऐसी बात नहीं की, जो मनुष्य-स्वभाव के विरुद्ध हो। लेकिन उसी महीने से उनकी बातचीत और चालचलन में जैसे एक परिवर्तन आने लगा। मैंने देखा, उनका उच्चारण अस्पष्ट होता जा रहा है, बोलते भी वे बहुत कम हैं। वानर-मनुष्य की बकबक बहुत बढ़ गई है, प्रायः अर्थहीन अन्ट-शन्ट जो जी में आता है, बकता है। यह बात और किसी के लिए कल्पना करना भी कठिन है कि स्वच्छ स्पष्ट भाषा

कैसे धीरे-धीरे अस्पष्ट होती-होती सम्पूर्ण अर्थहीन वाक्यों का समूह बन गई ! उन प्राणियों में से अनेक तो क्रमशः बात करना भी भूल गए, हालाँकि वे उस समय भी मेरी बातों का मतलब समझ लेते थे। धीरे-धीरे सीधे होकर खड़े होने में भी उन्हें कष्ट होने लगा। मैं अक्सर देखता था कि वे चौपायों की तरह चल रहे हैं। पहले तो वे मुझे देखकर इसके लिए लज्जित होते थे, सीधे होकर चलने की चेष्टा करते थे ; लेकिन बिल्कुल सीधे होकर चल न पाते थे। उनका हाथों का इस्तेमाल भो धोरे-धीरे कम होने लगा। अब वे पशु की तरह मुंह डालकर पानी पीते थे। पशुओं की ही तरह मुँह से नोच-नोच कर कड़ी चीज़ें खाने लगे थे। इतने दिन बाद डॉ० मोरो की बातें और उनका मतलब मेरी समझ में आने लगा। उन्होंने कहा था—"एक-एक करके पशुत्व के सब लक्षण इन में लौट आते हैं।" जल्दी जल्दी, बहुत तेज़ी से इन प्राणियों में परिवर्तन आ रहा है।

एक चीज़ देखकर मुझे विस्मय हुआ है। उनमें जो सरदार श्रेणी के थे—और वे अधिकांश मादा थे—उन्होंने ही सब से पहले, जैसे कुछ-कुछ जानबूझ कर ही, भव्यता के सब बन्धनों को तोड़ना शुरू किया। पहले वे आईन मानकर चलते थे ; लेकिन आईन का भय और बन्धन भी धीरे-धीरे शिथिल हो आया। वह कुत्ता-मनुष्य फिर थोड़ा-थोड़ा करके कुत्ता बनने लगा। क्रमशः उसका मनुष्य की तरह बोलना बन्द हो गया। उसके नंगे शरीर में रोएँ देख पड़ने लगे और वह चारों पैरों से चलने लगा ! अब तक मैं उनके साथ उन्हीं की झोपड़ी में रहता था ; लेकिन उनकी यह अवनति और परिवर्तन देखकर वहाँ रहने को जी नहीं चाहा। मोरो के चबूतरे के खँडहर में लौटकर उस ध्वंसस्तूप के ऊपर मैं पत्तियों और घास-फूस से एक कुटी बनाकर उसी में रहने लगा। यन्त्रणागृह की याद उस समय तक उन्हें भूली

नहीं थी, इसी से सहज में कोई प्राणी उधर आने का साहस नहीं करता था। अतएव उनकी ओर से मैं निश्चिन्त और निरापद था।

मनुष्य के सब लक्षण किस तरह धीरे-धीरे उन लोगों को छोड़ने लगे, इसका विस्तृत विवरण यहाँ देना असंभव है। क्रमशः कपड़े पहनने उन्होंने छोड़ दिये। उनके शरीर में बाल निकल आये। उनका माथा भीतर पैठने लगा और मुँह में थूथन का आकार प्रकट होने लगा। इन अर्ध-मनुष्यों और अर्ध-पशुओं के साथ मैं एक महीने तक एक ही झोपड़ी में रहा था, यह सोचकर भी अब मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

बहुत धीरे उनमें परिवर्तन आ रहा था—धीरे धीरे अवश्य आ रहा था, किन्तु वह परिवर्तन अव्यर्थ और निश्चित था। अब भी मैं उनके साथ-साथ घूमता फिरता था; क्योंकि अभी तक उनसे डरने की कोई बात नहीं हुई थी। फिर भी मैं यह समझ रहा हूँ कि वह दिन शीघ्र ही आवेगा, जब वे मेरे लिए भय का कारण बन जायँगे। कुत्ता-मनुष्य अब भी मेरे साथ मेरी नई कुटी के भीतर तक आता था और मैं उस पर भरोसा करके निश्चिन्त होकर सोता था। छोटे से स्लाथ-मानव को भी धीरे-धीरे मेरा साथ अरुचिकर हो गया। वह पेड़ों की शाखाओं पर ही रहकर खुश होता था।

लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि वे पशु-मनुष्य एकदम जंगली पशु बन गये—जैसे असली बाघ, भालू, भेड़िया, सांड, सुअर या बन्दर साधारणतः होते हैं, वैसे नहीं हो गये। इसका कारण यही था कि डॉ० मोरो ने हर एक प्राणी का निर्माण करते समय उसके शरीर में अन्य प्राणी के अंग-प्रत्यंग कुछ कुछ जोड़ दिये थे। किसी में भालू की आकृति ही प्रधान थी, किसी में बनबिलाव की और किसी में साँड की। उस समय तक उनमें जो कुछ अथवा जितना मनुष्य-सुलभ साधारण लक्षण

बचा हुआ था, वह भी अब धीरे-धीरे मिटने लगा। वे कभी-कभी एक-आध मनुष्य की सी बात कह उठते थे, अथवा मनुष्य की तरह सीधे होकर खड़े होने की चेष्टा करने लगते थे, जिसे देखकर हँसी आये बिना नहीं रह सकती थी। लेकिन मुझे देखकर कष्ट ही होता था। बेचारे कहीं के नहीं रहे—इतो नष्टस्ततो भ्रष्टः। मनुष्य भी नहीं बन सके और पशु भी नहीं रहे।

कौन कह सकता है कि मुझ में भी कोई आश्चर्यजनक परिवर्तन आ रहा था या नहीं? मेरे कपड़े फटकर मैले चीथड़े से लटकने लगे थे। उन चीथड़ों के भीतर मेरे शरीर का ताँबे जैसा रंग दिखाई देता था। सिर के बाल बहुत बड़े हो गये थे—मैल से चिकट कर लटें बन गई थीं। अब भी सुनता हूँ, लोग कहते हैं कि मेरी आँखों में एक अद्‌भुत, उज्ज्वल चंचल, सतर्क दृष्टि है।

पहले शुरू-शुरू में दिन के समय मैं दक्षिण-सागर के किनारे किसी जहाज के देख पड़ने की अपेक्षा में बैठा रहता था। जहाज के लिए मैंने ईश्वर के निकट बारबार प्रार्थना की है। मुझे आशा थी कि साल बीतने पर 'इपिकाकुआना' जहाज फिर इसी राह से लौटेगा। लेकिन वह नहीं लौटा। इस अर्से में पाँच-पाँच बार जहाज के पाल दूर पर दिखाई दिये; तीन-तीन बार जहाज के इंजन का धुँआ नजर आया; लेकिन कोई भी जहाज इस मनहूस टापू के पास नहीं आया। जहाज के लोगों की दृष्टि आकृष्ट करने के लिए मैं हर घड़ी आग जलाये रखता था; लेकिन इसका भी कुछ फल नहीं हुआ। लोग जानते थे कि ज्वालामुखी से ही यह टापू बना है, उसी ज्वालामुखी का यह धुँआ है। इसी कारण आग को देखकर भी कोई जहाज इधर नहीं आया।

उन दिनों शायद सितम्बर या अक्टूबर का महीना होगा। मैंने ठीक किया कि लकड़ियाँ एक में बांध बूँधकर एक बेड़ा या छोटी नाव सी बना

कर समुद्र की यात्रा शुरू कर दूँगा। जो भाग्य में बदा होगा, वह होगा। मेरा बायाँ हाथ अब ठीक हो गया था, इसलिए दोनों हाथों से काम करने लगा। लेकिन जिन्दगी में कभी बढ़ई या लुहार का काम नहीं किया, अभ्यास न होने के कारण काम में असुविधा होने लगी। नित्य पेड़ काटने और उनकी शाखाओं को जोड़ने-बाँधने का अभ्यास करने लगा। वहाँ कोई रस्सी नहीं थी। ऐसी कोई चीज़ भी नहीं मिली, जिससे रस्सी का काम चलाया जा सके। टापू में बहुत-सी लताएँ अवश्य थीं; पर उनमें कोई ऐसी मजबूत नहीं जान पड़ी। चबूतरे के ध्वंसावशेष के भीतर लोहे या और किसी धातु की खोज करने में पंद्रह दिन बीत गये। दो-एक प्राणी बीच-बीच में आकर झाँकते थे; लेकिन मेरे पुकारते ही भाग जाते थे। इसी समय वर्षा शुरू हो गई। जैसी वर्षा वैसा ही वज्रपात! काम में बाधा पड़ने लगी। अन्त को मेरी अनगढ़ नौका तैयार हो गई। लेकिन नासमझी यह हुई कि मैंने वह नाव समुद्र-तट से लगभग एक मील के फ़ासले पर बनाई थी। फल यह हुआ कि समुद्र तक खींचकर ले जाते समय वह राह में ही टूटकर ढेर हो गई। अब अवश्य मैं सोचता हूँ कि उस नाव पर समुद्रयात्रा न कर सकना ही मेरे लिए अच्छा हुआ। लेकिन उस समय मेरा मन ऐसा हताश हो गया था कि कई दिन तक खिन्न होकर समुद्र के किनारे ही मैं घूमता रहा—जल की ओर ताककर कई बार आत्महत्या करने की इच्छा प्रबल हो उठी थी।

लेकिन आत्महत्या करना मेरा उद्देश्य नहीं था। इसी समय एक ऐसी घटना हो गई, जिससे मैंने निश्चय कर लिया कि अब देर करना ठीक नहीं, शीघ्र ही इस टापू को छोड़ देना चाहिए। जितने ही दिन बीतते थे; उतना ही मेरा निरापद रहना कठिन होता जा रहा था। उस दिन चबूतरे की चहारदीवारी की छाया में लेटा हुआ समुद्र की ओर

ताक रहा था, एकाएक एँड़ी में शीतल स्पर्श पाकर चौंक उठा। घूमकर देखा, स्वाथ मेरी ओर देख रहा है। बोलने का अभ्यास बहुत पहले ही वह खो चुका था; पहले की वह स्वच्छन्द गति भी अब उसमें नहीं है। सारे शरीर में घने रोएँ निकल आये हैं; हथेली फूली-फूली हैं। उसकी ओर मैंने देखा। 'मिनमिन' शब्द करके उसने कुछ कहा। इसके बाद झाड़ी की ओर जरा आगे बढ़ा, और फिर घूमकर मेरी ओर देखा।

पहले मेरी समझ में नहीं आया कि वह क्या कह रहा है, क्या चाहता है। लेकिन फौरन् ही समझ में आ गया कि वह अपने साथ चलने के लिए कह रहा है। मैं उसके पीछे-पीछे चलने लगा। धीरे-धीरे वह एक झाड़ी के भीतर घुसा। मैं भी उसके पीछे गया।

एकाएक देखा; झाड़ी के भीतर एक जगह वह मेरा साथी कुत्ता-मनुष्य मरा पड़ा है, और हायना-सुअर उसके ऊपर बैठा हुआ बड़े मजे से उसका मांस नोच-नोचकर खा रहा है। मेरे पहुँचते ही उस विकट पशु ने अपनी आग बरसाती हुई दृष्टि से मेरी ओर ताका और रक्त से सने हुए दाँत निकालकर भयानक शब्द करता हुआ गरज उठा। मुझे देखकर डरना तो दूर, वह अपने इस आचरण के लिए लज्जित भी नहीं हुआ। अब उसमें मनुष्य का कोई भी चिह्न बाकी नहीं रह गया था। एक पग आगे बढ़कर, रुककर, मैंने रिवाल्वर उसकी ओर तान दिया। वह सामने आ गया।

उसने भागने की कोई चेष्टा नहीं की। उसके दोनों कान पीछे तन गये, रोएँ खड़े हो गये, शरीर सामने की ओर हमला करने के लिए झुक गया। मैंने उस की दोनों आँखों के बीच निशाना साधकर गोली दाग दी। साथ ही साथ वह सीधा मेरे ऊपर फाँद पड़ा। मैं छिटककर गिर पड़ा। मेरा बहुत ही सौभाग्य था, जो उसके शरीर का

सारा बोझ मेरे ऊपर नहीं पड़ा ; केवल उसके शरीर का पिछला हिस्सा मेरे ऊपर पड़कर एकदम स्थिर हो गया। समझ गया, मेरा निशाना खाली नहीं गया। किसी तरह अपने को उसके नीचे से खींचकर निकाला। भय से मेरा शरीर काँप उठा। हायना-सुअर की लाश उस समय भी थर-थर काँप रही थी। चलो अच्छा हुआ, एक बड़ी विपत्ति से छुटकारा मिला। लेकिन यह तो अभी आरंभ ही है ; कौन जाने, और भी कितने पशु-मनुष्य इसी तरह पूरे पशु बन जायेंगे।

वहाँ की सूखी लकड़ियाँ और पत्ते बटोरकर आग जलाई और उसमें ये दोनों लाशें फूँक दीं। मैंने सोचकर देखा, अगर जल्दी ही यह टापू छोड़कर नहीं जा सका तो मेरी मौत अवश्य होगी, टल नहीं सकती। आज नहीं तो दो दिन बाद होगी। इस समय लगभग सभी पशु-मनुष्य जंगल में जाकर रहने लगे हैं, दो-एक के सिवा कोई उस झोपड़ी में नहीं रहता। दिन में कोई बाहर नहीं निकलता, सब सोया करते हैं। यदि कोई आवे तो यही समझेगा कि इस टापू में कोई जीव नहीं रहता। किन्तु रात भर वे इधर-उधर घूमते फिरते हैं और आकाश-पाताल को कँपाते हुए गरजा करते हैं।

कभी-कभी मेरा जी चाहता है कि फन्दा लगाकर अथवा खाली छुरी से ही इन सब को समाप्त कर दूँ। काफ़ी कारतूस होते, काफ़ी गोलियाँ होतीं तो मैं एक सिरे से इन्हें मारना शुरू कर देता। केवल बीस-बाईस प्राणी और ऐसे रह गये थे, जिनसे मुझे प्राणों का भय हो सकता था। उनमें जो अधिक दुस्साहस कर सकनेवाले खूनी जानवर थे, वे सब मर चुके थे। बेचारा कुत्ता-मनुष्य रात को जागकर मेरी रखवाली करता था, पहरा देता था। उसके मर जाने से अब मैं दिन को सोने का अभ्यास करने लगा, जिसमें रात को जागकर पशुओं के आक्रमण से सावधान रह सकूँ! फिर नये सिरे से चबूतरे के

भीतर मैंने अपने रहने का स्थान बनाया, जिसमें कोई प्राणी अगर भीतर आने की कोशिश करे तो उसकी आहट पाते ही मैं सावधान हो सकूँ। वे पशु-मनुष्य अब आग का व्यवहार भी भूल गये हैं—आग को देखकर अब वे भी साधारण पशुओं की तरह डरते हैं। अब मैं दुबारा लकड़ियाँ जोड़कर एक अनगढ़ बेड़ा (Saft) बनाने में जुट गया। अब की मैंने इसका विशेष ध्यान रक्खा कि वह खूब मज़बूत बने।

बड़ी कोशिश, असीम धैर्य और अखंड अध्यवसाय (लगन) से काम करके अन्त को मैं एक डोंगी-सी बनाने में सफल हुआ। लेकिन कहीं कोई ऐसा बर्तन नहीं मिला, जिसमें पीने के लिए पानी भरकर मैं साथ ले जाता। मिट्टी का कोई बर्तन बना लेने का भी उपाय नहीं; क्योंकि सारे टापू में ज़रा-सी भी मिट्टी नहीं मिली। पागल की तरह ढूँढ़ता फिरा, पर कोई पात्र नहीं मिला। क्रोध और निराशा से मैं चीख़ उठा। खीझकर क्रोध के मारे सामने के बेचारे पेड़ की जड़ में ज़ोर से कुल्हाड़ी की गहरी चोट कर बैठा; किन्तु किसी तरह पानी ले चलने का कोई उपाय नहीं सूझ पड़ा।

इसके बाद मेरे जीवन का एक अपूर्व दिन आया। उस दिन की बात मैं इस जीवन में कभी नहीं भूल सकता। अधीर उत्तेजना में सारा दिन बीता। बहुत दूर पर दक्षिण-पश्चिम के कोने में एक छोटा-सा पाल दिखाई दिया। बहुत कुछ छोटे जहाज का पाल जैसा, साथ ही साथ बहुत सी लकड़ियाँ बीन-बटोरकर फुर्ती से मैंने आग जला दी। दोपहर की उस प्रचंड धूप में आग के सामने खड़े होकर उत्सुक एकाग्र दृष्टि से मैं उस पाल की ओर ताकता रहा—घण्टे पर घण्टे बीत गये। भूख-प्यास को भूल गया, विश्राम करना भूल गया। सिर में चक्कर आने लगा। सब पशु आकर विस्मय के साथ मेरी ओर

ताकते रहे। धीरे-धीरे एक-एक करके सब चले गये। दिन समाप्त हो आया। रात के अन्धकार ने आकर उस दूर पर दिखाई पड़नेवाली नाव को अपनी गोद में छिपा लिया। तब भी वह नाव बहुत दूर थी। रात भर मैं बड़े यत्न से उस आग को जलाये रहा; वह धीमी नहीं होने पाई। विस्मित पशुओं के फिर फेरे लगने लगे—उनकी आँखें अँधेरे में चमकने लगीं।

धीरे-धीरे रात बीत गई, सवेरा हो आया। मैंने देखा, वह छोटी नाव मेरे बहुत निकट आ गई है। एकटक ताकते–ताकते मेरी आँखें थक गईं थीं। मैं जैसे अपनी दृष्टि पर भी ठीक विश्वास नहीं कर पा रहा था। मैंने देखा, उस नाव में दो आदमी नीचे झुके हुए बैठे हैं। एक आदमी नाव के सिरे पर और दूसरा बीच में। लेकिन नाव की चाल अद्भुत थी! उसका मुँह हवा के रुख़ की ओर घूमा हुआ था, और वह करवटिया होकर धीरे-धीरे आगे बढ़ती आ रही थी।

दिन का प्रकाश अच्छी तरह फैल जाने पर मैंने अपने सैकड़ों छेदवाले चिरकुट हो रहे कोट का बचा हुआ हिस्सा एक लकड़ी में बाँधकर ऊँचा करके उन दोनों की दृष्टि अपनी ओर आकृष्ट करने की चेष्टा की। परन्तु उनमें से किसी ने भी आँख उठाकर इधर नहीं देखा। एक दूसरे की ओर देखते हुए दोनों चुपचाप जहाँ के तहाँ बैठे रहे। जल के किनारे तक आगे जाकर ज़ोर ज़ोर मैं उन्हें पुकारने लगा। लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। पहले ही की तरह उद्देश्यहीन भाव से वह नाव बहती आ रही थी—धीरे, बहुत धीरे, कोण बनाती हुई उपसागर की ओर—गहराई से उथले पानी की ओर अग्रसर हो रही थी। एकाएक एक सफ़ेद चिड़िया उस नाव से उड़कर चली गई; लेकिन उन दोनो आदमियों में से किसी ने उधर ध्यान नहीं दिया—नज़र नहीं उठाई! घूमते-घूमते वह चिड़िया

ऊपर उठने लगी, इसके बाद अपने दोनों बड़े-बड़े पंख फैलाकर सन्-से कहीं गायब हो गई।

तब मैंने चिल्लाना बन्द कर दिया। बालू के ऊपर बैठ गया और गाल के ऊपर हाथ रखकर एकटक उस नाव को देखने लगा कि कहाँ जाती है। बहुत ही धीमी गति से वह नाव पश्चिम ओर जा रही थी। एक बार जी चाहा कि तैर कर नाव के ऊपर चढ़ जाऊँ; लेकिन वैसे ही एक अज्ञात भय से मेरी सारी देह काँप उठी। मैं साहस न कर सका। तीसरे पहर के लगभग लहरों के धक्के खाती हुई वह नाव प्रायः सौ गज़ के फ़ासले पर चबूतरे के पश्चिम ओर आ लगी।

मैंने जाकर देखा, नाव में जीवित प्राणी एक भी नहीं था। सब मुर्दे थे। कौन जाने, उनको मरे कितने दिन हुए। नाव को उलटते ही उनके मृत शरीर गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो गये। एक आदमी के सिर के ऊपर कुछ बाल थे, जो लाल रंग के थे। ठीक वैसे ही, जैसे 'इपीकाकुआना' जहाज के कप्तान के सिर पर थे। नाव के भीतर एक सफ़ेद गंदी हैट पड़ी थी। मैं जैसे नाव के पास जाकर खड़ा हुआ, तीन पशु-मानव, जो अब पूर्णरूप से पशु हो गये थे, एक झाड़ी की आड़ से निकल आये और 'फोंस-फोंस' करने लगे। घृणा से मेरा सारा शरीर काँप उठा। साथ ही साथ मैं नाव को पानी में ठेल कर उस पर चढ़ गया। उन तीनों पशुओं में दो भेड़िये थे। वे अंगारे-सी चमकती नज़र से मेरी ओर ताकने लगे। बाकी तीसरे प्राणी का कोई ठीक विवरण मैं दे न सकूँगा—बहुत कुछ भालू और साँड़ का मेल था।

चमकते हुए दाँत निकालकर तीनों पशु मेरी ओर आक्रमण करने के इरादे से बढ़ने लगे। उन को देखकर अब तक जो घृणा का भाव मेरे मन में जगा था, उसकी जगह आतंक छा गया, और मेरे शरीर के सब रोएँ खड़े हो गये। उनकी ओर पीठ करके नाव को चलाता हुआ

मैं उनसे दूर जाने लगा--उनकी ओर एक बार घूम कर देखने की भी हिम्मत नहीं हुई।

समुद्र में झुकी हुई पर्वतमाला और टापू के बीच में एक सुरक्षित जगह देखकर वहीं नाव रोककर वह रात बिताई। दूसरे दिन सवेरे नाव से जल का पात्र लेकर उसे नदी के पानी से भर लिया। यथासंभव धैर्य धारण करके जंगल से कुछ फल तोड़े। फिर बची हुई तीन गोलियों से दो खरगोश भी मारकर रख लिये। पशु-मानवों के भय से नाव को मैंने उसी पर्वतश्रेणी की आड़ में बाँध रक्खा था।

२२

बिल्कुल अकेला

उसी दिन शाम को मैं चल दिया। पश्चिम कोण से हवा आकर नाव के पाल में लगने लगी। टापू देखते-देखते धीरे-धीरे छोटा होने लगा। टापू में जो आग मैंने जला रक्खी थी, उसका धुआँ भी सूर्यास्त की लालिमा में थोड़ा-थोड़ा करके हल्का होने लगा। चारो ओर हज़ारों लहरें उठाता हुआ समुद्र मुझे घेरे हुए था। पानी के सिवा और कुछ नहीं नज़र आता था। धीरे-धीरे पृथ्वी पर सन्ध्या का अन्धकार उतर आया। सूर्यास्त की अन्तिम लाली किसी नाटक के रंगीन पर्दे की तरह मेरी आँखों के आगे से अदृश्य हो गई। सूर्य के अस्त होते ही अनन्त आकाश की गहरी नीलिमा मेरी आँखों के आगे छा गई। एक एक करके तारागण चमक उठे। समुद्र में सन्नाटा था, आकाश सुनसान था। रात्रि के साथ, सन्नाटे के साथ, मित्रता करके मैं भी बिल्कुल अकेला रह गया।

पूरे तीन दिन इसी तरह नाव पर बहता रहा; विशेष कुछ खाया-पिया भी नहीं। आदि से अन्त तक सारी घटना को सोचते-सोचते ही ये दिन कट गये। लेकिन अब सभ्यता के देश में लौटने का, फिर मनुष्य

को देखने का तनिक भी उत्साह मेरे मन में न था। सैकड़ों जगह से फटे, गंदे चीकट कपड़े मेरे शरीर पर थे। सिर के बाल बढ़कर जटा बन गये थे। इसी अवस्था में एक जहाज ने—जो सैन्फ्रांसिस्को जा रहा था—मेरा उद्धार किया। जहाज के कप्तान और यात्रियों ने अवश्य ही मुझे पागल समझा था। सुनकर शायद आपको आश्चर्य मालूम होगा, लेकिन मैं सच कहता हूँ, मनुष्यों के बीच लौटकर जाने का मेरे मन में तनिक भी आग्रह नहीं था। मैं इसी में सन्तुष्ट था कि उन वीभत्स, घृणित, दैत्य-सरीखे पशु-मानवों का साथ मैं छोड़ आया हूँ। जहाज के कप्तान या मेट, किसी ने मेरी कहानी पर विश्वास नहीं किया। बोले—सुनसान और विपत्तियों से परिपूर्ण देश में बहुत दिनों तक रहने के कारण मेरा दिमाग़ ख़राब हो गया है। कहीं और सब लोग भी यही न समझ लें, इस आशङ्का से मैंने फिर और किसी को अपनी यह अद्‌भुत कहानी नहीं सुनाई। लोगों से मैंने यही कहा कि 'लेडी वेइन' जहाज के डूबने से लेकर अबतक—लगभग एक साल का हाल मुझे बिल्कुल याद नहीं है। लोग मुझे पागल न समझ बैठें, इस डर से बहुत सावधानी के साथ मैं चलता-फिरता और उठता-बैठता था। पशु-मानवों का आईन, दो मृत नाविक, अँधेरी रात को यात्रा, झाड़ियों के बीच के प्राणी, इन सब की याद मुझे बहुत बेचैन करती थी। मैंने आशा की थी कि मैं शांति के साथ चैन से अपने जीवन के शेष दिन बिता सकूँगा। किन्तु आश्चर्य की बात है कि उस टापू में रहने के समय जिस अनिश्चयता, संशय और भय में मेरे दिन बीते थे, वह अनिश्चयता, संशय और भय इस सभ्य जगत् में आकर जैसे और भी बढ़ गया। मेरी कहानी पर कोई विश्वास नहीं करता। पशु-मनुष्य जैसे मुझे एक अद्‌भुत प्राणी समझते थे, वैसे ही स्वाभाविक अर्थात् असली मनुष्य भी मुझे एक अद्‌भुत जीव समझते हैं। क्या जानें, पशु-मानवों के देश में इतने दिन बिताने के

फलस्वरूप उनकी प्रकृति का जंगलीपन भी शायद मुझ में आ गया हो !

लोगों के मुँह से सुनता हूँ, भय भी एक रोग है। एक बात पर मैंने ध्यान दिया है, इधर कई वर्ष तक एक भय के भाव में ही मेरे दिन बीते हैं। आधा पलाऊ सिंह-शावक जैसे डरता है, मेरा यह भय भी कुछ कुछ उसी तरह का रहा है। स्वाभाविक मनुष्यों के बीच में रहकर भी बार-बार मेरे मन में आया है कि ये सभी पशु-मनुष्य हैं; अन्तर केवल इतना है कि टापू के प्राणियों की अपेक्षा ये सभ्यजगत् के सभ्य मनुष्य देखने में और भी अधिक मनुष्य की तरह हैं—सिर्फ शक्ल-सूरत में। साथ ही साथ यह भी आशंका हुई है कि शीघ्र ही इनकी यह मनुष्य की आकृति मिट जायगी और ये भी धीरे-धीरे पशु बन जायँगे।

सिर्फ एक आदमी ने मेरी कहानी पर कुछ विश्वास किया है। वह मनोविकार के विशेषज्ञ हैं। डॉ० मोरो के साथ उनकी मित्रता थी। उन्होंने मेरी बड़ी सहायता की है।

यह आशा अवश्य ही मैं नहीं करता कि उस टापू की भयानक स्मृति मेरे मन से एकदम मिट जायगी। अधिकांश समय में उस टापू की बात मेरे मन के सुदूर गहन स्थान में, आकाश में छोटे-से बादल के टुकड़े की तरह, छिपी हुई रहती है—थोड़ी-सी याद, या थोड़ा-सा अविश्वास। लेकिन बीच-बीच में वह क्षुद्र मेघखण्ड बड़ा होते-होते आकाश में फैल जाता है, अनन्त आकाश में छा जाता है। तब मैं अपने चारो ओर के मनुष्यों की ओर ताकता हूँ। भय से काँप उठता हूँ। किसी मनुष्य में पैनी छुरी की धार के समान बुद्धि देखता हूँ; कोई देखने में बुद्धू या भयंकर जान पड़ता है और कोई धीर अथवा विश्वासघातक प्रतीत होता है। किन्तु स्वाभाविक सुस्थिर मनुष्य कोई नहीं जान पड़ता ! मालूम पड़ता है, जैसे अभी-अभी उनके भीतर

पशु-वृत्तियाँ सिर उठानेवाली हैं, अभी-अभी सब पशु बन जायँगे। मैं जानता हूँ कि मेरी यह धारणा भ्रान्त है। यह समझ सकता हूँ कि जिन्हें अपने चारो ओर देख रहा हूँ, वे सभी स्वाभाविक मनुष्य हैं। मनुष्य का सुख-दुःख, मनुष्य की बुद्धि-वृत्ति, आशा-आकांक्षा, सभी कुछ पूरी मात्रा में उनमें मौजूद है। ये लोग किसी अद्‌भुत आईन के वशवर्ती भी नहीं हैं। ये उन पशु-मानवों से बिलकुल अलग हैं। सब जानता हूँ, तो भी इनको देखकर मैं दूर हट जाता हूँ। इनकी कौतूहलपूर्ण दृष्टि, इनकी खोज करने की प्रवृत्ति, यहाँ तक कि इनकी सहायता तक मुझे अच्छी नहीं लगती।

केवल इसी कारण, मैं बस्ती से, लोगों के पास से, दूर रहता हूँ। यह स्थान, जहाँ मैं अब रहता हूँ, मेरे मन की इस अवस्था के बहुत ही अनुकूल है। हवा से काँपते हुए आकाश के नीचे, यहाँ के निर्जन लंबे-चौड़े, दूर तक फैले हुए हरे-भरे खेत मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। और लंदन में! वहाँ जब मैं जाता हूँ तो मनुष्यों के सम्पर्क से किसी तरह नहीं बच पाता। खिड़की की राह उन की आवाज़ आकर कानों से टकराती है। घर में किवाड़े बन्द करके भी, भीतर से सिटकिनी लगाकर भी, मैं अपने को सम्पूर्ण निरापद नहीं समझ पाता। मन के इस भ्रम या भूल को दूर करने के लिए कहीं बाहर खुले में निकलूँ, इसका भी तो उपाय नहीं है। चारों ओर से लोग आकर ईर्ष्या की दृष्टि से मुझे ताकेंगे—शायद मुझे घेर लेंगे। काम से थका हुआ मज़दूर खाँसता-खाँसता मेरे पास से निकल जायगा, जाते-जाते थकी हुई एक नज़र मेरे ऊपर डालता जायगा। बूढ़ों की टुकड़ियाँ संदिग्ध दृष्टि से मेरी ओर दृष्टिपात करेंगी, जिनका शरीर शिथिल है, अंग-प्रत्यंग किसी तरह अपना बोझ ढो रहे हैं, जिनकी आँखों में जीवन की चमक नहीं है। बच्चों के झुंड मुझे देखकर बकबक करेंगे—मुझे एक विचित्र

मनुष्य समझ कर। इन सब बातों से बचने के लिए अगर मैं गिर्जे में जाऊँ तो पादरी साहब की वक्तृता सुनकर मुझे टापू के उस वानर-मनुष्य की अर्थहीन किचिर-मिचिर याद आ जायगी। लाइब्रेरी में जाऊँगा तो वहाँ अध्ययन में लगे हुए मनुष्यों को देखकर जान पड़ेगा कि वे जैसे शिकार की अपेक्षा में घात लगाये बैठे हैं। सबसे अधिक मुझे ट्रेन या बस के साथ चलनेवाले यात्री बुरे लगते हैं। उनकी अभिव्यक्तिहीन आकृति देखकर जान पड़ता है, जैसे ये सभी मुर्दा लाशें हैं। अक्सर जान पड़ता है कि मैं खुद भी एक अद्भुत प्राणी हूँ—दिमाग में खराबी होने के कारण अकेला-ही-अकेला घूमता फिरता हूँ।

लेकिन ईश्वर को धन्यवाद है। मेरे मन की यह दशा आजकल बहुत कम ही होती है। शहर के कोलाहल और जनता की भीड़ से दूर रहता हूँ। मेरे चारो ओर ढेर की ढेर किताबें हैं—मनीषी पण्डितों के हृदय की ज्ञानरूप ज्योति इन्हीं खिड़कियों से प्रवेश करके मेरे जीवन पर असाधारण अद्भुत प्रकाश डालती है। मेरे इस छोटे-से संसार में किसी अपरिचित के लिए स्थान नहीं है। पुस्तकों के अध्ययन और रसायन शास्त्र की गवेषणा में दिन कट जाता है और रात को मैं नक्षत्र-तारागण की चर्चा में बिता देता हूँ। नक्षत्र-तारागण से भरे अनन्त आकाश की ओर ताकते रहने में, मालूम नहीं, क्यों मेरा हृदय असीम शान्ति से परिपूर्ण हो उठता है। हम मनुष्यों के देह से परे जो अभाव-अभियोग हैं, वे नित्य की लाभ-हानि में परम निवृत्ति को खोजकर नहीं पाते—उदार प्रकृति की चिरन्तन गोद में ही आत्मा के लिए असीम शान्ति छिपी हुई है। मेरे मन में आशा है—उसी आशा के सहारे आज भी मैं जीवित हूँ। अतएव आशा की वाणी, सन्नाटे की वाणी को वहन करके ही मेरी यह कहानी समाप्त होती है।

—एडवर्ड प्रेन्डिक

इति

साहित्य रत्नाकर

सत्साहित्य प्रकाशक